₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

नवम्बर 2023

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

RNI NO.-BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PT.-35

नीतीश के मन की बात

कब किसके साथ !

GSTIN : 10KEPD0123PIZP

उत्तर भारत का COOKIE MAKER, सीवान में पहली बार
आपके लिए लेकर आया है

Cookie का बेहतर श्रृंखला

PRATIK ENTERPRISES

राजपुर (रघुनाथपुर) में अत्याधुनिक मशीनों द्वारा रस्क, बिस्कुट, बर्गर, मीठा ब्रेड, वंद, क्रीम रोल, पेटीज और बर्ड डे केक, पार्टी केक ग्राहकों के मनपसंद तैयार किया जाता है।

शुद्धता एवं स्वाद की 100% गारंटी

किसी भी अवसर पर
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रतीक फुड कंपनी

प्रतीक इंटरप्राइजेज, प्रतीक पतंजलि
राजपुर, रघुनाथपुर, सीवान (बिहार)

-: सौजन्य से :-

ब्रजेश कुमार दुबे

Mob.-9065583882, 9801380138

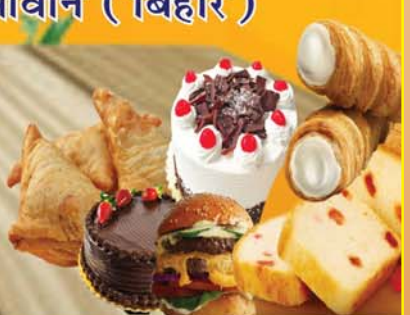

जन-जन की आवाज है केवल सच

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

Kewalachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ

Kewalsach news
www.kewalsach.com
Kewalsach news
Mob.: 9431073769, 9308815605
खबर वहीं, जो केवल सच हो

केवल सच TIMES
21 तक आने की संभावना नहीं: विज्ञान मंत्रालय

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM UPI
G Pay · Paytm

www.kewalsach.com   www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

निर्भीकता हमारी पहचान

www.kewalsach.com

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave, Second Floor, Flat No. 2B, Near-firing range, Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha, A-68, 1st Floor, Nageshwar Talla Shastri Nagar, New Delhi - 110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
E-mail:- kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube, 131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880 09339740757

Advertisement Rates Per Issue

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE	Qr. PAGE
COLOUR	Cover Page	5,00,000/-	N/A	N/A
	Back Page	1,60,000/-	N/A	N/A
	Back Inside	1, 00000/-	60,000/-	35000
	Back Inner	90,000/-	50,000/-	30000
	Middle	1,50,000/-	N/A	N/A
	Front Inside	1, 00000/-	60,000/-	40000
	Front Inner	90,000/-	50,000/-	30000

	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
B & W	Inner Page	60,000/-	35,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsach.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

नीतीश

की सियासी प्लान या फिसली ज़ुबान

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

पलटू चाचा की उपाधी रखने वाले नीतीश कुमार को अब बिहार की महिलाएं भद्दी-भद्दी उपाधियों ने नवाज रही हैं। 2005 से लगातार मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज रहने वाले नीतीश कुमार की जुबान अब लड़खड़ाने लगी है या फिर यह भी नीतीश कुमार की राजनीति का एक हिस्सा है। शीतकालिन सत्र में सदन में पति - पत्नी ''**अंदर - बाहर**'' करने के बयान ने उनको न सिर्फ सदन में माफी मांगने पर मजबूर कर दिया, यह दूसरी बार है जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सदन में माफी। पहली बार आईपीएस किम की दादागिरी पर माफी मांगी थी लेकिन इस बार तो महिलाओं के शिक्षित होने की वजह से प्रजनन दर में कमी आई है कि बात को इस प्रकार हांथ का ईशारा करते हुए जिस प्रकार अपनी बात रख रहे थे उससे यही लगा कि नीतीश कुमार की जुबान फंसती दिख रही है और साफ - साफ पता चल रहा है किस प्रकार सत्ता का पलटी मारने से असर पड़ा है। विपक्ष के साथ - साथ महिलाओं ने नीतीश कुमार की इस अंदर - बाहर की बात करनी की जुबानी को कटघरे में खड़ा कर दिया और उनके इस बयान ने सोसल मीडिया पर इतना वायरल हुआ कि नीतीश कुमार अपना आपा खो बैठे और महिलाओं को आहत करने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री महादलित जीतन राम माँझी पर ऐसा जुबान चलाया कि एनडीए चुनावी रैलियों में लोगों को बता रहे हैं कि सुशासन बाबू का जुबान कितना गंध फैला रहा है जिससे महिलाएं एवं महादलित अपमानित हो रहे हैं। कहीं यह जुबान 2024 एवं 2025 के चुनाव में....

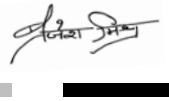

ऐसी वाणी बोलिए, मन का आपा खोय। औरन को शीतल करे, आपहु शीतल होय।। कबीर की यह वाणी को शायद नीतीश कुमार राजनीतिक दवाब के कारण भूल गये इस वजह से शीतकालीन सत्र के दरम्यान प्रजनन दर पर नियंत्रण पर अपना बयान दे रहे थे लेकिन उनकी जुबान और उनकी हरकतें ऐसा ''**अंदर - बाहर**'' की बात कह गयी की उनको सदन में माफी मांगनी पड़ी और ऐसी हरकतों की वजह से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इंडिया गठबंधन को घमंडिया गठबंधन की उपाधि से नवाजने के साथ-साथ बहुत कुछ बोल रहे हैं कि सुशासन बाबू महिलाओं एवं महादलित का अपमान कर रहे हैं। ऐसे भी संगत से गुण आत है, संगत से गुण जात। मुख्यमंत्री की कुर्सी के लिए बार-बार पलटी मारने में कामयाब रहने वाले नीतीश कुमार को ऐसा लगा कि जिस प्रकार पलटी मार-मार कर वह सत्ता के सिंहासन पर काबिज हो जाते हैं वैसे ही ''**अंदर - बाहर**'' की बात कहकर भी वह कामयाब हो जायेंगे कि वह किसी भी विषय को समझाने में सबसे अधिक होशियार हैं लेकिन इसबार फंस गये और जिस महिलाओं के सुशासन बाबू थे वह नीतीश कुमार अब अपमानित बाबू बन गये। महिलाओं के आग्रह पर बिहार में पूर्ण शराबबंदी करने वाले नीतीश कुमार सत्ता के अहंकार में इतना मदमस्त हो जायेंगे कि वह क्या कुछ बोल जायेंगे और ईशारे में ऐसा कुछ कर जायेंगे जिसकी वजह से माफी मांगना पड़ेगा सोचा भी नहीं होगा लेकिन राजनीतिक दवाब के कारण या फिर भाजपा पर राजनीतिक दवाब बनाने के लिए क्या बोल जायेंगे जिसकी भारपायी मुश्किल भरा होगा। महिलाओं को लेकर ''**अंदर - बाहर**'' की बात अभी शांत भी नहीं हुई थी कि पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी के प्रति ऐसी वाणी बोल गये जिससे नीतीश कुमार को राजनीतिक कद गिरता है। वह स्वयं स्वीकार कर रहे हैं कि माँझी को मुख्यमंत्री बनाना उनकी मूर्खता थी। इन्हीं हरकतों की वजह से पूर्व मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने नीतीश कुमार को **पलटू चाचा** के साथ-साथ **बेशर्म मुख्यमंत्री** की उपाधि से नवाजा था तथा नैतिकता बेच दिया है का आरोप लगाया था लेकिन अब उसी बेशर्म मुख्यमंत्री के साथ उप मुख्यमंत्री के रूप में सरकार में शामिल हैं। यह अलग बात है कि राजनीति में सत्ता के लिए स्वाभिमान का गला घोटना कोई नई बात नहीं है। 17 साल पुरानी राजनीतिक दोस्ती तोड़ने वाले नीतीश कुमार ने सदन में कहा था कि ''**मिट्टी में मिल जाउंगा, लेकिन भाजपा के साथ नहीं जाउंगा**'' लेकिन 5 साल बाद 2017 में हीं भाजपा गठबंधन में शामिल हो गये थे लेकिन 2020 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने पर्दे के पीछे से ऐसा पछाड़ा की 44सीट पर सिमट गये और पुन: 5 साल बाद 2022 में पलटी मारकर (जंगलराज) महागठबंधन में शामिल हो गये। एक तरफ महादलित बिहार सरकार के भवन निर्माण मंत्री अशोक चौधरी पर फूल की वर्षा कर रहे हैं तो दूसरी तरफ महादलित जीतन राम माँझी को घोर अपमानित। अब इन हरकतों का सियासी प्लान है फिर फिसलती जुबान इसका जवाब जनता चुनाव में अवश्य देगी। **पेंट में दांत** रखने वाले नीतीश कुमार जुबान से लोगों को काटेंगे किसी ने सोंचा भी नहीं होगा क्योंकि भाजपा से दोस्ती रखने की बात भी करते हैं और अटल बिहारी बाजपेयी के नाम पर पार्क बदल जाने पर चुप भी रहते हैं। 18 साल से नियमित सत्ता में रहने का अहंकार की बात हो या फिर उम्र की ढ़लान नीतीश कुमार का व्यक्तित्व पर ग्रहण लग चुका है। संगत बदलते ही नीतीश कुमार रामचरित्र मानस पर गलत बयानबाजी करने वाले शिक्षामंत्री प्रोफेसर चन्द्रशेखर पर मौन रहने वाले सुशासन पर खुद ही कालिख पोत लेंगे यह तो राजद ने भी नहीं सोचा होगा। राहुल गाँधी और अरबिन्द केजरीवाल के बाद नीतीश कुमार भी बार-बार माफी मांगने वाले नेता में शामिल हो चुके हैं। राबड़ी देवी को गंवार कहने वाले नीतीश कुमार खुद ही गंवार वाली हरकत करके फंस चुके हैं और उन्हें इस बात का ज्ञान हो चुका है कि अब बिहार की राजनीति में उनका कद 2005 वाला नहीं बनने वाला है और तेजस्वी की बढ़ती साख और भाजपा से बढ़ती दूरी सहित ललन सिंह का जदयू का राजद में विलय करने का सियासी प्लान से चिंतित दिख रहे हैं। इंडिया गठबंधन भी नीतीश कुमार को 2024 में मोदी का सामना बतौर प्रधानमंत्री उम्मीवार के रूप में प्रस्तुत नहीं कर रही है वैसे में सत्ता से भी **अंदर - बाहर** की बात 2024 में प्रारंभ हो जायेगा। यह तो साफ हो गया है कि 2024 के लोकसभा चुनाव में जहां एनडीए नीतीश के ''**अंदर - बाहर**'' वाले बयान को अपने रैलियों में महिलाओं के भावना को अपने पक्ष में करेगी तो हमने माफी मांग लिया है की सफाई देते-देते सुशासन बाबू खुद ही अपमानित महसूस करेंगे वैसे में उनका सियासी प्लान को फिसलती जुबान ने बेड़ा गर्क कर दिया। 2024 का चुनाव नीतीश कुमार की राजनीति का अंतिम वर्ष साबित होगा इससे इंकार नहीं किया जा सकता है और इसका अंत स्वयं श्री कुमार की जुबान ने सदन में कर दिया है।

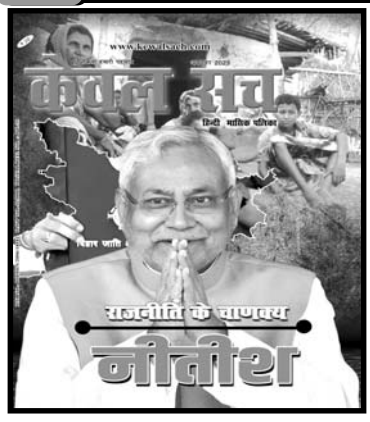

अक्टूबर 2023

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

हमारा पता है :-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
द्वारा:- ब्रजेश मिश्र
पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल
kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

आतंकियों के हमदर्द

संपादक जी,

अक्टूबर 2023 अंक में अमित कुमार की खबर ''खालिस्तानी आतंकियों के हमदर्द पीएम ट्रूडो'' में आतंक और राजनीति से हो रही देश की असुरक्षा का माहौल पर सटीक खबर पाठकों के समक्ष रखा है और केन्द्र सरकार की नीति को भी इस खबर में स्पष्ट तौर पर रखा है। साथ ही झारखंड की अपराध की कई खबरों को पढ़कर ऐसा लगा कि झारखंड पुलिस अपराध पर नियंत्रण में काफी सक्रिय है। झारखंड की राजनीतिक खबरों का आभाव केवल सच पत्रिका के सभी अंकों में रहता है, इसपर फोकस करें।

✦ **ओमप्रकाश खत्री, करमटोली चौक, झारखंड**

कांग्रेस

ब्रजेश जी,

केवल सच पत्रिका का संपादकीय बहुत ही सरल भाषा में आम से खास के लिए लिखा जाता है जो मुझे बेहद पसंद है। अक्टूबर 2023 अंक का संपादकीय ''**अपने पैर पर कुल्हाड़ी मार रही है कांग्रेस**'' में कांग्रेस पार्टी के आजादी के पूर्व से लेकर अब तक की राजनीतिक वजूद को बहुत ही बारीकी से लिखा है कि किस प्रकार और किस कारण से कांग्रेस अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रही है। 2024 के लिए इंडिया गठबंधन पर कटाक्षपूर्ण बातों को पूरी गंभीरता से रखा है। आपका संपादकीय बहुत सटीक है।

✦ **पंकल लाल, शीतलपुर बाजार, छपरा**

उद्योग विभाग

मिश्रा जी,

शशि रंजन सिंह एवं राजीव शुक्ला सरकार में फैले भ्रष्टाचार को उजागर करते हैं। अक्टूबर 2023 में उद्योग विभाग में मुख्यमंत्री उद्यमी योजना में भ्रष्टाचार चरम पर है का विषय पर सोचनीय खबर को लिखा है। बिहार में बेरोजगारी दूर करने में यह योजना काफी सहायक सिद्ध होती लेकिन विभाग में फैले भ्रष्टाचार की वजह से उद्योग विभाग की साख भी गिरी है क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों के उद्यमी को इस योजना का लाभ देकर सरकार ने आवाम का ध्यान अपनी सरकार की ओर आकृष्ट किया था परन्तु विभागीय लापरवाही की घटना को लिखा गया है, जो बिल्कुल सही है।

✦ **मनोज गुप्ता, लहेरियासराय, दरभंगा**

राजनीति के चाणक्य

मिश्रा जी,

बिहार की राजनीति में नीतीश कुमार के वजूद पर बहुत ही कारगर खबर अक्टूबर 2023 अंक में अमित कुमार ने पाठकों के बीच रखा है। ''राजनीति के चाणक्य नीतीश'' आलेख में जातिगत जनगणना को अंदरूनी सच को लिखने का साहस किया है कि किस प्रकार नीतीश कुमार पहले ही अतिपिछड़ों की आंकड़ों को भांप लिया था और 2024 के लोकसभा चुनाव में अपनी उपयोगिता को इंडिया गठबंधन को दिखा दिया है। नीतीश कुमार और लालू गठजोड़ बिहार में भाजपा के लिए मुश्किल खड़ा कर दिया है। खबर में जातिगत गणना पर सटीक एव कारगर समीक्षा किया गया है।

✦ **गणेश पाठक, अशोक नगर, नई दिल्ली**

एक मुहिम

संपादक जी,

बिहार के आईपीएस विकास वैभव के द्वारा चलायी जा रही मुहिम ''**लेट्स इंस्पायर बिहार**'' वास्तव में युवाओं को प्रेरित कर रही है। सूबे के सभी जिलों में इस मुहिम का असर दिखने लगा है। अक्टूबर 2023 अंक में राकेश रौशन की खबर काफी सुकून प्रदान करती है। सरकार के दायित्व के साथ-साथ प्रदेश के युवाओं के भीतर सकरात्मक ऊर्जा का संचार वास्तव में बिहार को नई दिशा देने लायक बनती जा रही है। इस मुहिम को राजनीति से भी जोड़कर देखा जा रहा है लेकिन विकास वैभव सर का यह प्रयास प्रदेश के बाहर भी सराहा जा रहा है। सही खबर लगा।

✦ **कौशल वर्मा, घंटा घर, भागलपुर**

केजरीवाल

संपादक जी,

मैं केवल सच पत्रिका का नियमित पाठक हूं और वेबसाइट पर इसकी सभी खबरों को पढ़ता हूं। अक्टूबर 2023 अंक में संजय सिंह की खबर ''राजनीति का काजल केजरीवाल'' में भ्रष्टाचार की खबर को बिहार से जोड़कर लेकिन केजरीवाल पर लिखा है जो वर्त्तमान समय में सुर्खियों में हैं। भ्रष्टाचार के खिलाफ मुहिम चलाकर सत्ता पर काबिज हुए केजरीवाल खुद भ्रष्टाचार की राजनीति में सक्रिय दिख रहे हैं और उनके दल के मंत्री, सांसद जेल पहुंच चुके हैं। केजरीवाल की कहानी को बहुत सजाकर लिखा है जो पढ़ने में काफी रोचक लगा।

✦ **सोहन यादव, लेखा नगर, खगौल, पटना**

अन्दर के पन्नों में

11

29

जनजातीय आदिवासी न्याय रहेगा.....87

92

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:- 18, | अंक:- 210, | माह:- नवम्बर 2023, | मूल्य:- 20/- रू

फाउंडर

स्व० गोपाल मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका 7782053204

सुरजीत तिवारी 9431222619

निलेन्दु कुमार झा 9431810505/8210878854

सच्चिदानन्द मिश्र 9934899917

रामानंद राय 9905250798

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र 9430888060, 8873004350

अमोद कुमार 9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 9308815605, 9122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल 9430000482, 9798874154

मनीष कुमार कमलिया 9934964551, 8809888819

उप-संपादक

अरबिन्द मिश्रा 9934227532, 8603069137

प्रसुन्न पुष्कर 9430826922, 7004808186

ब्रजेश सहाय 7488696914

ललन कुमार 7979909054, 9334813587

आलोक कुमार सिंह 8409746883

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू' 9905244479, 7979075212

राजीव कुमार शुक्ला 9430049782, 7488290565

कृष्ण कुमार सिंह 6209194719, 7909077239

काशीनाथ गिरी 9905048751, 9431644829

बिरेन्द्र सिंह 7050383816

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह 8210772610, 9431253179

मिथिलेश कुमार 9934021022, 9431410833

नवेन्दु कुमार मिश्र 9570029800, 9199732994

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र 9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा 9386901616, 7762089203

बिनय भूषण झा 9473035808, 8229070426.

.

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि 9308454485

रवि कुमार पाण्डेय 9507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

आनन्द प्रकाश 9508451204, 8409462970

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार 9905244479

amit.kewalsach@gmail.com

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव 8002647553, 9060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार 9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०):- श्रीधर पाण्डेय 9470709185

(म०):- गौरव कुमार 9472400626

(ग्रा०) :-

बाढ़ :-

भोजपुर :- गुड्डू कुमार सिंह 8789291547

बक्सर :- बिन्ध्याचल सिंह 8935909034

कैमूर :-

रोहतास :- अशोक कुमार सिंह 7739706506

:-

गया (श०) :- सुमित कुमार मिश्र 7667482916

(ग्रा०) :-

औरंगाबाद :-

जहानाबाद :- नवीन कुमार रौशन 9934039939

अरवल :- संतोष कुमार मिश्रा 9934248543

नालन्दा :-

:-

नवादा :- अमित कुमार 9934706928

:-

मुंगेर :-

लखीसराय :-

शेखपुरा :-

बेगूसराय :- निलेश कुमार 9113384406

:-

खगड़िया :-

समस्तीपुर :-

जमुई :- अजय कुमार 09430030594

वैशाली :-

:-

छपरा :-

सिवान :-

:-

गोपालगंज :-

:-

मुजफ्फरपुर :- .

:-

सीतामढ़ी :-

शिवहर :-

बेतिया :- रवि रंजन मिश्रा 9801447649

बगहा :-

मोतिहारी :- संजीव रंजन तिवारी 9430915909

दरभंगा :-

:-

मधुबनी :- सुरेश प्रसाद गुप्ता 9939817141

:- प्रशांत कुमार गुप्ता 6299028442

सहरसा :-

मधेपुरा :-

सुपौल :-

किशनगंज :-

:-

अररिया :- अब्दुल कय्यूम 9934276870

पूर्णिया :-

कटिहार :-

भागलपुर, :-

(ग्रा०):- रवि पाण्डेय 7033040570

नवगछिया :-

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें
9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव,
द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,

....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें
8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्याः- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ e-mail:- kewalsach@gmail.com, e ditor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☞ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☞ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☞ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☞ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ सभी पद अवैतनिक हैं।

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

प्रधान संपादक

.....
.....

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

.....
.....

झारखण्ड सहायक संपादक

ब्रजेश कुमार मिश्र 9431950636, 9631490205
ब्रजेश मिश्र 7654122344-7979769647
अभिजीत दीप 7004274675-9430192929

उप संपादक

.....
.....

संयुक्त संपादक

.....
.....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343-8863893672
.....
.....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची :- अभिषेक मिश्र 7903856569
:- ओम प्रकाश 9708005900
साहेबगंज :- अनंत मोहन यादव 9546624444
खूँटी :-
जमशेदपुर :- तारकेश्वर प्रसाद गुप्ता 9304824724
हजारीबाग :-
जामताड़ा :-
दुमका :-
देवघर :-
धनबाद :-
बोकारो :-
रामगढ़ :-
चाईबासा :-
कोडरमा :-
गिरीडीह :-
चतरा :- धीरज कुमार 9939149331
लातेहार :-
गोड्डा :-
गुमला :-
पलामू :-
गढ़वा :-
पाकुड़ :-
सरायकेला :-
सिमडेगा :-
लोहरदगा :-

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)

पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स

09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका

एवं 'केवल सच टाइम्स'

एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,

लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020

फोन- 0612/3504251

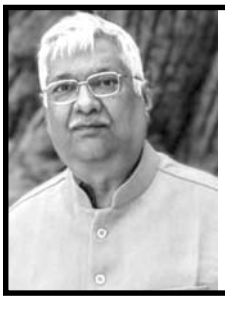

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क

भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी

'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''

9060148110

sudhir4s14@gmail.com

श्री आर के झा

मुख्य संरक्षक

'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**

EX. CGM, (Engg.) N.B.C.C

08877663300

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि

आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
सुमित राज यादव	9472110940, 8987123161
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
राजीव नयन	9973120511, 9430255401
मणिभूषण तिवारी	9693498852
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
विनित कुमार	8210591866, 8969722700
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	9386899670,
कृष्णा प्रसाद	9608084774, 9835829947

● संजय सिन्हा

'शर्मसार सुशासन के बेशर्म मुख्यमंत्री' नीतीश कुमार को लेकर केवल सच ने अक्टूबर 2012 में ही अपने मुख्य पृष्ठ का आवरण बनाया था, इसकी हकीकत या कहे बेशर्मी के बखान भरे मुख्यमंत्री के मुख से विधानसभा सत्र के दौरान देखने और सुनने को मिल गया। इसलिए हम केवल सच लिखते हैं। 22 मार्च 1912 यानि बिहार के गठन से लेकर और 7 नवम्बर 2023 से पहले कभी भी किसी माननीय या मुख्यमंत्री ने महिलाओं को लेकर अश्लील टिप्पणियां नहीं की थी किंतु 7 नवम्बर का वह दिन इतिहास में बेशर्म मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लिए काले अक्षरों में अंकित हो गया। बता दें कि सीएम नीतीश कुमार ने विधानसभा में प्रजनन दर के मुद्दे पर बोलते हुए टिप्पणी करते हुए कहा की, ''लड़कवा तो रोज लड़किया के साथ रतवा में रोज सुतबे न करता है। और सुतता है तो उसी में जाता ना है पनिया जी और उसी समय लड़किया कहती है कि ठीक है, रात में करो। लेकिन अपना जो तुम्हारा निकलने लगे तो बहरवा निकाल के फेक दो।'' ऐसे नीच सोच वाले मुख्यमंत्री जो राजनीति के मंदिर कहे जाने वाले विधान मंडल में जहां पुरूषों के साथ ही महिला सदस्य भी मौजूद थी, यह गंदी बात कहने से परहेज नहीं किया। अब इसे मुख्यमंत्री की मानसिक संतुलन बिगड़ने का हवाला दे या कुछ और। सबसे शर्मींदगी की बात तो यह है कि इस टिप्पणी के बाद पक्ष और विपक्ष के कई लोगों ने निंदनीय बताया लेकिन मुख्यमंत्री के करीबी मुख्यमंत्री के बयान के पक्ष में बयान देते आ रहे हैं। हालांकि अगले दिन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने सार्वजनिक माफी जरूर मांग ली किन्तु अपनी दलीलों के साथ।

बहरहाल, इतना सुन्दर मुख्यमंत्री ने सेक्स के बारे में बताया कि आप के काम भी हो जायेगे और बच्चा पैदा होने का डर भी नहीं रहेगा? जैसा कि एक कहावत है-'सांप भी मर गया और लाठी भी नहीं टुटी'। बिहार के लोग मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को सिर्फ अभी तक इन्जीनियर ही मानते थे परंतु मुख्यमंत्री जी अपना इंजीनियरिंग खासतौर पर मैकानिकल इंजीनियरिंग सेक्स पर भी दिखा दिया है। नये जनरेशन को इससे फायदा होगें, जिसे बच्चे नहीं चाहिए? पहले तो लोग सिर्फ कन्डोम निरोध का ही नाम जानते थे, लेकिन मुख्यमंत्री जी ने तो कमाल कर दिया? क्या इसे जाती पाति के श्रेणी में नहीं माना जाना चाहिये? सिर्फ 2.87 प्रतिशत जनसंख्या वाले मुख्यमंत्री ने कितना अच्छा रिर्सच शोध निकाला है? क्या इस तरीके वाले सेक्स को क्यों न नीतीश बाबू द्वारा बताया गया। इस तरीके वाली सेक्स स्टाईल पर इसका नाम क्यों न देदें? जिससे नीतीश तरीके सेक्स को पेटेंट भी मिल जाये? बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव भी इस सेक्स तरीके का सर्मथन किया है। उपमुख्यमंत्री भला करेगें भी क्यों नहीं? मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जो नये शादीशुदा के लिए ही तो ये उपाय बताया है? जब मिडिया से सेक्स तरीके पर उपमुख्यमंत्री बातें कर रहे थे तो उनके चेहरे पर खुशी के साथ लालीमा भी थी और मुस्कुराहट भी, लेकिन उनको नहीं मालूम कि यही नीतीश का सेक्स तरीका तीस-पैतीस साल पहले बताते तो आज उपमुख्यमंत्री कोई दूसरा होता, वे तो बिल्कुल नहीं होतें?

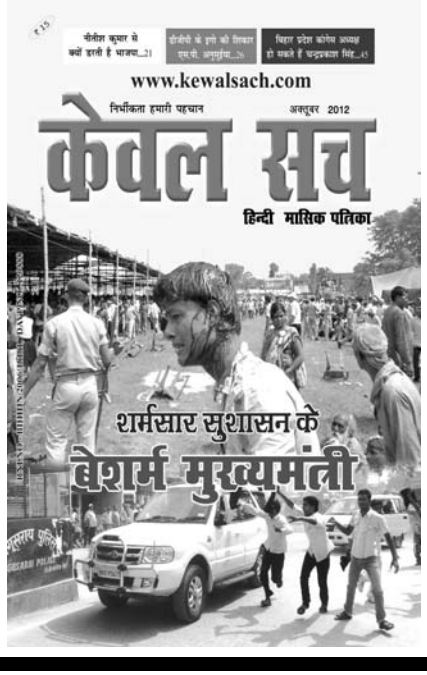

दूसरी तरफ दिल्ली के नकारा चेहरा पूर्व भाजपा सांसद वर्तमान में कांग्रेस नेता उदितराज ने भी इस सेक्स तरीके को सर्मथन किया है, वो भी पुरे आत्मविश्वास से। जो भी हो, इस नीतीश सेक्स तरीके से फायदे तो हैं, लेकिन ये भी पता करना बहुत जरूरी है कि पिछले पचास वर्षों में सबसे ज्यादा किसकी जनसंख्या बढें हैं? जिसके भी बढ़े क्या वह वर्ग इस नीतीश सेक्स तरीके से सहमत हो सकता है क्या? इस नीतीश सेक्स तरीके में फायदा भले जिसकी हो? परंतु घाटे सिर्फ दो को होगी पहला प्रभाव से तो कन्डोम निरोध बनाने वाली कंपनियों की और दूसरा जो नेता चाहते हैं कि मेरे जाती की जनसंख्या तेजी से बढ़े? साथ ही वैसे नेताओं की और उनकी राजनीति दल की। आप कहेगें कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने सेक्स तरीके पर दिये गये बयान पर पिछे हो गये हैं तो फिर इस टिप्पणी या समीक्षा की क्या जरूरत है? हो सकता है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को अपने सेक्स तरीके वाले बयान को विरोधी दलों के वजह से वापीस लिया हो? परंतु याद करना पड़ेगा कि, उन्होंने विशेष कर पत्रकारों को इसके लिये नसीहत दिया है, अब देखना होगा कि और कौन मुख्यमंत्री अपने प्रदेश की जनता को इस नीतीश सेक्स तरीके को प्रमोशन करती हैं।●

इंडिया गठबंधन में दरार

● **अमित कुमार**

इंडिया क्या मजबूत हो रहा है या दरअसल इंडिया बिखरता दिखाई दे रहा और यह सवाल किस लिए? क्योंकि इस महागठबंधन की रूपरेखा तैयार करने वाले इसके रचयिता हम कह सकते हैं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने एक बड़ा ही अहम बयान दिया है। बता दें कि सीपीआई के मंच से नीतीश ने कहा कि, 'कांग्रेस विधानसभा चुनाव में मस्त है और 'इंडिया' पर ध्यान ही नहीं दे रही'। यह बयान बहुत ही अहम हो जाता है। हमें यहां पर अब सवा साल पहले जाने की जरूरत है।

बता दें कि पिछले साल सितंबर माह में विपक्ष को साथ लेकर आने की यह मुहिम नीतीश कुमार ने शुरू की थी। वह सोनिया गांधी से मिले, राहुल गांधी से मिले, अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी, अखिलेश यादव, सीताराम येचुरी, शरद पवार सहित कई नेताओं से उनकी मुलाकात हुई, इस बात को लेकर की साथ आ जाओगे तो भाजपा अपने दम पर बहुमत नहीं ले पाएगी। बाद में जब और जोर पकड़ा तो नीतीश बोले 200 से नीचे ला देंगे, इसके

बाद फिर से कहा कि 100 से नीचे, ढाई का आंकड़ा भी नहीं पार करने देंगे। इस मुहिम को आगे बढ़ाने और विपक्षी गठबंधन को एक शक्ल अख्तियार करने में नीतीश कुमार को एक लंबा इंतजार करना पड़ा था। क्योंकि सितंबर के बाद राहुल गांधी 'भारत जोड़ो अभियान' पर निकल पड़े, जो इस साल 30 जनवरी को श्रीनगर में मुकम्मल हुई थी। उसके बाद भी 23 जून तक इसके लिए इंतजार करना पड़ा। ज्ञात हो कि जब पटना में पहली बैठक विपक्षी नेताओं की हुई, तब इसकी मेजबानी नीतीश कुमार ने ही की थी, फिर उसके अगले महीने 17-18 जुलाई को बेंगलुरु में नामकरण भी हो गया कि यह 'इंडिया' (इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इन्क्लूसीव अलायंस) गठबंधन कहलाया जाएगा। यह बात और है कि नीतीश कुमार इंडिया नाम से खुश नहीं थे और चार्टर्ड प्लेन होने का टाइमिंग का बहाना बनाकर वह प्रेस कॉन्फ्रेंस में भी नहीं दिखे थे।

सनद् रहे कि बेंगलुरु में जब इंडिया नाम सार्वजनिक किया गया तब कहा गया था कि सीटों के बंटवारे पर जल्द से जल्द काम शुरू होगा। कैंपेन कोऑर्डिनेशन कमिटी तो बनी

लेकिन मुंबई के बाद अभी तक चौथी बैठक नहीं हुई। जिस साझा रैलियों की शुरुआत होने वाली थी और बताया जाना था कि इंडिया लामबंद है, एकजुट होकर लड़ रहा है बीजेपी के खिलाफ, वह भी देखने को नहीं मिला। हांलाकि साझा रैली की शुरुआत भोपाल से ही होने वाली थी, लेकिन सनातन धर्म को लेकर विवाद इतना बढ़ा की कमलनाथ को लगा कि उसकी आंच या कहे उसका खामियाजा कांग्रेस को ना उठाना पड़ जाए। दूसरी तरफ संयोजक का अभी तक चुनाव नहीं किया गया किन्तु इसके लिए खड़गे का नाम जरूर चर्चा में आया था। बता दें कि नीतीश कुमार यह सपना संजोए बैठे थे कि संयोजक वह बनेंगे किन्तु अभी तक इस पर निर्णय नहीं लिया जा सका। इंडिया एलायंस का अभी तक लोगों नहीं बना, सचिवालय नहीं बना और चुनावी राज्यों में तो गठबंधन हुआ ही नहीं।

दिगर बात है कि यह बात नीतीश तक ही सीमित नहीं है बल्कि अखिलेश यादव ने जिस तरह से मध्य प्रदेश में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष अजय राय को चिरकुट भी बोला और कमलनाथ ने अखिलेश के बारे में कहा कि कौन अखिलेश वखिलेश। तो भलां इस जुबानी जंग से अलायंस का मतलब ही नहीं निकाला जा सकता और इस वक्त के हो रहे विधानसभा चुनाव में सपा, आप और जेडीयू जैसी पार्टियां कांग्रेस विरोध में चुनाव लड़ रही हो तो इंडिया अलायंस बिखरता हुआ देखा जा सकता है। बता दें कि कांग्रेस से अखिलेश ने चार सीटों की बात की थी वह अभी तक सुलझ नहीं पाई है। बाद में शीर्ष नेतृत्व ने अखिलेश को फोन तो किया पर क्या बात बन पायी है? सुलझ गई है? दरअसल अब तो समाजवादी पार्टी कह रही है कि उत्तर प्रदेश के 80 लोकसभा सीटों में हम तो 65 सीटों पर चुनाव लड़ेंगे बाकी गठबंधन के लिए छोड़ेंगे और वह भी मंजूर नहीं है तो हम तो 80 की 80 सीट लड़ने को तैयार हैं। दूसरी तरफ नीतीश का यह कहना कि कांग्रेस चुनावों में मस्त दिख रही है। दरअसल विपक्षी खेमे में थोड़ी आशंका यह भी है कि 3 दिसंबर के नतीजे का क्या कांग्रेस इंतजार कर रही है? उसे लगता है कि इन पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में वह अच्छा करेगी। उसके बारगेनिंग पावर बढ़ जायेंगे और विपक्षी खेमे के बाकी जो नेता हैं वह इस बात से अनजान नहीं है। उनका कहना हैं कि अभी करो वरना जहां पर जितनी आपकी ताकत है उसी हिसाब से लड़ेंगे, यह संदेश भी दिया जा रहा है। एक बात और यह भी है कि क्या नीतीश कुमार का फूलपुर से चुनाव लड़ने के जो कयास हैं, जो चर्चाएं चल रही है वह अभी उन पर विराम लगाने को तैयार नहीं है। हालांकि इसे लेकर नीतीश कुमार ने हां नहीं की, लेकिन ना भी नहीं की है। अब सवाल है कि क्या नीतीश और अखिलेश साथ आते दिख रहे हैं। दिगर बात है कि बेंगलुरु बैठक में राहुल गांधी ने अखिलेश यादव को बोला था 'यू आर द बॉस आफ यूपी'। इंडिया महागठबंधन आपके कहे अनुसार चलेगा तो इस बात से अखिलेश यादव बड़े कंफर्टेबल हो गए थे, लेकिन बाद में खबर यह आई की कांग्रेस ने अपना एक आंकलन किया है कि अल्पसंख्यक यानी कि मुसलमान उसके साथ जा

अखिलेश यादव

कमलनाथ

रहे हैं और समाजवादी को छोड़ रहे हैं। अगर दलित वोट बैंक जोड़ ले यानी कि बीएसपी को साथ ले लें और आरएलडी को पश्चिमी उत्तर प्रदेश दे दिया जाये तो दबाव बना सकते हैं। इसी बात को लेकर अखिलेश यादव नाराज भी चल रहे हैं।

अब सवाल है कि नीतीश और अखिलेश क्या कदमताल कर रहे हैं और इसमें ममता बनर्जी भी क्या आयेंगी? यानी कि वह चर्चा, जिस पर पुर्नविराम लग गया था। अर्थात् तीसरे मोर्चे की, वह आने वाले दिनों में फिर हुंकार भड़ता दिखाई देगा। क्या राजनीति का ऊंट एक और करवट लेगा? वहीं कांग्रेस का संकेत इस तरह देना कि 'आप लड़ लो जहां-जहां बीजेपी से सीधी लड़ाई है। 190 के करीब सीटे हैं और बाकी जगह समझौता करना है तो हमारी शर्तों पर समझौता कीजिएगा। क्या यह खेल उस तरफ भी जाता दिख रहा है। हालांकि उसकी एक और बानगी दिखाई दे रही है उमर अब्दुल्ला के बयानों से। अभी अखिलेश खामोश हैं। सीधा कुछ नहीं बोल रहे पर उमर अब्दुल्ला क्या बोल रहे हैं, इसे जानते हैं। उनका कहना है कि इंडिया अलायंस की हालत अभी पतली है। दूसरी तरफ सीताराम येचुरी ने भी एक अहम बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि केन्द्र के साथ राज्यों में भी गठबंधन होना चाहिए था, जिससे 2024 के चुनाव में फायदा होता। तो क्या यह छोटी-मोटी सलवटे बड़ी दरार में भी तरसीफ होती दिख रही हैं और इसमें कांग्रेस का रुख और रवैया क्या पूरी तरह से साफ नहीं हो पा रहा है? उसकी एक और बानगी भी देखने को मिली जब अरविंद केजरीवाल को ईडी का सम्मन आया। आम आदमी पार्टी में भी इस बात को लेकर नाराजगी है कि तमाम विपक्ष साथ खड़ा है पर कांग्रेस केजरीवाल के साथ खड़ी होती नहीं दिखी, जबकि केजरीवाल जब राहुल गांधी की सांसदी गई, घर से बेदखल कर दिया गया, तब आम आदमी पार्टी और अरविंद केजरीवाल उनके साथ खड़े दिखाई दे रहे थे। अगर दिल्ली और पंजाब में जहां आम आदमी पार्टी की सरकार है, जिसमें दिल्ली के 62 सीटों पर और पंजाब के 92 सीटों के साथ सरकार चल रही है और 13 सीटें जो लोकसभा की है, अगर आम आदमी पार्टी ठेंगा दिखा दे तो इंडिया कहां खड़ा है। दूसरी तरफ एनडीए, जहां पर अपनी दिक्कते खुद ही बरकरार है और एनडीए में सिर्फ बीजेपी खुद में सिमट कर रह गया है यानि डीएमके छोड़ चुकी है, पवन कल्याण ने साथ छोड़ दिया, मिजो नेशनल फ्रंट कह रही है की नहीं भैया आपके साथ गठबंधन नहीं और वहां विधानसभा चुनाव भी है तो वहां अपनी दिक्कतें ही मौजूद है। किन्तु क्या इंडिया की दिक्कतें कम होने के बजाय और बढ़ती दिखाई दे रही है और अब यह जिम्मेदारी की इंडिया आगे बढ़ता है या नही, सीधे-सीधे क्या कांग्रेस के कंधों पर ही आन पड़ी है।

गौरतलब हो कि बिहार के मुख्यमंत्री ने जब बीजेपी से अलग राह अपनाई थी तो उन्होंने सोचा था कि 2024 को लेकर बड़ा गठबंधन तैयार करेंगे और बीजेपी को करारी

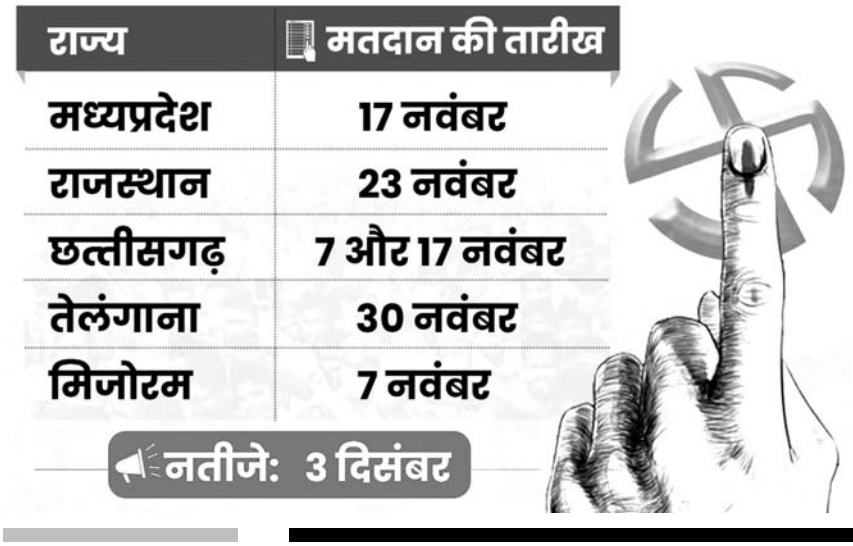

ममता बनर्जी

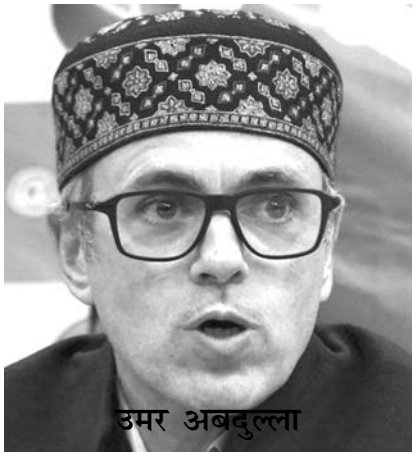
उमर अबदुल्ला

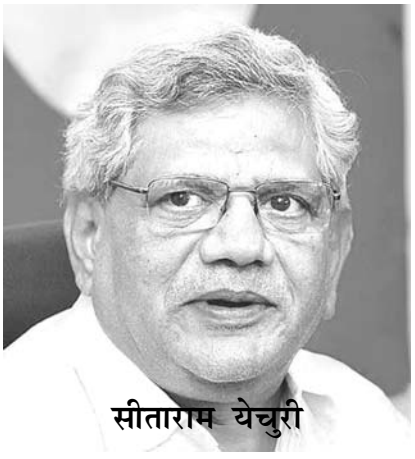
सीताराम येचुरी

शिकस्त देंगे लेकिन आज जो हालात हैं, वह एकदम जुदा है। नीतीश कुमार खुद ही कांग्रेस को कोसते नजर आ रहे हैं। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि इंडिया गठबंधन में काम नहीं हो रहा है। कांग्रेस पांच राज्यों के चुनाव में व्यस्त है और कांग्रेस को गठबंधन की चिंता नहीं है। दरअसल लोकसभा चुनाव 2024 के मद्देनजर इंडिया गठबंधन में सीट शेयरिंग से पहले बिहार में लेफ्ट पार्टियां दमखम दिखाने में जुटी हैं। चुनाव से पहले इनकी सक्रियता बढ़ गई है। जमीन पर अपनी ताकत दिखाने के लिए पंचायत, प्रखंड और जिला स्तर पर सम्मेलन कर वाम दल संगठन को मजबूत बना रहे हैं। सीपीआई, सीपीएम और माले, तीनों ही लेफ्ट पार्टियों के नेता स्थानीय मुद्दों पर जन आंदोलनों के जरिए वोटरों के बीच अपनी पैठ बढ़ा रहे हैं। तीनों वाम दलों ने मोदी विरोधियों में अपनी अलग पहचान के लिए आनुषांगिक संगठनों को भी सक्रिय कर दिया है। बिहार में वामपंथ के तीनों धड़े सीपीआई, सीपीएम और सीपीआईएमएल (भाकपा माले) अभी इंडिया गठबंधन के साथ है। इससे पहले 2020 विधानसभा चुनाव भी वामदलों ने महागठबंधन

न के बैनर तले चुनाव लड़ा था। अब 2024 चुनाव के सीट बंटवारे से पहले तीनों इंडिया गठबंधन के अंदर अपनी ताकत का प्रदर्शन कर रहे हैं। माना जा रहा है कि बिहार में इंडिया की सीटों का बंटवारा आरजेडी सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव एवं मुख्यमंत्री नीतीश कुमार करेंगे। ऐसे में लेफ्ट पार्टियों ने दोनों नेताओं पर दबाव बनाने के लिए माहौल बनाना शुरू कर दिया है और इसे लेकर 2 नवम्बर को पटना के मिलर हाई स्कूल परिसर में 'भाजपा हटाओ देश बचाओ रैली' का आयोजन किया गया था, जिसमें तेजस्वी यादव के साथ ही मुख्यमंत्री नीतीश कुमार भी मंच साझा कर रहे थे। मंच से सीएम नीतीश कुमार ने भाजपा पर निशाना साधा और सांप्रदायिक हिंसा को लेकर बीजेपी पर हमला किया। सीएम ने कहा कि ये लोग हिंदू-मुस्लिम करते हैं, जबकि हिंदू-मुस्लिम में कहीं कोई झंझट नहीं है। पर ये लोग कुछ न कुछ लगाए रखते हैं। उल्टा-पुल्टा करते हैं। पहले बहुत घटना होती थी, लेकिन 2007 से हमने इसे कंट्रोल किया। आज भी ये लोग प्रयास करते हैं। ये वही लोग कुछ ना कुछ करते हैं। नीतीश कुमार ने कहा कि सीपीआई के साथ मेरा पुराना रिश्ता है। आपकी पार्टी ने हमें सपोर्ट नहीं किया पर जब हम एमएलए का चुनाव 1987 में लड़े तो हमारे क्षेत्र में सीपीआई/सीपीएम के लोग मुझे मदद कर रहे थे। आपसे हमारा रिश्ता पुराना है। हम आपकी इज्जत करते रहेंगे। आप बुलंदी से काम किजिए। ये बहुत बढ़िया पार्टी है। हम आपके समर्थक हैं।

ज्ञात हो कि मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएम) ने सितंबर में राजगीर में पार्टी कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया था। समस्तीपुर, दरभंगा, खगड़िया, बेतिया में पार्टी की सभा हो चुकी है। मोतिहारी में सभा होनी है। पार्टी सभी जिलों में स्थानीय मुद्दों को उठाकर प्रदर्शन कर रही है। इस लिहाज से सीपीएम ने चार सीटों में से उजियारपुर, खगड़िया,

अरविंद केजरीवाल

समस्तीपुर और महाराजगंज पर दावेदारी की है। वही अपनी ताकत का प्रदर्शन करते हुए भाकपा माले ने उन लोकसभा क्षेत्रों में सम्मेलन आयोजित किए हैं, जहां उसकी दावेदारी है। इसमें बक्सर, आरा, सीवान, जहानाबाद, पाटलिपुत्र, काराकाट शामिल हैं। पटना के गांधी मैदान में माले की रैली हो चुकी है। आंगनबाड़ी स्वयंसेवकों, स्कीम वर्कर्रों, रसोइयों, नियोजित शिक्षकों का मुद्दा उठाकर पार्टी इनके बीच पैठ बढ़ा रही है। इन्हीं के जरिए हाल के सालों में माले ने बिहार में अपना वोट बैंक बढ़ाया है। 2020 विधानसभा चुनाव में पार्टी के 12 विधायक चुने गए। इसी आधार पर माले तीनों दलों में सबसे ज्यादा छह सीटों पर दावे कर रहा है। वर्ष 2019 लोकसभा चुनाव में पार्टी ने चार सीटों आरा, सीवान, काराकाट और जहानाबाद में उम्मीदवार उतारे थे।

2024 का चुनाव सर पर है और इंडिया गठबंधन के नेताओं के सुर कुछ और ही कहानी बयां कर रहे हैं। कई पार्टियां अपने बयानों से कांग्रेस पर निशाना साध रही है। अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव के लिए जहां भाजपा पूरे दमखम से तैयारी कर रही है, वहीं इंडिया गठबंधन में अभी से ही दरारे दिखने लगी है। पांच राज्यों में चुनाव होने वाले हैं और कुछ राज्यों में गठबंधन के नेताओं के बीच अलग-अलग सुर सुनाई दे रहे हैं। इन सब के बीच बिहार के सीएम नीतीश कुमार का दर्द झलक कर सामने आया है। जहां दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल को ईडी के सम्मन के बहाने नीतीश ने कांग्रेस पर निशाना साधा है। नीतीश का बयान ऐसे वक्त में सामने आया है जब देश में पांच विधानसभा चुनावों की हलचल तेज हो गई है। इसी महीने मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम में चुनाव होने हैं। 2024 में लोकसभा चुनाव से ठीक पहले हो रहे इन चुनाव से देश के मूल का अंदाजा भी लगाया जाएगा, लेकिन इंडिया गठबंधन के नेता आपस में ही सिरफुटौव्वल करने लगे हैं। इंडिया गठबंधन की हालत क्या है इस बात का अंदाजा इससे भी लगाया जा सकता है कि यूपी में समाजवादी पार्टी की जबरदस्त बयानबाजी हुई थी और दोनों ने एक दूसरे पर गंभीर आरोप लगाए थे। एमपी में टिकट बंटवारे को लेकर भी कमलनाथ और अखिलेश यादव आपस में भीड़ चुके हैं। वहीं यूपी में समाजवादी पार्टी अलग राह अपनाने की तैयारी कर रही है। सूत्रों के मुताबिक समाजवादी पार्टी 65 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ेगी। इन सीटों पर प्रत्याशियों के चयन की प्रक्रिया अंतिम दौर में है। कांग्रेस और गठबंधन के सहयोगियों के लिए पार्टी सिर्फ 15 सीटें छोड़ेगी यानी गठबंधन में दरारें साफ दिख रही है। मनमाने ढंग से सहयोगी फैसला कर रहे हैं और कांग्रेस चुपचाप देख रही है। मध्य प्रदेश चुनाव में टिकट बंटवारे के बाद से ही समाजवादी पार्टी और कांग्रेस के बीच सब कुछ ठीक-ठाक नहीं चल रहा है। कांग्रेस ने एमपी में समाजवादी पार्टी के लिए सीटें नहीं छोड़ी है, उसके बाद से दोनों दलों के बीच सियासी वार पलटवार काफी तेज हो गया है। ऐसे में बड़ा सवाल यह है कि गठबंधन का क्या होगा? विधानसभा चुनाव में उम्मीदवार उतारने को लेकर भी आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच जुबानी जंग देखी गई थी तो वही दिल्ली में केजरीवाल को ईडी के सम्मन को लेकर भी कांग्रेस का कोई बड़ा नेता सामने नहीं आया। इसे लेकर बीजेपी को भी हमला करने का मौका मिल गया है। इन सब के बीच बिहार के डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव पटना में नियुक्ति पत्र बांट रहे हैं। भले ही तेजस्वी लोगों को नौकरी दे रहे हैं लेकिन इसके आड़ में वह बीजेपी पर हमला करने से नहीं चुके। दरअसल नीतीश कुमार के बयान के कई सियासी मायने निकाले जा सकते हैं। इंडिया गठबंधन की आखिरी

तेजस्वी यादव

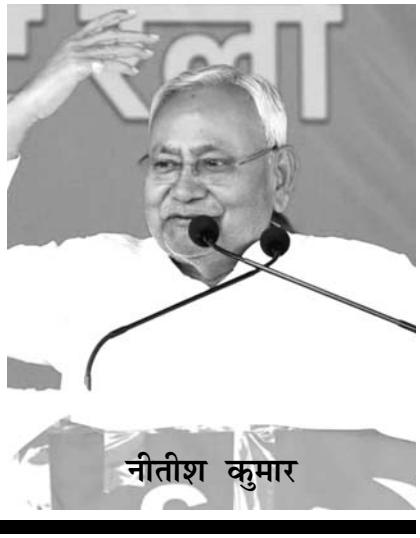
नीतीश कुमार

मीटिंग मुंबई में हुई थी। सीट बंटवारे को लेकर जारी खींचतान के बीच नीतीश कुमार के इस बयान से विपक्षी गठबंधन के बीच हलचल होना स्वाभाविक माना जा रहा है। नीतीश कुमार बीजेपी से नाता तोड़ने के बाद से विपक्ष को एकजुट करने की कोशिश में जुट गए थे लेकिन 2024 को लेकर अभी तक कोई साफ नीति नहीं बन पाई, ना सीटों का बंटवारा हुआ और ना ही संयोजक चुना जा सका। जाहिर है 2024 से पहले ही इंडिया गठबंधन बिखरता दिख रहा है। जिस तरह से बयानबाजी जारी है, उसे दिलों और दलों के बीच की दूरियां बढ़ती ही दिख रही है। बिहार से नीतीश कुमार ने सीधे कांग्रेस पर आरोप मढ दिया है की कांग्रेस पार्टी इंडिया गठबंधन पर ध्यान नहीं दे रही है। कांग्रेस पांच राज्यों के चुनाव में व्यस्त हो गई है।

बिहार के महागठबंधन में दूसरी पारी के 450 दिन गुजारने के बाद जेडीयू नेता और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का धैर्य जवाब दे गया। गौरतलब हो कि पटना में सीपीआई की रैली के बहाने उसी मंच से नीतीश कुमार ने कांग्रेस को आड़े हाथों लिया। ये नसीहत कांग्रेस पार्टी को या निशाना कांग्रेस पार्टी पर या फिर यह बताने की कोशिश की कि अभी जब तक विधानसभा चुनाव नहीं हो जाते इंडिया गठबंधन ठंडे बस्ते में है। हां यह कहना सही है कि नीतीश का कांग्रेस को नसीहत भी है और निशाना भी है। याद कीजिए ये वही नीतीश कुमार हैं, जिन्होंने विपक्षी एकताओं को एकजुट करने से पहले कहा था कि बिना कांग्रेस के विपक्षी एकता करना बेइमानी है और उन्होंने कांग्रेस पार्टी के साथ में बाकी विपक्षी दलों को जोड़ा भी और पटना में बड़ी बैठक भी की लेकिन इसके बाद धीरे-धीरे इंडिया गठबंधन में जितने भी नेता थे उनकी दिलचस्पी कम होती चली गई, चाहे वह पश्चिम बंगाल हो या फिर चाहे वह उत्तर प्रदेश हो। जैसे ही पांच राज्यों के चुनाव का एलान हुआ कांग्रेस पार्टी इसमें व्यस्त हो गई। जाहिर है की नीतीश कुमार चाहते थे की इंडिया गठबंधन के तौर पर इस चुनाव में भी कुछ ऐसे ही ऐसी बातें हो, जिससे कि मोदी को चुनौती दी जाए। सनद् रहे कि भाकपा की ओर से आयोजित 'भाजपा हटाओ देश बचाओ' में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने संबोधन में विपक्षी एकजुटता की बात करते हुए इसे आज की जरूरत बताया और भाजपा को हटाने की अपील की। उन्होंने आगे कहा कि हमलोग कांग्रेस को आगे बढ़ाने के लिए एकजुट होकर काम कर रहे थे, लेकिन उन्हें इसकी चिंता नहीं है। वो अभी पांच राज्यों के चुनाव में लगे हैं। जब ये चुनाव हो जाएगा तब वो सबको खुद बुलाएंगे। आजकल वो कुछ चर्चा नहीं करते हैं। विपक्षी गठबंधन के नेता कांग्रेस को बढ़ाना चाहते हैं। यानी कि कांग्रेस को गठबंधन में आगे करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि ग्रुप के सबसे बड़े सदस्य के रूप में कांग्रेस को अग्रणी भूमिका सौंपी गई है। आज जो सत्ता में हैं वो देश का इतिहास बदलना चाहते हैं। उसको ठीक करने के लिए और जो आज शासन में हैं, उनसे मुक्ति के लिए ही सबकुछ कर रहे हैं। सीएम ने कहा कि पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव के बाद हमलोग फिर बैठकर आगे की रणनीति तय करेंगे।

बहरहाल, नीतीश के बयान से ये साफ हो गया है कि भाजपा विरोधी गठबंधन के सूत्रधार नीतीश ने अब इंडिया अलायंस को कांग्रेस के भरोसे छोड़ दिया है, जो सीट शेयरिंग का ब्रेक दबाए बैठी है। मुंबई में इंडिया गठबंधन की तीसरी मीटिंग से पहले भी नीतीश ने कहा था कि चुनाव कभी भी हो सकता है इसलिए सीट बंटवारा जल्दी कर लिया जाए। मुंबई की मीटिंग में तीन प्रस्ताव पास हुए जिसमें पहला यही था कि लोकसभा चुनाव जहां तक संभव होगा मिलकर लड़ेंगे। इसी प्रस्ताव में कहा गया था कि सीट शेयरिंग की बात तुरंत शुरू हो जाएगी और आपसी लेन-देन से जितनी जल्दी हो सके पूरी कर ली जाएगी। दूसरा प्रस्ताव था संयुक्त रैलियों का। पहली रैली के भोपाल तय हुआ लेकिन कमलनाथ ने कैंसिल कर दिया। तीसरा प्रस्ताव था कि गठबंधन के दल अपने संदेश में ताल-मेल रखेंगे जिस पर कुछ टीवी एंकरों के कार्यक्रम का बहिष्कार करने के अलावा कोई काम नहीं हुआ। गठबंधन को कांग्रेस के रवैए से नीतीश शुरू से परेशान हैं। नीतीश 25 सितंबर 2022 को सोनिया से मिले थे लेकिन उसके बाद उन्हें 25 फरवरी 2023 को पूर्णिया की रैली में कहना पड़ा कि हम लोग कांग्रेस के जवाब का इंतजार कर रहे हैं। गठबंधन पर नीतीश की राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खरगे से पहली मुलाकात 12 अप्रैल को जाकर हुई। नीतीश इस गठबंधन को लेकर कितने शिद्दत से लगे थे कि एक ही दिन में 24 अप्रैल को कोलकाता में ममता बनर्जी और लखनऊ में अखिलेश यादव से मिल आए, मना

अखिलेश सिंह

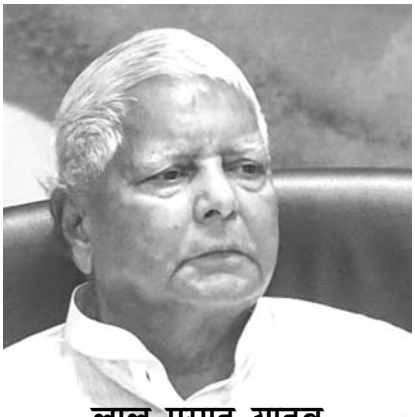

लालू प्रसाद यादव

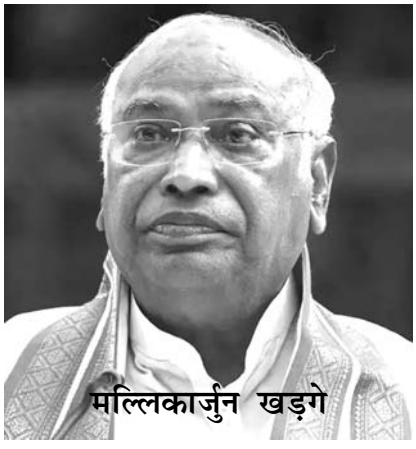

मल्लिकार्जुन खड़गे

आए। 23 जून को पटना में पहली मीटिंग के समय से ही नीतीश को संयोजक बनाने की चर्चा होती रही है लेकिन ये हो नहीं पाया। पटना में नहीं चुना गया तो लगा कि बेंगलुरु में होगा लेकिन वहां भी नहीं हुआ। फिर लगा मुंबई में होगा लेकिन वहां भी 14 नेताओं की कोर्डिनेशन कमिटी बन गई। नीतीश के लिए इतनी बड़ी राजनीतिक कवायद का कुछ फलाफल नहीं निकला। इंडिया गठबंधन बनने के बाद से ही यह अटकलें लग रही थीं कि नीतीश को इसका संयोजक बनाया जा सकता है। विशेष तौरपर मुंबई की बैठक से पहले तो ऐसी चर्चाएं जोरों पर थी लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ। जेडीयू सूत्रों ने दावा किया की नीतीश खुद ही संयोजक बनने को तैयार नहीं है। इस बीच खड़गे का नाम इंडिया गठबंधन के संयोजक के रूप में उभर कर आया। शायद यह बात नीतीश कुमार को जम नहीं रही। दूसरी तरफ कांग्रेस के मन में नीतीश को लेकर कोई गांठ है जिसकी वजह से जेडीयू नेता को गठबंधन में वो कद और पद अब तक नहीं मिला, जिसका हकदार कोई भी सूत्रधार होता। नीतीश भी समझते हैं इसलिए पटना में राहुल गांधी की पैरवी के बाद भी बिहार में कांग्रेस कोटे के मंत्री अब तक नहीं बढ़ाए गए हैं। ये नीतीश के राजनीतिक कौशल का नतीजा था कि कांग्रेस से सीधे मुंह बात नहीं करने वाले अखिलेश यादव, ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल भी 23 जून को पहली बैठक में पटना पहुंचे। लेकिन विपक्षी एकता की सफलता की सूरत में सबसे ज्यादा फायदे में रहने वाली कांग्रेस मुंबई की मीटिंग में तेजी से सीट बंटवारे पर हामी भरकर पीछे हट चुकी है। हैदराबाद में कांग्रेस वर्किंग कमिटी की 16 सितंबर की बैठक में पार्टी ने मन बना लिया कि अब सीट बंटवारा तभी होगा जब राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, तेलंगाना और मिजोरम के विधानसभा चुनावों के नतीजे आएंगे। अक्टूबर के आखिरी हफ्ते में कांग्रेस की तरफ से खुलकर और साफ शब्दों में पार्टी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कह दिया कि पांच राज्यों के चुनाव के बाद सीट की बात देखेंगे। कांग्रेस को लगता है कि वो पांच में तीन-चार राज्य जीत रही है। कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश के बाद कुछ और राज्य जीतने से सीट बंटवारे में उसे यूपी, बंगाल, दिल्ली, पंजाब, बिहार में सहयोगी दलों से ज्यादा सीट लेने में आसानी होगी। सीपीआई के एक नेता ने गठबंधन के हालात पर कहा कि जीतने पर कांग्रेस को सरकार और पीएम का पद मिल सकता है लेकिन इस गई-गुजरी हालत में भी उसकी अकड़ ऐसी है जिससे समझ आता है कि बीजेपी इतनी सफल क्यों है? सीपीआई नेता ने एनडीए की बैठक में बुलाई गई 38 पार्टियां का हवाला देते हुए कहा कि जिन पार्टियों को एक भी लोकसभा सीट नहीं लड़नी, उन्हें भी बीजेपी वाले सम्मान के साथ डील कर रहे है। उन्होंने कहा कि गठबंधन के दलों का वोट बैंक मिल पाए इसके लिए जमीन पर टाइम चाहिए जो कांग्रेस नहीं दे रही और इसका बड़ा नुकसान हो सकता है। 5 सितंबर 2022 को लालू यादव के साथ सोनिया गांधी से नीतीश कुमार की मुलाकात के 403 दिन, पटना में विपक्षी दलों की पहली मीटिंग के 132 दिन और मुंबई में इंडिया गठबंधन की तीसरी मीटिंग के 62 दिन बीत चुके हैं। बात साझी चुनावी लड़ाई के बयान से आगे नहीं बढ़ पाई है। इस बीच अखिलेश यादव की सपा से मध्य प्रदेश चुनाव को लेकर कांग्रेस का तीखा झगड़ा हो गया। एक दिन पहले अखिलेश ने साफ कह दिया कि यूपी की 80 में 65 सीट सपा लड़ेगी। बाकी 15 में कांग्रेस और जयंत चौधरी की आरएलडी। गौर करने वाली बात ये है कि नीतीश इस झगड़े में नहीं पड़े। शांत रहे। मौन धर लिया। मानो कांग्रेस से कह रहे हों कि सबको मनाकर-बुलाकर प्लेट में गठबंधन परोस ही दिया है, अब तुम जानो, तुम्हारा काम जाने।

बहरहाल, नाराज नीतीश कुमार को मनाने की कवायद शुरू हो गई है, तभी तो नीतीश कुमार के बयान के बाद राजद सुप्रिमो लालू प्रसाद यादव मुख्यमंत्री नीतीश कुमार से मिलने उनके आवास 1 अणे मार्ग पहुंच गये और करीब 40 मिनट के बातचीत में नीतीश के मानमनौव्वल के बाद सूत्रों के अनुसार कांग्रेस के राष्टीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने नीतीश कुमार से फोन पर बातें की। हालांकि क्या बाते हुई यह अभी सामने नहीं आये हैं किन्तु जिस तरह लेफ्ट पाटी की रैली में नीतीश कुमार ने कांग्रेस पर वार करते हुए जो बयान दिये उससे राजनीतिक गलियारों में सरगर्मियां तेज हो गई है और भाजपा जहां चुटकी ले रही है तो दूसरी तरफ बिहार कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश सिंह ने प्रेसवार्ता में नीतीश कुमार के बयान पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि अभी लोकसभा चुनाव में वक्त है जो अप्रैल में होगा और अभी पांच राज्यों में अहम विधानसभा चुनाव इसी महीने होने वाले हैं। राज्य-राज्य मिलकर ही देश बनता है और राज्य मजबूत होगा तो देश भी मजबूत होगा। नीतीश कुमार अगर ऐसा सोचते हैं की नरेन्द्र मोदी को कल-परसो कुर्सी से हटा देंगे तो यह इतना जल्दी संभव नहीं है, वक्त लगेगा और समय पर ही सबकुछ होगा। ऐसे में कांग्रेस का नीतीश कुमार की बातों पर गौर नहीं फरमाना और दूसरी तरफ अखिलेश यादव को मध्य प्रदेश चुनाव में सीट न देकर अपमानित करना तथा अरविंद केजरीवाल पर ईडी के सम्मन पर कांग्रेस का स्टैंड ना लेना इंडिया अलायंस के लिए खतरे की घंटी साबित हो सकती है। अब देखना ये है कि नीतीश कुमार अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले क्या अहम फैसले लेते हैं, इंतजार दिलचस्प होगा! ●

● **अमित कुमार**

नीतीश की क्या है मजबूरी? क्या नीतीश नया खेल रचेंगे? नीतीश कुमार के मन में क्या चल रहा है? क्या नीतीश कुमार फिर कोई नया समीकरण बनाने में जुटे हैं या इंडिया गठबंधन को कोई संदेश देने की कोशिश में जुटे हैं? यह सवाल बिहार में तेजी से उठने लगे हैं। बता दें कि 2 नवंबर को सीपीआई की रैली में कांग्रेस को आड़े हाथों नीतीश कुमार ने लिया और कहा कि 'कांग्रेस विधानसभा चुनाव में मस्त है और 'इंडिया' पर ध्यान ही नहीं दे रही'। हालांकि ये बातें नीतीश कुमार ने अभी कही है पर इससे पहले इशारो-इशारों में कांग्रेस को यह बताने की कोशिश की है कि मैं ही पीएम मैटेरियल हूं! हालांकि नीतीश कुमार को इस बात का भी दर्द है कि उन्हे इंडिया अलायंस का संयोजक नहीं बनाया गया और जिस केंद्र की राजनीति के लिए राजद से मिलकर भाजपा से दूरी बनायी उसका फल भी नहीं मिल पाया। नीतीश समय और मौके का इंतजार कर रहे हैं ताकि उन्हें आसानी से स्वीकार कर लिया जाए। हांलाकि कुछेक ऐसी घटनाएं जरूर घटी जो इंडिया अलायंस के साथ ही बीजेपी को भी सोचने पर मजबूर कर दिया

की नीतीश क्या कर रहे हैं? कुछ घटना पर गौर फरमाते हैं-एक घटना तब की है जब पंडित दीनदयाल उपाध्याय के जन्म शताब्दी मनाई जा रही थी। इसका निमंत्रण नीतीश कुमार को नहीं दी गई थी, लेकिन अचानक नीतीश कुमार इस कार्यक्रम में पहुंच जाते हैं, जबकि कैथल में देवीलाल के जयंती समारोह को वह इग्नोर करते हैं। इससे साफ जाहिर होता है कि नीतीश कुमार कहीं ना कहीं इंडिया गठबंधन को एक बड़ा मैसेज दे रहे हैं। वह इसलिए कि जिस तरह से इंडिया गठबंधन में उनको इग्नोर किया गया, जो कन्वीनर का पद उनको नहीं दिया गया और उनका जो कद रहा है, उनकी जो राजनीतिक पारी रही है, उसको ध्यान में नहीं रखा गया और कांग्रेस नीतीश कुमार के तैयार किए गए तमाम फील्ड के ड्राइविंग सीट पर बैठ गई है। इसे लेकर के कहीं ना कहीं नीतीश कुमार के मन में कचोट है और इसको लेकर के ही नीतीश कुमार नई रणनीति के तहत यह तमाम चीजे कर रहे हैं। वह कभी पंडित दीनदयाल उपाध्याय के कार्यक्रम में पहुंच जा रहे हैं तो कभी वह सिर्फ राष्ट्रपति के आमंत्रण पर शामिल हो जाते हैं और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ खड़े होकर के उन्होंने इंडिया गठबंधन को मैसेज दे दिया कि उनकी छवि और उनका कद प्रधानमंत्री नरेंद्र

मोदी के आसपास का है और जब वह चाहे तब वह पलट सकते हैं। दूसरी घटना जी-20 कार्यक्रम की है जहां राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू द्वारा आयोजित जी-20 के डिनर पार्टी में नीतीश शामिल हुए। इस दौरान कई नेताओं से उनकी मुलाकात हुई। इस पार्टी के दौरान पीएम मोदी से भी सीएम नीतीश कुमार की मुलाकात हुई। इस दौरान दोनों ने एक-दूसरे का हालचाल लिया। इस रात्रि भोज के लिए केंद्र सरकार के मंत्रियों और सभी राज्यों के मुख्यमंत्रियों को न्योता दिया गया था। भाजपा शासित प्रदेशों के मुख्यमंत्रियों से ज्यादा विपक्षी गठबंधन के घटक दलों के मुख्यमंत्रियों की मौजूदगी चर्चा का विषय रही। इन्हीं में एक बड़ा नाम था बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का। रात्रि भोज की दो नई तस्वीरें जो सामने आई उनमें पहली तस्वीर में चार और दूसरी तस्वीर में पांच लोग नजर आये। पहली तस्वीर बता रही है कि अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री मोदी भारत मंडपम के अंदर प्रवेश कर रहे हैं। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार उनकी ओर देख रहे हैं और हाथ जोड़कर अभिवादन कर रहे हैं। जवाब में प्रधानमंत्री मोदी भी नमस्ते कर रहे हैं। दूसरी तस्वीर में भी यही चार शख्सियतें नजर आ रही हैं, लेकिन इसमें प्रधानमंत्री मोदी और नीतीश कुमार का अंदाज अलग नजर आ रहा है। दोनों नेता एक दूसरे का गर्मजोशी से हाथ थामे हुए हैं और मुस्कुरा रहे हैं। इससे पहले मई 2022 में सीएम नीतीश और पीएम मोदी की मुलाकात बिहार विधानसभा के कार्यक्रम के दौरान हुई थी। बीजेपी से अलग होने के बाद ये पहला मौका था, जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात हुई थी। यह मौका तो जी-20 सम्मेलन के दौरान हुए रात्रि भोज का था, लेकिन इससे निकली तस्वीरें अब तक सुर्खियों में बनी हुई हैं। तीसरी घटना मोतिहारी में केंद्रीय विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह की है। दीक्षांत समारोह में शामिल होने पहुंचे नीतीश कुमार ने कहा कि उनकी और बीजेपी की दोस्ती कभी खत्म नहीं होगी। दरअसल, सीएम नीतीश जिस कार्यक्रम में शामिल होने पहुंचे थे, वहां राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और राज्यपाल राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर भी मौजूद थे। इसके अलावा कार्यक्रम में कई बीजेपी नेता भी शामिल थे। दीक्षांत समारोह के दौरान जब मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के भाषण देने की बारी आई तो उन्होंने कहा कि जितने लोग हमारे हैं, सब साथी हैं। छोड़िए ना भाई। हम अलग हैं, आप अलग हैं। हमारा दोस्ती कहियो खत्म होगा? चिंता मत कीजिए, जब तक जीवित रहेंगे, तब तक आप लोगों से संबंध बना रहेगा। हालांकि भाजपा के करीब होने के प्रयास में लगे नीतीश को भाजपा बार-बार पहले ही कह चुकी है कि नीतीश कुमार की एनडीए में अब कोई जगह नहीं है। भारतीय जनता पार्टी का हर कमरा, हर दरवाजा, हर खिड़की बंद है। हालांकि बीजेपी में आज कोई

सम्राट चौधरी

गिरीराज सिंह

विजय कुमार सिन्हा

सुशील कुमार मोदी

बड़ा चेहरा नहीं है जो अपने चेहरे के दम पर बिहार में कमाल दिखा सके और राजनीति में कुछ भी हो सकते हैं, इससे इंकार नहीं किया जा सकता। बिहार में कई बार नीतीश और बीजेपी दोस्ती बनी और बिगड़ी है। ऐसे में नीतीश का दांव क्या होगा, यह भी देखना दिलचस्प होगा। शायद इसी कारणवश नीतीश कुमार, लालू और तेजस्वी तथा राजद नेताओं पर अपने तीर चलाते दिख रहे हैं!

खैर! अभी चर्चा है शिक्षकों को नियुक्ति पत्र को लेकर और एक दिन में एक विभाग में नौकरी देने के मामले में बिहार में रिकॉर्ड बना डाला है और 2 नवंबर को 1 लाख 20 हजार 336 शिक्षकों को ज्वाइन कराया गया। वही इस आयोजन के एक दिन पहले मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी ही सरकार के मंत्री की क्लास लगा दी। इसके बाद दो वाकये ऐसे हुए, जो ये बताते हैं कि महागठबंधन सरकार में शामिल राष्ट्रीय जनता दल का प्लान फेल करने के लिए सीएम नीतीश खुद उतर आए हैं। दरअसल, बिहार में एक साथ हुई इतने शिक्षकों की भर्ती को लेकर पिछले कुछ दिनों से क्रेडिट वॉर छिड़ा हुआ है। शिक्षक भर्ती को आरजेडी विधानसभा चुनाव के समय किए रोजगार के वादे से

जोड़कर डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव की उपलब्धि के रूप में पेश कर रही है और यही बात 'बिहार में बहार है, नीतीशे कुमार है' नारा देने वाली जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) को नागवार गुजर रही है। ऊर्जा विभाग के एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपनी ही सरकार में आरजेडी कोटे के मंत्री आलोक मेहता को अपना और पार्टी का क्रेडिट लेने में नहीं लगे रहने की नसीहत दे डाली। बता दें कि बिहार सरकार ने हाल ही में 1.7 लाख शिक्षक पदों पर भर्ती निकाली थी। इस परीक्षा में 1.22 लाख अभ्यर्थी पास हुए हैं। इनकी भर्ती प्रक्रिया शुरू हो गई है। अब इस शिक्षक भर्ती का क्रेडिट लेने को लेकर होड़ मच गई है। आरजेडी इसे अपने घोषणा पत्र का वादा बताते हुए लगातार इस भर्ती प्रक्रिया को डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव की उपलब्धि के तौर पर पेश करने में जुटी है। यह बात बिहार के सीएम नीतीश कुमार को नागवार गुजरी और आरजेडी के मंत्री पर भड़क गए।

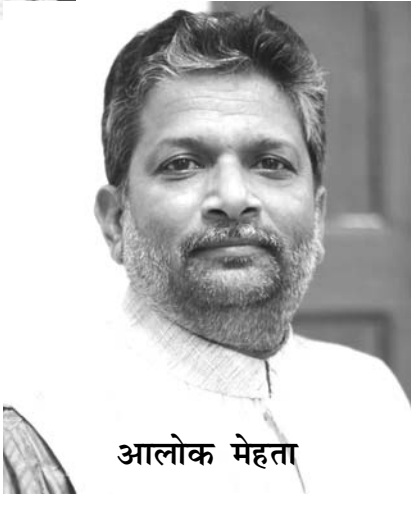
आलोक मेहता

नीतीश ने मंत्री को नसीहत दे डाली कि वे इस भर्ती के लिए सिर्फ अपनी पार्टी को क्रेडिट न दें। दरअसल, नीतीश कुमार ऊर्जा विभाग के कार्यक्रम में पहुंचे थे। यहां उन्होंने महागठबंधन सरकार में राजस्व मंत्री आलोक मेहता से कहा कि अपना और पार्टी का क्रेडिट लेने में मत लगे रहिए। ये कहिए कि ये राज्य सरकार ने नियुक्ति की है। नीतीश ने कहा कि हम किसी काम पर व्यक्तिगत क्रेडिट नहीं लेते हैं। उन्होंने कहा, मेरे काम की

चर्चा नहीं होती है। अगर केंद्र सरकार 50 हजार भी नौकरी देती है, तो उसकी खूब चर्चा होती है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार कभी-कभी इशारे में बहुत बड़ी बात भी कह जाते हैं। बड़े पैमाने पर शिक्षक भर्ती का क्रेडिट उनके साथ सत्तारूढ़ राष्ट्रीय जनता दल के नेता ले रहे हैं, शायद यह खबर सीएम तक पहुंच चुकी है। उन्होंने न शिक्षक नियुक्ति की बात की और न किसी नेता का नाम लिया, लेकिन राजद को कड़ा संदेश दे दिया। कैसे? मंच साझा कर रहे राजद कोटे के मंत्री आलोक मेहता की ओर इशारा करते हुए मंच से बोले-'जितनी पार्टी है, अपनी तरफ से यह छपवा दे रही है कि हम यह कर दिए। जो मंत्रीगण बैठे हुए हैं, वह कहेंगे। आप कहिए राज्य सरकार। यह सब मत कहिएगा कि हम ही कर दिए। यह सब काम नहीं करना चाहिए। राज्य सरकार कहिए'। हम क्रेडिट लेते हैं कि हम किए हैं? हम तो राज्य सरकार के लिए क्रेडिट लेते हैं। मीडिया में हमको छोड़कर बाकी सबको छापा जाता है। हमको नीचे कर दिया है।' वहीं राज्य के डिप्टी सीएम तेजस्वी प्रसाद यादव ने शिक्षक नियुक्त को लेकर क्रेडिट लिए जाने के सवाल पर कहा कि कौन सा क्रेडिट? कोई क्रेडिट का मतलब नहीं है। क्रेडिट लेकर क्या फायदा है। हम लोगों को देना था, हमारी सरकार दे रही है। सब लोग इस बात को देख रहे हैं कि महागठबंधन की यह सरकार है और मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में मिलकर काम कर रहे हैं। इसका फोटो नहीं है, उसका फोटो नहीं है। इन विवादों से कोई मतलब नहीं है। क्रेडिट लेकर क्या फायदा है? सब लोग इस बात को देख रहे हैं कि यह महागठबंधन

की सरकार है और सब लोग मिलकर नीतीश कुमार के नेतृत्व में काम कर रहे हैं। विवादों से मतलब नहीं है। कुछ न कुछ विवाद करते रहेंगे कि इसकी तस्वीर नहीं है उसकी तस्वीर नहीं है।

बहरहाल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने 2 नवंबर को पटना के गांधी मैदान में नवनियुक्त शिक्षकों के नियुक्ति पत्र वितरण समारोह का दीप प्रज्ज्वलित कर विधिवत शुभारंभ किया। इस दौरान नीतीश कुमार ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि एक दिन में आज जितनी बड़ी संख्या में शिक्षकों को नियुक्ति पत्र प्रदान किया जा रहा है, इतने बड़े पैमाने पर अब तक देश के किसी दूसरे राज्यों में नियुक्ति पत्र नहीं दी गई है। मीडिया के लोग भी इस बात को याद रखें। आप लोगों को भी इस कार्यक्रम से बड़ी खुशी हो रही है, लेकिन आप पर नियंत्रण है इसलिए चाहकर भी कुछ कर नही सकते। हमलोगों के अच्छे कामों को भी मीडिया में कम जगह मिल पाती है, जबकि पिछले दिनों केंद्र द्वारा 50 हजार नियुक्ति पत्र प्रदान किया गया तो दो दिनों तक बड़े-बड़े समाचार प्रकाशित किए गए। आपलोगों पर कब्जा कर लिया है और जब मुक्ति मिल जाएगी तो आप सच्ची और अच्छी बातें स्वतंत्र रूप से लोगों तक पहुंचाएंगे। हम आपके विरोधी नहीं बल्कि पक्षधर हैं। ध्यान रहे कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का 'मीडिया दर्द' इन दिनों लगातार छलक रहा है। वो लगभग हर मंच से ये बात करते नजर आ रहे हैं कि बिहार और देश की मीडिया उनकी बातों को नहीं दिखाता-छापता है। वो लगातार पत्रकारों से अपनी ये भावना व्यक्त कर रहे हैं। इस बात की चर्चा एक बार फिर भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी

तेजस्वी यादव

के 'भाजपा हटाओ देश बचाओ' रैली में उनका ये दर्द छलकता नजर आया। उन्होंने मंच से पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा की बिहार में उनके किए गए कामों को कोई मीडिया नहीं दिखाता है। जो वो बोलते हैं, उसे भी कोई अखबार और मीडिया नहीं दिखाएगा। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मंच से ही पत्रकारों को ये बताने की कोशिश की कि उन्होंने बिहार में पत्रकारों के लिए कितना काम किया है। हालांकि सामूहिक तौर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने पत्रकारों के लिए ऐसा कोई भी काम नहीं किया। जिसका वो किसी मंच पर जिक्र कर सकें। याद दिला दें कि पत्रकारों के लिए पेंशन स्कीम भी जीतन राम मांझी के 9 महीने के मुख्यमंत्री काल में शुरू की गई थी। इसलिए वो यहीं चुप हो गए। इसके बाद उन्होंने मंच से पत्रकारों की तरफ इशारा करते हुए कहा कि आप लोग बंधे हुए हैं, जिसकी वजह से उनकी बातें न छपती हैं और न दिखाई जाती हैं। उन्होंने इशारों-इशारों में ये बताने की कोशिश की कि बीजेपी और केंद्र सरकार ने तमाम मीडिया संस्थानों पर कब्जा कर लिया है। न सुविधा, न कवरेज की अनुमति मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की ओर से कोरोना काल में सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पहले जनता दरबार में चुनिंदा संस्थाओं को आने की अनुमति दी। बाद में जनता दरबार में केवल न्यूज एजेंसियों को ही आने की अनुमति दी गई। तीसरे चरण में उन्होंने जनता दरबार में सभी पत्रकारों के आने पर प्रतिबंध लगा दिया। अब वहां से केवल यूट्यूब लिंक कवरेज के लिए दिए जाते हैं। अंतिम चरण में उन्होंने पत्रकारों को भेजे जाने वाले वीडियो से ऑडियो गायब करवा दिया। इसके अलावा बिहार में ना तो मान्यता प्राप्त पत्रकारों को कोई सुविधा है और ना ही कोई रियायत। इसके अलावा मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के लगभग 18 साल के शासनकाल के दौरान पत्रकारों की स्थिति सुधारने के लिए कोई ऐसा काम नहीं किया। ऐसे में ये सवाल उठता है कि आखिर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पत्रकारों के साथ कैसे हैं? लेकिन इन दिनों वो लगातार मंच से यही दावा कर रहे हैं कि वो पत्रकारों के साथ हैं। वैसे, नीतीश कुमार पत्रकारों से फ्रेंडली रिलेशन का दावा अपने हर प्रेस कॉन्फ्रेंस और सभा में करते हैं। मीडिया वालों के सवालों का जवाब देने से भी नहीं हिचकते हैं। मगर, वो ये भी जता देते हैं कि मीडिया पर कब्जा कर लिया है। उनका इशारा वर्तमान केंद्र की बीजेपी सरकार की ओर होता है। उनकी शिकायत रहती है कि वो जो बोलते हैं उसे प्रमुखता से मीडिया संस्थानों की ओर से जगह नहीं दी जाती है। मगर, सवाल उठता है कि क्या नीतीश सरकार ने पत्रकारों/मीडिया के लिए अब तक कोई स्पेशल पॉलिसी बनाई है? ताकि उनकी सिक्योरिटी और आर्थिक हित को सुरक्षित किया जा सके। इस ओर उन्होंने कोई ध्यान नहीं दिया। फिर मीडिया पर इलजाम थोपना नीतीश कुमार के लिए कितना जायज है।

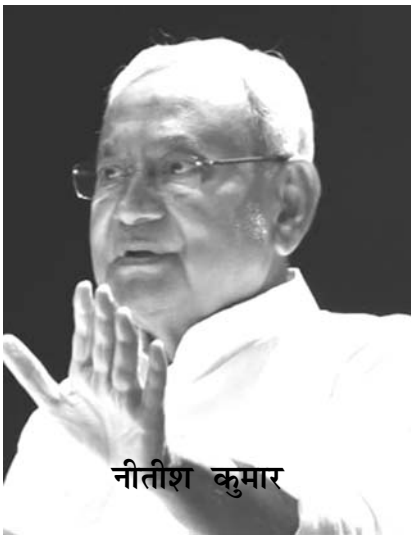
नीतीश कुमार

खैर! आगे नीतीश कुमार ने कहा कि इस बार 01 लाख 70 हजार शिक्षकों की नियुक्ति के लिए बीपीएससी के द्वारा परीक्षा आयोजित की गई थी, जिसमें 8 लाख युवाओं ने भाग लिया था। बीपीएससी के माध्यम से आयोजित होने वाली परीक्षाओं में पूरे देश के लोगों को शामिल होने का मौका मिलता है। पूरा देश एक है और बिहार इससे बाहर नहीं है। बिहार भी देश का एक अहम हिस्सा है। बिहार के बच्चों को भी दूसरे राज्यों की बहाली में शामिल होकर सेवा करने का मौका मिलता है। आज कल कुछ लोग कह रहे हैं कि बाहर के लोगों को क्यों मौका दिया गया, उन्हें सोचना चाहिए कि बिहार के भी लोग दूसरे राज्यों में जाकर नौकरी कर रहे हैं। बिहार के युवाओं के साथ कोई अन्याय नहीं हुआ है। आगे मुख्यमंत्री ने कहा कि इन 1,20,336 नवनियुक्त शिक्षकों में 88 प्रतिशत शिक्षक बिहार के ही नियुक्त हुए हैं, जबकि दूसरे राज्यों से 12 प्रतिशत शिक्षक नियुक्त हुए हैं. इनमें केरल, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, मध्यप्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पश्चिम बंगाल, दिल्ली, असम और झारखंड यानी कुल 14 राज्यों से लोग बिहार में शिक्षक नियुक्त हुए हैं। यह बड़ी खुशी की बात है कि दूसरे राज्यों के लोग यहां के बच्चों को पढ़ाएंगे। आप सभी लोगों को बधाई देता हूं। बिहार का माहौल बदला है

जीतनराम मांझी

और बिहार की छवि दूसरे राज्यों में और देश के बाहर काफी बेहतर हुई हैं, यह उसका परिचायक है। सूत्रों की माने तो बीपीएससी शिक्षक भर्ती के दूसरे चरण के लिए तैयार है। इसकी प्रक्रिया भी जल्द ही शुरू होने वाली है। संभव हुआ तो दिसंबर महीने में नियुक्ति हो सकती है। सूत्रों से मिली जानकारी के मुताबिक द्वितीय चरण के शिक्षक बहाली में करीब 1.10 लाख पदों पर वैकेंसी निकाले जाने की तैयारी में विभाग और बीपीएससी के बीच बात भी हो चुकी है। संभावना यह जताई जा रही है कि मध्य नवंबर तक द्वितीय अध्यापक नियुक्ति के लिए ऑनलाइन आवेदन करने की प्रक्रिया शुरू की जा सकती है। परीक्षा का आयोजन दिसंबर के पहले सप्ताह या मध्य दिसंबर में किया जा सकता है। एक समय था जब बीपीएससी से परीक्षा लेने को लेकर शिक्षकों के निशाने पर राज्य सरकार थी। शिक्षकों ने जुलूस निकाले, धरना दिया, लठियां खाई। तब ये कहा जा रहा था कि नियोजित टीचरों के लगभग पांच लाख परिवार नाराज हुए तो नीतीश कुमार की राजनीति का बंटाधार कर सकते है। परंतु, इस परीक्षा के बाद नीतीश कुमार की नीति के समर्थन में एक नए शिक्षक वर्ग का उदय तो हुआ ही। साथ ही पहले से नियुक्त शिक्षकों का मन भी थोड़ा सरकार के प्रति सहानुभूति के साथ जुड़ता दिख रहा है। गांधी मैदान से निकले शिक्षक या अन्य जिलों में नियुक्त हुए शिक्षक अगर किसी विचारधारा से प्रभावित नहीं हैं, तो वह चुनाव में उनके लिए वोलेंटियर की तरह काम करते दिख सकते हैं। वैसे भी चुनाव के दौरान शिक्षकों का योगदान काफी होता है। इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है। 2013 में महराजगंज में उपचुनाव हुए थे। तब नीतीश कुमार ने शिक्षा मंत्री रहे पीके शाही को चुनाव में उतारा था। कहा जाता है कि अपने मंत्रित्वकाल में उन्होंने शिक्षको के वेतन बढ़ने से साफ इनकार किया था और तब शिक्षक संघ ने महाराजगंज लोकसभा उप चुनाव में जदयू के उम्मीदवार पीके शाही को हराकर ही माने।

बहरहाल, नियुक्ति पत्र वितरण कार्यक्रम के पूर्व बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपने सहयोगी लालू प्रसाद यादव की पार्टी आरजेडी पर इशारों से तीर चलाते दिखे। नीतीश की बयानबाजी पर बिहार के सियासी गलियारों में खूब चर्चा हो रही है। बता दें कि पटना के ऊर्जा ऑडिटोरियम में हुए बिजली विभाग के एक कार्यक्रम में सीएम नीतीश ने इशारों-इशारों में लालू यादव के पुराने शासनकाल पर करारा तंज कसा। उन्होंने बिहार में बिजली व्यवस्था की 20 साल पहले और अब की स्थिति की तुलना करके सीधे तौर पर अपने सहयोगी पर हमला बोल दिया, तब से जेडीयू और आरजेडी के बीच तनातनी की अटकलें लगती रही हैं। दरअसल, नीतीश ने 2005 में पहली बार बिहार की सत्ता संभाली थी। उससे पहले लालू यादव की पार्टी आरजेडी की सरकार थी। सीएम ने कहा कि 2005 के बाद बिहार की बिजली व्यवस्था में तेजी से सुधार आया है। हमने हर घर तक बिजली पहुंचाने का काम किया। जबसे हमें काम करने का मौका मिला, राज्य में तेजी से तरक्की हुई है। इतना ही नहीं मुख्यमंत्री ने 2005 से पहले राज्य में लचर कानून-व्यवस्था का उदाहरण देते हुए कहा कि बिहार में पहले डॉक्टरों की स्थिति क्या थी, ये सब जानते हैं। बता दें कि आरजेडी शासन काल में डॉक्टर्स किडनेपर्स और रंगदारी मांगने वालों के सॉफ्ट टार्गेट हुआ करते थे। वही एक हालिया घटना ने राजद के नेताओं को हतप्रद कर दिया जब सीएम का हिलसा में सरदार पटेल की प्रतिमा के अनावरण का कार्यक्रम था। इस दौरान मुख्यमंत्री का स्वागत करने के लिए राजद के मुख्य प्रवक्ता खड़े थे, लेकिन एक गजब नजारा देखने को मिला। मुख्यमंत्री का काफिला हिलसा पहुंचा तो राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति यादव मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का स्वागत करने के लिए गुलदस्ता और चादर लेकर खड़े थे। उनकी आँखों के सामने से मुख्यमंत्री नीतीश का काफिला पार कर गया। नीतीश कुमार ने देखा, कार में हाथ जोड़ा,

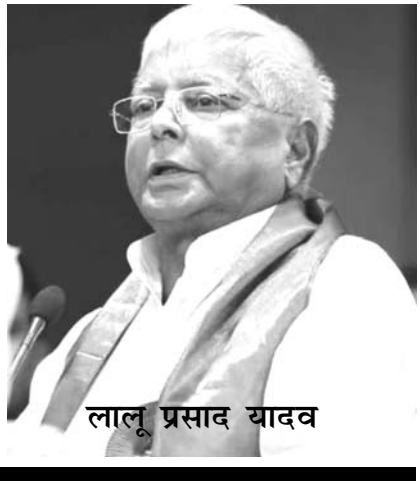

लालू प्रसाद यादव

शक्ति यादव

जब नीतीश का काफिला नहीं रुका तो बेचारे राजद प्रवक्ता महोदय झेंप गए। राजद के मुख्य प्रवक्ता महोदय के गुलदस्ता का फूल तब मुरझा गया जब वे सीएम साहब के स्वागत के लिए पलक पखवाड़े बिछा कर इंतजार कर रहे थे। काफिला आता देख हाथ में फूल का गुलदस्ता लिए सावधान होकर इंतजार करते रहे कि काफिला रुकेगा वे सीएम साहब का स्वागत करेंगे, लेकिन ये क्या सीएम ने देखा भी कार से, हाथ भी जोड़ा लेकिन काफिला नहीं रुका। अब मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह का मायुस होना उचित हीं था। ताजे फूल मुरझा जो गए थे। शक्ति सिंह को नीतीश का स्वागत किए बिना हीं लौटना पड़ा। राजद के मुख्य प्रवक्ता शक्ति सिंह तेजस्वी यादव के करीबी भी बताए जाते हैं। नीतीश महागठबंधन के साथ भले आ गये हैं और आरजेडी की कृपा से अब भी सीएम बने हुए हैं, लेकिन सच यह है कि राजद के कुछ नेता उन्हें पच नहीं रहे, तभी तो बार-बार चेतावनी के बावजूद राजद के कुछ नेता विष वमन कर नीतीश की मुश्कीलें भी बढ़ा रहे हैं। ऐसे में तेजस्वी के करीबी शक्ति यादव को भाव न देकर सीएम क्या संदेश देना चाहते हैं। बिहार में आरजेडी और जेडीयू का गठबंधन है और दोनों ही मिलकर सरकार चला रहे हैं लेकिन 2024 से पहले श्रेय लेने की होड़ इसलिए लगी है ताकि जनता के पास ये मैसेज ना जाये कि जो बिहार में शिक्षकों की बहाली हो रही है वो आरजेडी के कारण ही हो रही है, क्योंकि अगर बहाली का श्रेय सिर्फ आरजेडी ले गई तो आने वाले चुनाव में इसका खामियाजा जेडीयू को उठाना पड़ सकता है। इस बात का अंदाजा सीएम नीतीश कुमार जैसे राजनीति के माहिर खिलाड़ी को बखूबी पता है।

ज्ञात हो कि पिछली बार लोकसभा चुनाव में बिहार में आठ सीटों पर जदयू ने राजद को कड़ी टक्कर देकर सीटें जीती थीं। जदयू को 2019 के लोकसभा चुनाव में 16 सीटों पर जीत हासिल हुई थी। राजद के उम्मीदवारों ने कड़ा मुकाबला किया, पर उसके हाथ एक भी सीट नहीं आ पायी। जहानाबाद लोकसभा की सीट पर जदयू और राजद के बीच कांटे का मुकाबला रहा। इसमें जदयू उम्मीदवार चंद्रेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी महज दो हजार से भी कम मतों से राजद के डॉ सुरेंद्र प्रसाद यादव से चुनाव जीत पाये। जिन आठ सीटों पर राजद और जदयू के बीच आमने-सामने की टक्कर रही, उनमें जहानाबाद के अलावा बांका, भागलपुर, सीवान, गोपालगंज, मधेपुरा, झंझारपुर और सीतामढ़ी की सीटें रही हैं। 2019 के लोकसभा चुनाव में चार बड़े नेताओं को भी पराजय का स्वाद चखना पड़ा था। इनमें पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी गया सुरक्षित सीट से, मधेपुरा से शरद यादव, पाटलिपुत्र से मीसा भारती और काराकाट से उपेंद्र कुशवाहा को शिकस्त मिली थी। वही बता दें कि सीवान की सीट पर जदयू और राजद के बीच दो महिलाओं के बीच टक्कर रही थी। जदयू की कविता सिंह ने राजद की हेना शहाब को एक लाख 16 हजार से अधिक मतों से पराजित किया था। भागलपुर में जदयू के अजय मंडल ने राजद के पूर्व सांसद बुलो मंडल को दो लाख 72 हजार से अधिक मतों से पराजित किया था। बांका लोकसभा सीट पर जदयू के गिरधारी यादव ने राजद के दिग्गज और पूर्व केंद्रीय मंत्री जय प्रकाश नारायण यादव को करीब दो लाख से अधिक मतों से परजित किया था। वहीं, गोपालगंज सुरक्षित सीट पर जदयू के आलोक सुमन से राजद के सुरेंद्र राम भी परजित हुए थे। सबसे दिलचस्प मुकाबला मधेपुरा सीट पर हुआ। वहां अपने पुराने राजनीतिक शिष्य रहे जदयू के दिनेश चंद्र यादव ने राजद उम्मीदवार रहे पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव को करीब तीन लाख से अधिक मतों से हराया था। झंझारपुर की सीट पर राजद के गुलाब यादव जदयू के रामप्रीत मंडल से पराजित हो गये थे। हालांकि इस बार के चुनाव में महागठबंधन की छतरी में सोलह सांसदों वाला दल जदयू के अलावा राजद, कांग्रेस, भाकपा माले, माकपा और भाकपा खड़ी है।

गौरतलब है कि गठबंधन असल में नीतीश कुमार की कल्पना का ही मूर्त रूप है, लेकिन शुरू से ही उनको क्रेडिट लेने से रोकने की कोशिश चल रही है। शायद इसकी बड़ी वजह नीतीश कुमार खुद ही हैं। मुख्यमंत्री की कुर्सी पर काबिज रहने के लिए बार-बार पाला बदल कर राजनीति के इस छोर से उस छोर तक झूलते हुए नीतीश कुमार ही इसके लिए पूरी तरह जिम्मेदार भी हैं। नीतीश कुमार को जातिगत गणना से लेकर बिहार में शिक्षकों की भर्ती तक

का श्रेय लेने के लिए कदम कदम पर जूझना पड़ रहा है और हो सकता है आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा की तरफ से बतायी जा रही इंडिया गठबंधन के बड़े नेताओं की सूची से उनका नाम बाहर रखे जाने की भी ऐसी ही वजह हो। कुछ ही दिन पहले राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के बिहार दौरे के वक्त नीतीश कुमार ने बीजेपी नेताओं के साथ अपने गहरे रिश्ते का जिक्र कर एक नयी चर्चा छेड़ दी थी। करीब करीब वैसी ही चर्चा जैसा जैसी जी-20 सम्मेलन के दौरान नीतीश कुमार के राष्ट्रपति के डिनर में शामिल होने के बाद शुरू हो गयी थी। लेकिन एनडीए में लौटने के कयासों पर ब्रेक लगाने के लिए नीतीश कुमार उसके बाद तेजस्वी यादव की भी तारीफ कर डाली। तेजस्वी यादव की तरफ इशारा करते हुए कह डाले, अब हमको कुछ नहीं चाहिये। हम लोग साथ में काम कर रहे हैं। ये बच्चा हम लोगों के साथ है। यही हमारा सब कुछ है। हम साथ मिल कर अच्छा काम कर रहे हैं और फिर तेज प्रताप यादव ने भी खुशी खुशी नीतीश कुमार की बातों को आगे बढ़ा दिया, चाचा तो शुरू से लगे रहते हैं हम लोगों को आगे बढ़ाने के लिए। नौजवान हैं, उनके भतीजे हैं हम लोग। कोई चाचा नहीं चाहेगा कि भतीजा का पैर तोड़ दिया जाए या खींच लिया जाए, वो तो आगे बढ़ाने के लिए आशीर्वाद ही देगा। ये भतीजे भले ही नीतीश कुमार के लिए ऐसी बातें कर रहे हो, लेकिन इंडिया गठबंधन में नीतीश कुमार का कद कम करने के पीछे ज्यादा जिम्मेदार तो लालू यादव ही रहे हैं। हो सकता है, ये सब वो कांग्रेस के दबाव में कर रहे हों। लेकिन ये तो हर कोई जानता है कि नीतीश कुमार विपक्षी खेमे में लालू यादव के बगैर टिकने वाले नहीं हैं। आम आदमी पार्टी के नेता राघव चड्ढा की नजर में भी नीतीश कुमार विपक्षी गठबंधन के बड़े नेता नहीं लगते। इंडिया गठबंधन के बड़े नेताओं में वो ममता बनर्जी के साथ-साथ तेजस्वी यादव तक का नाम ले रहे हैं, लेकिन नीतीश कुमार का नहीं लेते। वही राघव चड्ढा ने विपक्षी खेमे के ऐसे नेताओं की सूची पेश की है जो ईडी के निशाने पर हो सकते हैं। जिन नेताओं को भ्रष्टाचार के आरोप में जेल भेजा जा सकता है। यानी वे सारे नेता जो बीजेपी और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विरोध में खड़े हो रहे हैं और ये नेता फिलहाल इंडिया गठबंधन के बैनर तले इकट्ठा हुए हैं। विधानसभा चुनावों में व्यस्तता के चलते विपक्षी गठबंधन की गतिविधियां थम सी गयी हैं। हालांकि, राघव चड्ढा का दावा है कि केंद्र की मोदी सरकार के इशारे पर प्रवर्तन निदेशालय सिर्फ विपक्षी पार्टियों के नेताओं को जेल भेजने में लगा है। राघव चड्ढा ने ये सवाल भी उठाया है कि आखिर 2014 के बाद से केंद्रीय एजेंसियों ने 95 फीसदी मामले सिर्फ विपक्षी दलों के नेताओं के खिलाफ क्यों दर्ज किये हैं? जांच एजेंसियों के निशाने पर आये नेताओं में पहला नाम राघव चड्ढा ने अरविंद केजरीवाल का रखा है। अरविंद केजरीवाल को प्रवर्तन निदेशालय ने 2 नवंबर को पेश होने का समन भेजा था। समन मिलने के साथ ही आम आदमी पार्टी के नेता अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किये जाने की आशंका जतायी जा रही थी। आप नेता का दावा है कि अरविंद केजरीवाल को गिरफ्तार किये जाने के बाद झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का नंबर आने वाला है। उसके बाद, राघव चड्ढा के मुताबिक, बिहार से डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव को गिरफ्तार किया जाएगा। फिर पश्चिम बंगाल से ममता बनर्जी और अभिषेक बनर्जी। उसके बाद केरल के मुख्यमंत्री पी. विजयन। उसके बाद तमिलनाडु से मुख्यमंत्री एमके स्टालिन के करीबियों को। उसके बाद तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव के बेटे केटीआर और बेटी कविता को और आखिर में महाराष्ट्र से पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे और एनसीपी नेता शरद पवार के करीबियों पर जिस तरह से राघव चड्ढा ने जांच एजेंसियों के निशाने पर आ रहे नेताओं के नाम गिनाये हैं, निश्चित तौर पर ज्यादातर नेता या उनके करीबी जांच एजेंसियों के निशाने पर हैं और ऐसे नेताओं से नीतीश कुमार काफी दूर खड़े हैं। राघव चड्ढा की मानें तो विपक्षी दलों के सभी नेता बेकसूर हैं, लेकिन 2024 के आम चुनाव में हार के डर से बीजेपी के इशारे पर उनको गिरफ्तार किये जाने की तैयारी चल रही है। जिन नेताओं का नाम राघव चड्ढा ने लिया है, उन्हें इंडिया गठबंधन का टॉप लीडर बताया है। ये समझ में नहीं आ रहा है कि राघव चड्ढा, नीतीश कुमार को विपक्षी खेमे के नेताओं में बेदाग छवि का एकमात्र नेता साबित करने की कोशिश कर रहे हैं या इंडिया गठबंधन के बड़े नेताओं की सूची से नीतीश कुमार को बाहर खड़ा कर रहे हैं या फिर विपक्ष में बड़ा नेता सिर्फ उनको बता रहे हैं जिनका नाम किसी न किसी घोटाले से जुड़ा हुआ है? विपक्षी खेमे में अब तक अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी और नीतीश कुमार ही साफ सुथरी छवि के नेता माने जाते रहे हैं, लेकिन अब तो लगता है नीतीश कुमार अकेले रह गये हैं। क्योंकि राघव चड्ढा के अनुसार तो ममता बनर्जी भी ईडी के निशाने पर हैं। क्या ममता बनर्जी और नीतीश कुमार में ईडी के निशाने पर होने और नहीं होने भर का ही फर्क रह गया है? राघव चड्ढा ने ईडी के निशाने पर आने वाले नेताओं की जो फेहरिस्त पेश की है, वो देख कर ऐसा लगता है जैसे वो आम आदमी पार्टी का राजनीतिक बयान पढ़ रहे हों और जांच एजेंसियों के बहाने 2024 की लड़ाई का कोई खाका पेश कर रहे हों। बड़ी चतुराई से राघव चड्ढा 2024 के आम चुनाव को बीजेपी बनाम क्षेत्रीय दलों की लड़ाई का रूप देने की कोशिश कर रहे हैं।

गौरतलब हो कि शिक्षकों की नियुक्ति को लेकर राजद और जदयू के बीच श्रेय लेने की होड़ मची हुई है, यह बात फिर से दोहराते हैं और यह सर्वविदित भी है। बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव पोस्टर के जरिए रोजगार देने का क्रेडिट ले रहे हैं। वहीं प्रदेश के सीएम नीतीश कुमार अखबार में विज्ञापन देकर खुद श्रेय ले रहे हैं। गौरतलब है कि नीतीश के पोस्टर से राजद नेता (लालू, तेजस्वी) गायब हैं तो वहीं तेजस्वी के पोस्टर से जदयू नेता (नीतीश) गायब हैं। बिहार में शिक्षकों की भर्ती को लेकर राजद और जदयू द्वारा जारी पोस्टर के बाद सियासी गलियारों में अलग ही बहस छिड़ गई है। लोगों का कहना है कि रोजगार के मुद्दे पर जो विज्ञापन और पोस्टर जारी हुए हैं, उसमें राजद-जदयू नहीं करते हुए महागठबंधन की सरकार को श्रेय देना चाहिए था। राजद-जदयू के खुद क्रेडिट लेने की वजह से गलत संदेश जा रहा है कि, कहने को सिर्फ महागठबंधन में हैं लेकिन हकीकत में राजद और जदयू खुद को बेहतर बताने में लगी हुई है। राजद के कार्यकाल में कुछ कमी रही है तो कुछ कमी जदयू के कार्यकाल में रही है। महागठबंधन में दोनों साथ हैं तो चाहिए था कि महागठंबधन को मजबूत करते हुए सभी को एक साथ श्रेय दें। यहां तो सीएम नीतीश कुमार खुद ही श्रेय लेने के लिए बेचैन हैं। इशारों-इशारों में दो बार खुद के कार्यकाल को बेहतर बता चुके हैं। एक बार अपने कार्याकल में स्वाथ्य सेवाओं को लेकर, दूसरी बार प्रदेश में आपूर्ती को लेकर अपनी पीठ थप-थपा चुके हैं। बिहार में रोजगार पर हो रही सियासत के तरह-तरह के मायने निकाले जा रहे हैं। प्रदेश के सीएम और डिप्टी सीएम भले ही विकास कार्यों का श्रेय लेने पर एक साथ मिलकर काम करने का हवाला दे रहे हैं। लेकिन बिहार के सियासी गलियारों में यह चर्चा तेज है कि आगामी चुनाव को लेकर, राजद और जदयू खुद को बेहतर साबित करना चाह रही है। सनद् रहे कि इसे लेकर सवाल उठ ही रहे थे कि जिन नीतीश कुमार ने कुछ दिन पहले ही तेजस्वी को अपना बच्चा बताते हुए ये कहा था कि उनके लिए सबकुछ है, अचानक तल्ख क्यों हो गए। अब पटना के गांधी मैदान में मंच पर लगे पोस्टर और अखबारों में एक विज्ञापन को लेकर ये सवाल भी उठने लगे हैं कि नीतीश और आरजेडी के बीच क्या सबकुछ ठीक है? जेडीयू भी पहले ही ये साफ कह चुकी है कि इसका श्रेय नीतीश कुमार को जाता है। गांधी मैदान में मंच पर जो पोस्टर लगा, उस पर और अखबारों में छपे ऐड में केवल नीतीश कुमार की तस्वीर का होना भी बहुत कुछ कहता है। जिस शिक्षा विभाग से जुड़ी नियुक्तियां हैं, उस विभाग के मंत्री चंद्रशेखर की तस्वीर भी नदारद है जो आरजेडी के ही हैं। बात केवल नसीहत, पोस्टर और विज्ञापन में तस्वीर तक ही सीमित होती तो और बात होती। नीतीश की नसीहत के कुछ ही देर बाद आरजेडी ने एक्स (पहले ट्विटर) पर एक पोस्टर पोस्ट किया। 'जो कहा सो किया' शीर्षक वाले इस पोस्टर पर तेजस्वी की बड़ी तस्वीर है और उस तस्वीर पर ही 1 लाख 20 हजार 336 शिक्षकों को नियुक्ति पत्र देने की बात है। इसके नीचे तीन प्वाइंट में प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च कक्षा के लिए नियुक्ति के आंकड़े भी बताए गए हैं। आरजेडी के पोस्टर में ये भी दावा किया गया है कि देश में पहली बार बिहार में एक दिन में एक साथ एक विभाग में इतने लोगों को नियुक्ति पत्र मिलेंगे। डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव नियुक्ति पत्र वितरित करेंगे। अब ताजा तस्वीर ये है कि नियुक्ति पत्र खुद मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही वितरित करेंगे। बिहार के सत्ताधारी गठबंधन की सबसे बड़ी पार्टी और

ड्राइविंग सीट पर बैठी पार्टी के बीच चल रहे क्रेडिट वॉर को लेकर कहा जा सकता है कि ये आरजेडी-जेडीयू गठबंधन के लिए शुभ संकेत नहीं है। जेडीयू एनडीए में रही हो या महागठबंधन के साथ, नीतीश कुमार की कोशिश हमेशा अपना कद बड़ा रखने की रही है। नीतीश अपना वजूद बनाए रखना चाहते हैं और ताजा घटनाक्रम भी यही बता रहे हैं। कहा तो ये भी जा रहा है कि नीतीश कुमार जैसा राजनेता आसानी से तेजस्वी को गद्दी सौंप देगा, ऐसा लगता नहीं है। पिछले कुछ दिनों में नीतीश जिस तरह बीजेपी नेताओं से करीबी जताने में जुटे नजर आए हैं, तस्वीर 2017 जैसी ही बनती नजर आ रही है, जब जेडीयू ने आरजेडी से किनारा कर एनडीए में वापसी कर ली थी। एक पहलू ये भी है कि बिहार में बेरोजगारी हमेशा ही बड़ा मुद्दा रही है। एक लाख से अधिक सरकारी नौकरियां देने की क्रेडिट यदि अकेले आरजेडी भुना ले जाती है तो ये नीतीश कुमार और जेडीयू की राजनीति के लिहाज से ठीक नहीं कहा जा सकता। सीधे-सीधे एक लाख परिवारों तक पहुंच के साथ ही युवाओं में तेजस्वी की लोकप्रियता बढ़ना सुशासन बाबू के साथ ही जेडीयू के लिए भी चिंता बढ़ाने वाला साबित हो सकता है। आरजेडी नीतीश के साथ रहते हुए रणनीति के तहत तेजस्वी का ग्राफ चढ़ाने में लगी है और कहा जा रहा है कि इस प्लान को भांपते हुए ही सुशासन बाबू अब खुद मैदान में उतर आए हैं। नीतीश कुमार और

जेडीयू, दोनों ही सियासी नफा-नुकसान का आंकलन करने के बाद ही एक्टिव मोड में आए हैं। चर्चा ये भी है कि नीतीश कुमार भले ही कई बार सार्वजनिक रूप से तेजस्वी को बिहार का भविष्य बताते रहे हैं, किन्तु सीएम पद पर ताजपोशी के लिए तैयार नहीं होंगे। नीतीश जानते हैं कि अगर वह तेजस्वी को सीएम बनाने का समर्थन करते हैं तो उनकी अपनी पार्टी में ही विरोध शुरू होने का खतरा है।

बहरहाल, महागठबंधन का सबसे बड़ा दल आरजेडी है। बार-बार चर्चा यह होती है कि नीतीश ने आरजेडी से गुप्त समझौता किया है। समझौते के मुताबिक वे राष्ट्रीय राजनीति में जाएंगे और बिहार की गद्दी तेजस्वी यादव संभालेंगे। चर्चा तो यह भी रही थी कि नीतीश विपक्ष की ओर से पीएम पद के दावेदार होंगे। असलियत अब तक उजागर नहीं हो पाई कि आरजेडी से उनकी क्या डील हुई, लेकिन इसी को आधार बना कर नीतीश के बड़े सहयोगी उपेंद्र कुशवाहा ने जेडीयू से किनारा कर लिया था। आरजेडी ने नीतीश को आगामी लोकसभा चुनाव के मद्देनजर विपक्षी एकता का काम सौंप दिया। नीतीश ने इसे भी मनोयोग से किया और पटना में विपक्षी दलों को जुटा कर अपना यह टास्क पूरा कर दिखाया। हां, इसके लिए उन्हें पीएम पद की दावेदारी त्यागनी पड़ी। आरजेडी की आश्वस्ति के लिए नीतीश ने यहां तक घोषणा कर दी कि 2025 का बिहार विधानसभा चुनाव तेजस्वी यादव के नेतृत्व में ही लड़ा जाएगा। इस बीच नीतीश पर आरजेडी का दबाव बढ़ता रहा कि वे तेजस्वी यादव के लिए जितनी जल्दी हो, कुर्सी खाली कर दें। नीतीश पर कुर्सी छोड़ने का दबाव बनाने के काम में सबसे आगे रहे आरजेडी के प्रदेश अध्यक्ष जगदानंद सिंह के पुत्र विधायक सुधाकर सिंह। सुधाकर सिंह लगातार नीतीश सरकार के कामकाज पर सवाल उठाते रहे। उनकी व्यक्तिगत आलोचना करते रहे। नीतीश की आलोचना के लिए उन्होंने ऐसे-ऐसे शब्दों का प्रयोग किया, जो उनकी तिलमिलाहट के लिए पर्याप्त थे। नीतीश ने उन पर कार्रवाई की जवाबदेही आरजेडी पर छोड़ दी। आरजेडी ने सुधाकर सिंह को शो काज दिया और उन्होंने इसका जवाब भी पार्टी को दिया, जिसमें उन्होंने खुद को पाक-साफ साबित करने की कोशिश की। आरजेडी उनके जवाब से संतुष्ट हुआ या नहीं, लेकिन जवाब की औपचारिकता के बाद उनकी पार्टी की ओर से इस बाबत कोई बयान नहीं आया। सुधाकर सिंह के बाद सामने आए लालू यादव की पत्नी को अपनी मुंहबोली बहन मानने-बताने वाले विधान पार्षद सुनील कुमार सिंह। सुनील कुमार सिंह ने कभी खुल कर तो कभी इशारों में सोशल मीडिया पर नीतीश के खिलाफ अभियान चलाया। जाहिर है कि नीतीश आरजेडी के इस हल्ला बोल ब्रिगेड से जरूर दुखी और परेशान हुए होंगे, लेकिन कुर्सी पर बने रहने की लाचारी ने उन्हें अब तक रोके रखा है। नीतीश कुमार के मन में शायद यह बात रही होगी कि उन्होंने प्रधानमंत्री की दावेदारी भले छोड़ दी है, लेकिन हो सकता है कि अवसर आने पर उनकी लाटरी लग जाए। जिस तरह कम सीटों के बावजूद भाजपा ने मान मनौवल कर उन्हें सीएम पद की कुर्सी सौंपी थी। विपक्षी

एकता के लिए वे दर-दर भागते-दौड़ते रहे। लोगों को जुटा भी लिया। लेकिन बाद में विपक्षी दलों की हुई बैठकों में नीतीश कुमार को किनारे करने की कवायद कांग्रेस ने शुरू कर दी। बेंगलुरु और मुंबई की बैठकों में उन्हें वो तवज्जो नहीं मिली, जो उन्हें पटना बैठक के दौरान या उससे पहले मिली थी। हल्ला होता रहा कि नीतीश कुमार विपक्षी गठबंधन के संयोजक बनेंगे, लेकिन अब यह उम्मीद खत्म हो गई है। इसलिए कि गठबंधन को कांग्रेस ने अब हाईजैक कर लिया है और कोआर्डिनेशन कमेटी बना कर संयोजक पद की जरूरत ही खत्म कर दी है। आश्चर्य है कि जिन दिनों नीतीश को संयोजक बनाने की बात चल रही थी, उसी वक्त आरजेडी के राष्ट्रीय अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव ने ऐसी किसी संभावना से इनकार कर दिया था। उन्होंने ही समन्वय समिति की सबसे पहले जानकारी दी थी। नीतीश कुमार को लगता होगा कि उनकी संभावनाएं खत्म करने में लालू की कांग्रेस से मिलीभगत है। यह अंदेशा इसलिए भी पुख्ता हो जाता है कि राहुल गांधी और लालू यादव की अब खूब छनने लगी है।

गौरतलब हो कि नीतीश कुमार को अगर सच में आरजेडी या विपक्षी गठबंधन से अब चिढ़ हो गई है तो वे यकीनन पिंड छुड़ाने की कोशिश करेंगे। उन्हें सिर्फ एक चीज से मतलब है कि उनकी कुर्सी सलामत रहे। हालांकि उनके बोल-बयान या विचार से अभी तक यह स्पष्ट नहीं पा रहा है कि उनका विचार क्या है। लेकिन पिछले अनुभव बताते हैं कि नीतीश किसी से पिंड छुड़ाने के लिए अनुकूल अवसर की तलाश में रहते हैं। तेजस्वी यादव का नाम सीबीआई ने जब पहली बार 2017 में रेलवे में नौकरी के बदले जमीन मामले में शामिल किया था तो नीतीश ने इसे ही महागठबंधन छोड़ने का बहाना बनाया था। अब तो तेजस्वी के खिलाफ चार्जशीट कोर्ट ने भी स्वीकार कर ली है। संभव है कि उनकी गिरफ्तारी भी हो जाए। नीतीश के लिए दोनों हाथ में लड्डू हैं। तेजस्वी गिरफ्तार हुए तो वे महागठबंधन के साथ रह कर भी निष्कंटक राज करते रहेंगे और ऐसा नहीं हुआ तो मन में यदि कोई गुबार है तो वे सीबीआई मामले को आधार बना कर पल्ला झाड़ सकते हैं। अगर नीतीश सच में महागठबंधन से अलग होना चाहते हैं तो उन्हें कोई दिक्कत नहीं होगी। इसलिए कि भाजपा बिहार में उन्हें समर्थन देने को तैयार बैठी है। भाजपा में नीतीश के लिए दरवाजे बंद होने की बात कहने वाले केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह अब उन्हें पानी की तरह साफ और आरजेडी को पानी को गंदा करने वाला तेल बता रहे हैं। यह भी कह रहे हैं कि तेल को पानी के साथ मिलावट से कोई फर्क नहीं पड़ता, पर पानी गंदा हो जाता है। यानी नीतीश के प्रति अब भाजपा में भी सॉफ्ट कार्नर दिखने लगा है। नीतीश अगर भाजपा के साथ जाते हैं तो बिहार में सीएम की उनकी कुर्सी सलामत रहने की गारंटी है। अगर केंद्र में अगली बार एनडीए की फिर सरकार बनी, जिसकी पूरी संभावना दिख रही है, तो नीतीश कुमार को राज्यपाल या उपराष्ट्रपति जैसा पद भी भाजपा दे सकती है।●

जाति जनगणना सिर्फ छलावा

● संजय सिन्हा

मैं बचपन में वेस्ट इंडीज क्रिकेट टीम का मैच भारत के साथ देखता था तो अपने दोस्तों के साथ अपनी दिल की बातें बताता था कि, ये वेस्ट इंडीज क्रिकेट टीम इतनी शक्तिशाली है लगता है ये सब आदमी रुप में राक्षस है, इस टीम का छक्का तब माना जाये जब गेंद स्टेडियम से बाहर चली जाये, चौका तब माना जाये जब किसी खिलाड़ी के हाथों से गेंद छुट जाये और एक रन के लिये इन्हें पांच मीटर और दौड़ कर रन बनानी पड़े, मेरे मन इतना ही सोच कर शांत नहीं हो पाया और आगे मैंने सोचा कि इनके आठ गेंद को एक ओवर माना जाना चाहिए, मेरे मन इतने पर भी शांत नहीं हुई , मेरे मन में भारत के जीत के लिए गजब की बैमानी मुझे अपने बस में किया जा रहा था, मेरी नैतिकता मन ही मन इतनी गिरी जा रही थी कि मैंने सोचा कि वेस्ट इंडीज के दूसरे बल्लेबाज गार्डन ग्रिनीज जो मोटी चश्मा पहन कर बल्लेबाजी करता है उसकी बैटिंग के पहले चश्मा उतार दिया जाये फिर इससे बल्लेबाजी करवानी चाहिए वगैरह वगैरह तब जाकर ही भारत या कोई अन्य देशों इस वेस्ट इंडीज से क्रिकेट मैच में जीत पायेगा? लेकिन मेरे मन में ये नहीं आया कि अपने आप और अपने देश के क्रिकेटर कैसे इतने काबिल और अच्छे बने जिससे वेस्ट इंडीज या पाकिस्तान को हराया जा सकें? वक्त बदला भारत में क्रिकेट टीम चयन की प्रक्रिया बदली सिर्फ अमीर ही बैटिंग करें? मुम्बई दिल्ली से ही ज्यादा क्रिकेटर टीम में जाये? ऐसा होना बंद हो गया और एक नयें और छोटे राज्यों झारखंड से भी क्रिकेटर भारतीय टीम में जाना शुरू कर दिये गये, इसका परिणाम है कि आज भारतीय टीम में कई यादव, कई मोहम्द, बुमराह हो या जडेजा पर अब एकतरफा कर नहीं है अन्यथा कभी टीम में कर यानि अगरकर वेगसरकर गवास्कर माजरेकर ज्यादा संख्या में हुआ करते थे, परंतु अब क्रिकेट में न तो क्षेत्रवाद है, न क्लोजियम, न जाति, न भाई भतीजावाद? इसलिए भारत की क्रिकेट टीम आज दुनिया में सबसे मजबूत और अच्छी है और आज इतनी बड़ी वेस्ट इंडीज क्रिकेट टीम वल्ड कप क्रिकेट से बाहर है इसे कहते हैं वक्त? मैंने पहले इस क्रिकेट की थोड़ी इतिहास व थोड़ी मन की भावना व्यक्त किया अब डाक्टर भीमराव आंबेडकर के आरक्षण का पक्ष हो या नीतीश कुमार की जाती जनगणना सर्वे दोनों में कुछ बातें तो समानता है परन्तु कुछ अलग, डाक्टर भीमराव आंबेडकर भी आज जीवित होतें तो ऐसे आरक्षण को बंद करते और कहते कि नहीं अब बस करो आरक्षण, बहुत हो गया? डाक्टर भीमराव आंबेडकर ने दस साल या फिर दूबारा से दस साल जो कि बहुत हो गया ऐसी आरक्षण की पैरवी किया था उन्होंने दलित आरक्षण का स्थाई होना दलित हितों में नहीं मानते थे, क्या आरक्षण से कोई कामयाब डाक्टर वैज्ञानिक जज सलाहकार या एक अच्छा इन्जीनियर बन सकता है क्या? शायद कभी नहीं? नीतीश कुमार जाती जनगणना करावा कर अपनी पीठ थपथपा रहे हैं, इससे क्या हो जायेगा? आज बिहार में अगर उनकी जाती की जनसंख्या 2.87 है तो क्या उनकी जाती के लोगों टैक्स कितना जमा करते? उनकी विरादरी की राष्ट्रीय विकास में कितनी प्रतिशत भागीदारी है? मेरा ये उद्देश्य नहीं है कि कोई जाती कम है सिर्फ योग्यता के हिसाब से कार्य दें, आज भारत में जितने भी फ्लाईओवर,पुल गीड़े है उनके अभियन्ताओं के जाति कभी पता किया है? जरूर करें? लेकिन ब्रिज के नीचे दब कर मरने वाले सभी जाति धर्म के थे परंतु इन्जीनियर कौन था? सोचने वाली बात है,आज जब आदमी बीमार होता है तो अपने जाति के डाक्टर से नहीं दिखाता उसे सिर्फ अच्छा डाक्टर चाहिए भले वो किसी जाति का ही क्यों न हो?आज ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कही न कहीं भारतीय हैं और धर्म से हिन्दू क्या ब्रिटेन में कोई गोरा ईसाई प्रधानमंत्री नहीं बन सकता? बन सकता लेकिन अब ब्रिटेन के लोग जाति पाति ध र्म से काफी आगे बढ़ गयें हैं, उन्हें सिर्फ योग्य आदमी चाहिए, जो उनकी अर्थव्यवस्था अच्छा कर सकें? अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा एक जिनके पिता दूसरे राष्ट्र के थे और मुस्लिम थे उन्होंने बाद में ईसाई धर्म अपनाया था उनके अपने भाई आज भी मुस्लिम हैं क्यों उन्हें उतने महत्वपूर्ण राष्ट्र अमेरिका का राष्ट्रपति बनाया? आज ऐसे देशों को रोबोट अगर अच्छा काम करें तो उसे प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बना देगा, क्या नीतीश कुमार अपने इतने लम्बे शासन काल में बिहार की कितनी विकास किया? एक समय की बात है जब गांधी सेतु जर्जर थी तब एक पुरी बटालियन बिहार पुलिस की लगाई गई थी कि गांधी सेतु जाम न हो परंतु अरेक दूसरे दिन पुल जाम हो जाती थी, पूरे बिहार दो भागों में बटा हुआ था क्योंकि हाथीदह में रेलरोड पुल पर भी लंबे समय से रिपेयरिंग के कार्य चल रहे थे, उत्तर बिहार के लोगों को राजधानी पटना आना एक बड़ी चाईलेंज रहीं थी, वो कहें कि केन्द्र सरकार के कैबिनेट मंत्री नितिन गडकरी ने अपने स्तर पर गांधीसेतु का जीर्णोद्धार कर दिया, नीतीश कुमार अब नीति आयोग की बैठक में सम्मिलित नहीं होते कुछ न कुछ बहाने बना देते हैं, जबकि पहले मनमोहन सिंह सरकार में उन्हें योजना आयोग की बैठकों में लज्जित होना पड़ता था, हाँ नीतीश बाबू उपासना एक्स्प्रेस अर्चना एक्स्प्रेस ट्रेन के अलावे कई संपर्क ट्रेनें भी जरुर चलाई है परंतु आज भी बिहार जाती पाति में सिमटी हुई है, इसलिए अब न जाती जनसंख्या सर्वे न आरक्षण आपको भारत की क्रिकेट टीम से सीख लेनी होगी अन्यथा जीवन जीवांत ऐसे लोगों को सरकार अपने पैरों पर खड़ा नहीं होने देगी. ●

भ्रष्टाचार की सारी सीमाएं तोड़ चुका है राज्य स्वास्थ्य समिति

पीडीपीएल और उर्मिला के प्यार में पागल हो गए हैं राज्य स्वास्थ्य समिति के कार्यपालक निदेशक

● **शशि रंजन सिंह/राजीव शुक्ला**

बिहार में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन को फलीभूत करने के लिए राज्य स्वास्थ्य समिति बिहार की स्थापना की गई थी, लेकिन बिहार में योजना कई अधिकारियों के लिए वरदान हो गई। इन अधिकारियों ने राज्य स्वास्थ्य समिति को पैसे कमाने की मशीन बना कर रख दिया। पिछले दो टर्म से राज्य स्वास्थ्य समिति में जो दो कार्यपालक निदेशक की नियुक्ति की गई, मानो उन्होंने तो राज्य स्वास्थ्य समिति को अपना जागीर ही समझ बैठा है। यह बात हम नहीं कर रहे हैं, चाहे राजनेता हो या पटना उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, सभी ने कहा है कि राज्य स्वास्थ्य समिति भ्रष्टाचार का अड्डा है। राज्य स्वास्थ्य समिति के पूर्व कार्यपालक निदेशक मनोज कुमार हो या वर्तमान कार्यपालक निदेशक संजय कुमार सिंह। राज्य स्वास्थ्य समिति को दोनों ने दोनों हाथों से लूटा है। दोनों कार्यपालक निदेशक का साथ पूर्व प्रशासनिक पदाधिकारी कमल नयन, राज्य कार्यक्रम प्रबंधक अविनाश पांडे, राज्य लेखा प्रबंधक मनोज कुमार साफी और बिहार प्रशासनिक सेवा के अधिकारी प्रिय रंजन राजू ने बखूबी दिया है। राज्य स्वास्थ्य समिति में वर्षों से जमे स्वास्थ्य प्रशिक्षक और राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी ने भी राज्य स्वास्थ्य समिति को लूटने में कोई कसर नहीं छोड़ी है और पिछले सारे रिकॉर्ड को ध्वस्त करते हुए भ्रष्टाचार को एक नया आयाम दिया है। उत्तर प्रदेश का NHRM घोटाला तो यूं ही बदनाम है, उससे कई गुना बड़ा घोटाला

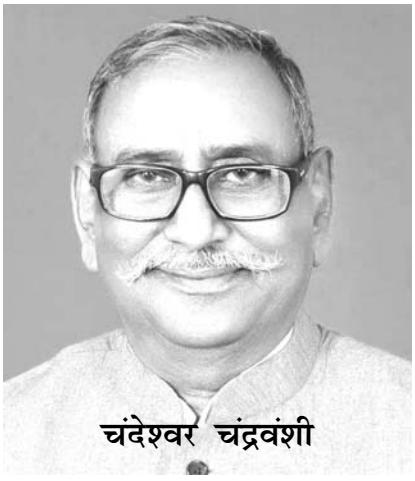

चंदेश्वर चंद्रवंशी

राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार में हुआ है। राज्य स्वास्थ्य समिति के अधिकारियों में एक बड़ी बात है कि यह अपने विभागीय मंत्री को एक फूटी कौड़ी भी नहीं देते हैं और पिछले 10 सालों से राज्य स्वास्थ्य समिति को बड़े आराम से लूट भी रहे हैं। राज्य स्वास्थ्य समिति में टेंडर रेफरेंस नंबर-02/SHSB/2019-20 के माध्यम से वर्ष 2019 में जिलों में डाटा मैनेजमेंट यूनिट की स्थापना हेतु निविदा प्रकाशित किया गया। जिसके शर्त संख्या-9-7 (8) में कहा गया है कि वित्तीय वर्ष 2014 से 2019 के बीच 3 साल में 500 डाटा एंट्री ऑपरेटर का कार्य अनुभव होना आवश्यक है। उसे उर्मिला इन्फोटेक में बेल्ट्रॉन का कार्य अनुभव प्रमाण पत्र लगाया, लेकिन पैसों के खेल ने उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को तकनीकी रूप से योग्य घोषित कर दिया, जबकि ठीक उसी समय जिला स्वास्थ्य समिति पटना ने अपने पत्रांक-1020/ DHS/PAT दिनांक-25/10/2019 से उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड का इकरारनामा डाटा एंट्री ऑपरेटर के मानदेय भुगतान कई माह से नहीं करने के कारण रद्द कर दिया। यही नहीं कई जिला स्वास्थ्य समिति ने उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को अयोग्य घोषित कर दिया। बावजूद राज्य स्वास्थ्य समिति ने उर्मिला इन्फोटेक के कार्य अनुभव प्रमाण पत्र के आधार पर उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को तकनीकी रूप से योग्य घोषित कर दिया। विदित हो की निविदा वर्ष 19-20 के लिए निकाली गई, लेकिन राज्य स्वास्थ्य समिति के अधिकारियों की जेब गर्म होने के कारण यह निविदा वित्तीय वर्ष 23-24 तक चल रही है। इस बीच उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के मालिक अविनाश ने गरीबों की बनी सरकार के नाक के नीचे गरीब, लाचार, मजबूर बेरोजगारों से नौकरी के नाम पर अरबो रुपए की कमाई की और उसका हिस्सा बड़ी ही ईमानदारी से राज्य स्वास्थ्य समिति के अधिकारियों को पहुंचाया। कई जिलों ने उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड पर और कुशल डाटा एंट्री ऑपरेटर नहीं देने का आरोप लगाया है। कई जिलों ने कंप्यूटर

संचिका संख्याः BMSIC/20045/02-2023/6342 दिनांकः 30/10 /2023

निविदा संख्याः– BMSIC/20045/02-2023/01

बिहार चिकित्सा सेवाएं एवं आधारभूत संरचना निगम लिमिटेड, बिहार पटना

बी.एम.एस.आई.सी.एल. का निविदा संख्या BMSIC/20045/02-2023/01 से संबंधित प्राप्त ई–निविदाओं के प्रारंभिक तकनीकी मूल्यांकन विवरणी पर साक्ष्य सहित दावा/आपत्ति की माँग संबंधी सूचना।

बी.एम.एस.आई.सी.एल. द्वारा ई–प्रोक–2 के माध्यम से आमंत्रित ई–निविदा (निविदा संख्या BMSIC/20045/02-2023/01) के विरूद्ध निर्धारित समय सीमा के अर्न्तगत प्राप्त ई–निविदाओं के प्राथमिक तकनीकी मूल्यांकन के उपरांत तैयार की गई प्रारंभिक तकनीकी मूल्यांकन विवरणी, दावा/आपत्ति के आमंत्रण हेतु बी.एम.एस.आई.सी.एल. के वेबसाईट (www.bmsicl.gov. in) पर अपलोड की जा रही है।

निविदा में भाग लेने वाले निविदादाता अपलोड किये गये उपर्युक्त प्रारंभिक तकनीकी मूल्यांकन विवरणी में किसी प्रकार की विसंगति पाये जाने की स्थिति में साक्ष्य सहित अपना दावा/आपत्ति दिनांक 06.11.2023 के अपराह्न 05:00 बजे तक e-mail Id (hr.bmsicl@gmail.com) पर समर्पित कर सकते हैं। उपर्युक्त समय सीमा समाप्ति के पश्चात् प्राप्त किसी प्रकार का दावा/आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जायेगा।

अनुलग्नकः यथोक्त।

ह0/–
महाप्रबंधक (प्रशासन)

तेजस्वी यादव

IN THE HIGH COURT OF JUDICATURE AT PATNA
Civil Writ Jurisdiction Case No.16899 of 2022

1. BVG India Ltd a company incorporated under the Companies Act having its registered address at BVG House, Premier Plaza, Pune-Mumbai Road, Chinchwad Pune- 411019, Maharashtra through its Authorized Representative Raj Kumar Bhardwaj, Aged about 35 years (Male), S/o Indreshwar Jha, R/o NY/1 N Jagdish Bhawan, Kachi Talab, Gardanibagh, Phulwari, PS- Gardanibagh, District- Patna.
2. Sammaan Foundation, a non profit company registered under Companies act having its office at SBI Colony No. 2, House No 2/30, Jagdeo Path, Khajpura, Bailey Road, Patna-13 through its authorised representative Vivek Kumar Bhardwaj, Aged about 29Years, (Male), R/o Padmaytan, New Mahavir Colony, Hasanpura Road, Beur, Anisabad, PS- Beur, District Patna.
3. Consortium of BVG India Ltd. and Sammaan Foundation having office at SBI Colony No. 2, House No 2/30, Jagdeo Path, Khajpura, Bailey Road, Patna-13 through its authorised representative Vivek Kumar Bhardwaj, Aged about 29Years, (Male), R/o Padmaytan, New Mahavir Colony, Hasanpura Road, Beur, Anisabad, PS- Beur, District Patna.

... ... Petitioner/s

Versus

1. The State of Bihar through the Additional Chief Secretary, Health Department, having its office at 1st Floor, Vikas Bhawan, Bailey Road, Patna -800015
2. The Executive Director, State Health Society, Bihar (SHSB), Government of Bihar Patna.
3. The Technical Committee, NIT Reference-1/SHSB/PPP (Ambulance)/2022-2023, State Health Society, Bihar (SHSB), Government of Bihar, Patna through its Chairperson and Members.
4. M/S Pashupatinath Distributors Private Limited having its registered address at F-2, Chandi Vyapar Bhawan 3rd Floor, Exhibition Road Patna, P.S.-Gandhi Maidan- 800001, Bihar through its authorised representative.
5. M/s GUK Emergency Management and Research Institute, Having registered office at Paigah House, 156-159, Sardar Patel Road, Secunderabad, Telangana, through its Director.
6. Ziquitza Health Care Ltd., Sunshine Tower, 23rd Floor, Senapati Bapat Marg, Dadar (West), Mumbai, through its Director.

... ... Respondent/s

with

Civil Writ Jurisdiction Case No. 8553 of 2023

M/s Ziqitza Health Care Ltd. Having its registered office at 23rd Floor, Sunshine Tower, Senapati Bapat Marg, Dadar West, Mumbai - 400 013 through its authorized representative, Mr. Amit Kumar, Male, aged about 38

WEB COPY

years, son of Shri Prameshwar Chandra Das, resident of 3, Anand Bazar, Danapur, District - 801503

... ... Petitioner/s

Versus

1. The State of Bihar Through the Additional Chief Secretary, Health Department, Bihar, Patna.
2. State Health Society, Bihar, Patna through its Executive Director
3. Executive Director, State Health Society, Bihar, Patna
4. M/s Pashupatinath Distributors Pvt Limited Having its registered office at F-2, Chandi Vyapar Bhawan, 3rd Floor, Exhibition Road, P.S.-Gandhi Maidan, District - Patna, Pin Code - 800 001, through its Authorised Representative.

... ... Respondent/s

Appearance :

(In Civil Writ Jurisdiction Case No. 16899 of 2022)

For the Petitioner/s	:	Mr. S.D. Sanjay, Sr. Advocate assisted by Mr. Brisketu Sharan Pandey, Advocate Mr. Nirbhay Prashant, Advocate Mr. Vishal Kumar, Advocate Mr. Rahul Kumar, Advocate Mr. Lokesh Kumar, Advocate
For the Respondent No. 4 :		Mr. Jitendra Singh, Sr. Advocate assisted by Mr. Satyabir Bharti, Advocate Mr. Abhishek Anand, Advocate Ms. Kanupriya, Advocate Ms. Sushmita Sharma, Advocate
For the Resp Nos. 1, 2 and 3 :		Mr. Umesh Prasad Singh, Sr. Advocate assisted by Ms. Aditi Kumari, Advocate Mr. K.K. Sinha, Advocate Mr. Vaibhav Veer Shankar, Advocate
For State	:	Mr. Ramadhar Singh, GP 25 assisted by Mr. Upendra Prasad Singh, AC to GP 25

(In Civil Writ Jurisdiction Case No. 8553 of 2023)

For the Petitioner/s	:	Mr. Abhinav Srivastava, Advocate
For the Respondent No. 4 :		Mr. Jitendra Singh, Sr. Advocate assisted by Mr. Satyabir Bharti, Advocate Mr. Abhishek Anand, Advocate Ms. Kanupriya, Advocate Ms. Sushmita Sharma, Advocate
For the Resp Nos. 1, 2 and 3 :		Mr. Umesh Prasad Singh, Sr. Advocate assisted by Ms. Aditi Kumari, Advocate Mr. K.K. Sinha, Advocate Mr. Vaibhav Veer Shankar, Advocate
For State	:	Mr. Ramadhar Singh, GP 25 assisted by Mr. Upendra Prasad Singh, AC to GP 25

WEB COPY

अधिष्ठापन नहीं करने का आरोप लगाया। राज्य स्वास्थ्य समिति को पत्र लिखकर उनकी कारस्तानी को बताया, लेकिन नतीजा ढ़ाक के तीन पात वाली होकर रह गई। कई बार वह उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड पर राज्य स्वास्थ्य समिति के फाइलों को सार्वजनिक करने का आरोप लगा, लेकिन जब सैंया भेल कोतवाल तो डर कैसा।

वर्तमान में राज्य स्वास्थ्य समिति ने टेंडर नंबर-4/SHSB/DMU-2013-24 से डाटा मैनेजमेंट यूनिट में डाटा एंट्री ऑपरेटर, एनालिसिस और प्रबंधन के लिए निविदा प्रकाशित की है, जिसमें नियम शर्त के एलिजिबिलिटी क्राइटेरिया के 2 (IV)में कहा गया है कि कंपनी को किसी भी सरकारी विभाग से सिंगल 2500 डाटा एंट्री ऑपरेटर को पिछले 2018 से 2023 में कार्य अनुभव होना चाहिए। राज्य स्वास्थ्य समिति को 2019 में 500 डाटा एंट्री का अनुभव चाहिए था और 2023 में 2500 डाटा एंट्री का अनुभव चाहिए, वह भी सिंगल आदेश अनिवार्य है। निविदा में ANX-7 के अनुसार अभी उर्मिला को 3713 डाटा एंट्री ऑपरेटर का

संजय कुमार सिंह

कार्य अनुभव है तब तो उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को तकनीकी रूप से कोई अयोग्य घोषित कर ही नहीं सकता है लेकिन यह भी देखना होगा कि वित्तीय वर्ष 2018 से 2024 तक लगातार वर्षों में 2500 डाटा एंट्री ऑपरेटर का सिंगल कार्य अनुभव उर्मिला के पास है कि नहीं, बरहाल राज्य स्वास्थ्य समिति द्वारा निकाली गई निविदा उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को ही मिले इसकी पक्की गारंटी के साथ निकाली गई है जान बूझकर ऐसा शर्त बनाया गया है कि तकनीकी रूप से उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड योग्य घोषित हो। केंद्रीय सतर्कता आयोग का कहना है कि निविदा को ज्यादा से ज्यादा प्रतिस्पर्धी बनाना बनाए रखना चाहिए ताकि बोली न्यूनतम हो, लेकिन राज्य स्वास्थ्य समिति ऐसी निविदा बनता है जिससे उनके संवेदकों और उसके अधिकारियों की जेब भरती रहे। राज्य स्वास्थ्य समिति ही नहीं पूरा स्वास्थ्य

exercises its contractual powers, but judicial review is intended to prevent arbitrariness and it must be exercised in larger public interest. Expression of different views and opinions in exercise of contractual powers may be there, however, such difference of opinion must be based on specified norms. Those norms may be legal norms or accounting norms. As long as the norms are clear and properly understood by the decision-maker and the bidders and other stakeholders, uncertainty and thereby breach of the rule of law will not arise. The grounds upon which administrative action is subjected to control by judicial review are classifiable broadly under three heads, namely, illegality, irrationality and procedural impropriety. In the said judgment it has been held that all errors of law are jurisdictional errors. One of the important principles laid down in the aforesaid judgment is that whenever a norm/benchmark is prescribed in the tender process in order to provide certainty that norm/standard should be clear. As stated above "certainty" is an important aspect of the rule of law. In Reliance Airport Developers [(2006) 10 SCC 1] the scoring system formed part of the evaluation process. The object of that system was to provide identification of factors, allocation of marks of each of the said factors and giving of marks at different stages. Objectivity was thus provided."

Second respondent - Society in accepting tender of respondent No. 4 – Pashupatinath Distributors Private Limited has acted unfair and contrary to the norms which State institutions/organization should follow in such matters, *namely*, complying of Article 14 of the Constitution of India, transparency and fairness in the entire bid process. In other words, fairness in handling the contractual matters is in the public interest. Perusal of the records, it is evident that, there is no fairness on the part of the second respondent insofar as rejection of the petitioners – BVG

WEB COPY

bid application for want of internal materials of the Audited Balance Sheet like Notes. Similarly, while handling bid application of the fourth respondent – Pashupatinath Distributor Private Limited have failed to take note of eligibility of the fourth respondent insofar as Clause 2.2 read with Clause 2.3 of the NIT, which has been analyzed in earlier paragraph, therefore, the impugned action of the second respondent Society is unreasonable, arbitrary and in violation of Article 14 of the constitution of India.

68. Respondent No. 2 – Society is hereby directed to revisit from the stage of technical evaluation among the remaining bidders including petitioner – BVG India Limited and petitioner – Ziqitza and others, if any and proceed to evaluate technical bid afresh and thereafter undertake further proceedings. The above exercise shall be completed within a period of two months from the date of receipt of copy of this order. Till then, the interim arrangement made by this Court shall continue.

69. Accordingly, writ petition of BVG India Limited and two others *i.e.* CWJC No. 16899 of 2022 is allowed.

70. CWJC No. 8553 of 2023 filed by M/s Ziqitza Health Care Ltd. is allowed in part to the extent reliefs sought against

WEB COPY

fourth respondent. Rest of the reliefs sought by the petitioner is not entitled in view of above analysis and directions.

(P. B. Bajanthri, J)

(Arun Kumar Jha, J)

GAURAV S./-

AFR/NAFR	
CAV DATE	18.10.2023
Uploading Date	11.11.2023
Transmission Date	

WEB COPY

विभाग उर्मिला के अविनाश बाबू के आगे नतमस्तक है बीएमएस आईसीएल में हुए एक निविदा में उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड को अयोग्य घोषित कर दिया गया तो पुनः एक निविदा संख्या-बीएमएसआईसी/20045/02-2023 निकालकर उर्मिला इंटरनेशनल सर्विस प्राइवेट लिमिटेड को योग्य घोषित कर दिया गया, विदित हो कि राज्य स्वास्थ्य समिति और बीएमएसआईसीएल में आउट सोर्सिंग को देखने वाले बिहार प्रशासनिक सेवा के महाभ्रष्ट अधिकारी प्रिय रंजन राजू हैं, चूकी पहले उनके आका अविनाश बाबू का निविदा अयोग्य घोषित

अविनाश कुमार

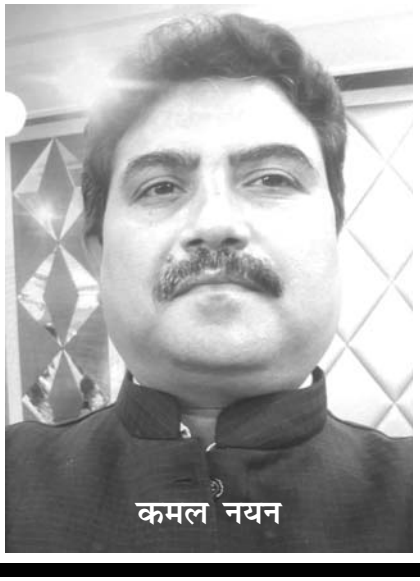

कमल नयन

प्रियरंजन राजू

राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार

Swasthya Bhawan, Sheikhpura, Patna-14

GOVERNMENT OF BIHAR
DEPARTMENT OF HEALTH

e-tender(NIT) Reference No. 04/SHSB/DMU/2023-24

Notice Inviting Tender for selection of Service Provider for establishing Data Management Units (DMUs) for providing data entry, analysis and management services in Government Healthcare Facilities and Health Department Offices in all 38 districts in the state of Bihar.

e-Procurement Mode Only

https://eproc2.bihar.gov.in

Page 1 of 45

SECTION-V

ELIGIBILITY CRITERIA

1) This invitation is open to all organizations registered under Companies Act, 1956/2013 who fulfill the eligibility & qualification criteria specified hereunder.

2) The eligibility criteria and Supporting Documents to be submitted by the bidders are as follows:-

S.no.	Eligibility criteria for Bidders	Mandatory Documents to be submitted as Evidence
(I)	The Bidder should be an established entity under Companies Act, 1956/2013.	For company – Copy of the certificate of incorporation issued by the Registrar of Companies (RoC) under Companies Act 1956/2013.
(II)	The bidder must have minimum average annual turnover of Rs.90 Crore (Ninety Crore Rupees), during the financial years (FY 2020-21, FY 2021-22 & FY 2022-23), and must have min. paid up capital of 1 crore (certified by the statutory auditor) as evidenced by the audited accounts of the bidder.	Self-attested copies of the below documents for concerned financial years: 1) Audited Balance sheet 2) Audited Statement of Profit & loss account along with all appendix. 3) Certificate by Statutory Auditor regarding minimum paid-up capital of Rs. 1 crore
(III)	The bidder must have (i) PAN Card, (ii) Income Tax Returns (ITR) for the three assessment years AY 2021-22, AY 2022-23 & AY 2023-24, and (iii) GST Registration Certificate (iv) ESI & EPF registration certificate	Self-attested copies of below documents: 1) PAN Card 2) GST Registration Certificate 3) Copy of Income Tax Return filed and submitted by the bidder for three assessment years AY 2021-22, AY 2022-23 & AY 2023-24. 4) ESI & EPF registration certificate
(IV)	The bidder must have experience of providing minimum 2500 data entry operators/data operators/computer operators through a single work order/agreement to Government (Central or state) sector /PSUs in any 3 years of the last five financial years (2018-19, 2019-20, 2020-21, 2021-22 and 2022-23)	1) Copy of the work order(s) and experience certificate(s) from the client(s). The work order(s) and experience certificate(s) should clearly indicate the services being provided by the agency and the count of the manpower along with duration (data entry operators/computer operators) deployed by the agency. 2) Electronic Challan Receipt (ECR) for ESI and EPF, for 2500 employees/DEOs/High Skilled Manpower, in each of the respective years, for which it has submitted documents (Work order(s) and Experience Certificate(s)), to prove that they are complying to ESI and EPF

Page 18 of 45

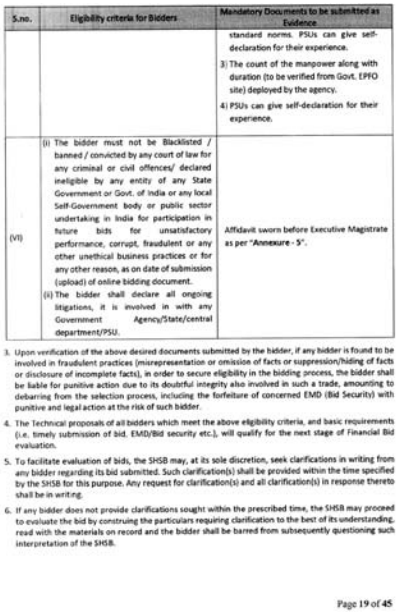

S.no.	Eligibility criteria for Bidders	Mandatory Documents to be submitted as Evidence
		standard norms. PSUs can give self-declaration for their experience. 3) The count of the manpower along with duration (to be verified from Govt. EPFO site) deployed by the agency. 4) PSUs can give self-declaration for their experience.
(VI)	(i) The bidder must not be Blacklisted / banned / convicted by any court of law for any criminal or civil offences/ declared ineligible by any entity of any State Government or Govt. of India or any local Self-Government body or public sector undertaking in India for participation in future bids for unsatisfactory performance, corrupt, fraudulent or any other unethical business practices or for any other reason, as on date of submission (upload) of online bidding document. (ii) The bidder shall declare all ongoing litigations, it is involved in with any Government Agency/State/central department/PSU.	Affidavit sworn before Executive Magistrate as per "Annexure - 5".

3. Upon verification of the above desired documents submitted by the bidder, if any bidder is found to be involved in fraudulent practices (misrepresentation or omission of facts or suppression/hiding of facts or disclosure of incomplete facts), in order to secure eligibility in the bidding process, the bidder shall be liable for punitive action due to its doubtful integrity also involved in such a trade, amounting to debarring from the selection process, incluing the forfeiture of concerned EMD (Bid Security) with punitive and legal action at the risk of such bidder.
4. The Technical proposals of all bidders which meet the above eligibility criteria, and basic requirements (i.e. timely submission of bid, EMD/Bid security etc.), will qualify for the next stage of Financial Bid evaluation.
5. To facilitate evaluation of bids, the SHSB may, at its sole discretion, seek clarifications in writing from any bidder regarding its bid submitted. Such clarification(s) shall be provided within the time specified by the SHSB for this purpose. Any request for clarification(s) and all clarification(s) in response thereto shall be in writing.
6. If any bidder does not provide clarifications sought within the prescribed time, the SHSB may proceed to evaluate the bid by construing the particulars requiring clarification to the best of its understanding, read with the materials on record and the bidder shall be barred from subsequently questioning such interpretation of the SHSB.

Page 19 of 45

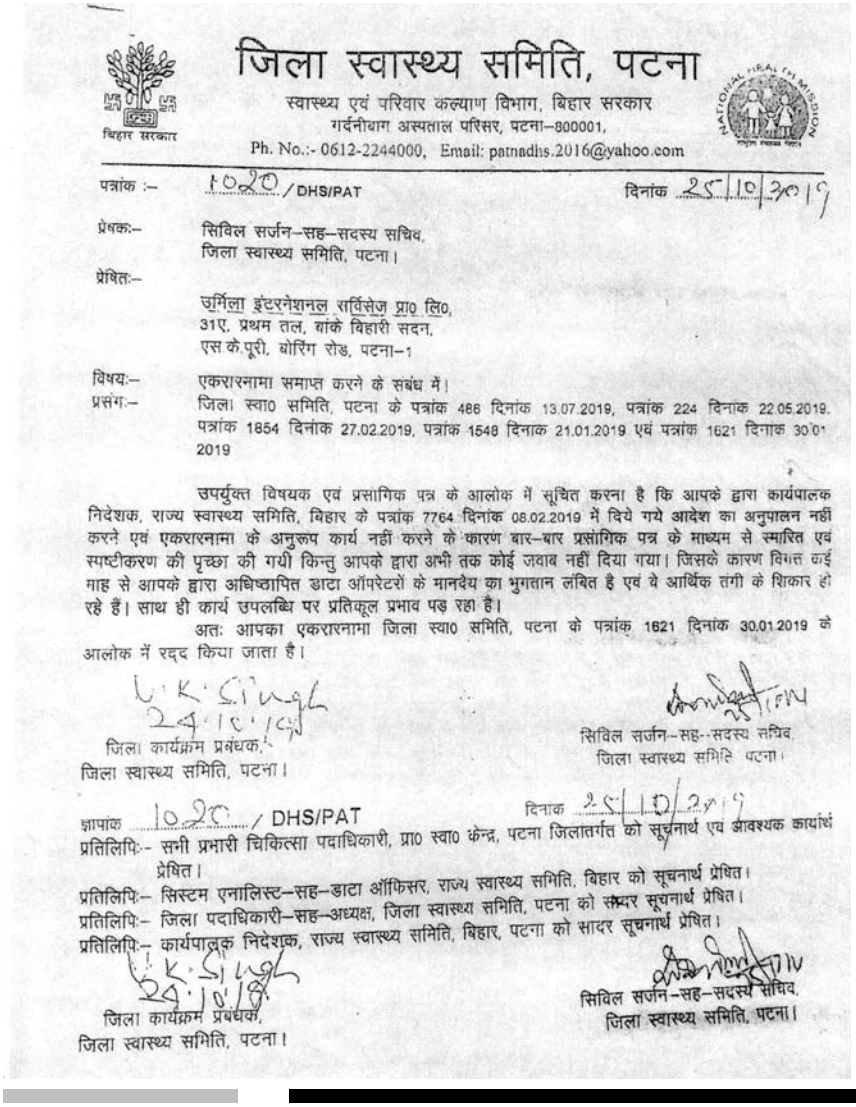

बिहार सरकार

जिला स्वास्थ्य समिति, पटना

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, बिहार सरकार
गर्दनीबाग अस्पताल परिसर, पटना–800001,
Ph. No.:- 0612-2244000, Email: patnadhs.2016@yahoo.com

पत्रांक :– 1020 /DHS/PAT दिनांक 25/10/2019

प्रेषक:– सिविल सर्जन–सह–सदस्य सचिव,
जिला स्वास्थ्य समिति, पटना।

प्रेषित:–

उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज़ प्रा0 लि0,
31ए, प्रथम तल, बांके बिहारी सदन,
एस.के.पूरी, बोरिंग रोड, पटना–1

विषय:– एकरारनामा समाप्त करने के संबंध में।
प्रसंग:– जिला स्वा0 समिति, पटना के पत्रांक 486 दिनांक 13.07.2019, पत्रांक 224 दिनांक 22.05.2019, पत्रांक 1854 दिनांक 27.02.2019, पत्रांक 1548 दिनांक 21.01.2019 एवं पत्रांक 1621 दिनांक 30.01.2019

उपर्युक्त विषयक एवं प्रसांगिक पत्र के आलोक में सूचित करना है कि आपके द्वारा कार्यपालक निदेशक, राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार के पत्रांक 7764 दिनांक 08.02.2019 में दिये गये आदेश का अनुपालन नहीं करने एवं एकरारनामा के अनुरूप कार्य नहीं करने के कारण बार–बार प्रसांगिक पत्र के माध्यम से स्मारित एवं स्पष्टीकरण की पृच्छा की गयी किन्तु आपके द्वारा अभी तक कोई जवाब नहीं दिया गया। जिसके कारण विगत कई माह से आपके द्वारा अधिष्ठापित डाटा ऑपरेटरों के मानदेय का भुगतान लंबित है एवं वे आर्थिक तंगी के शिकार हो रहे हैं। साथ ही कार्य उपलब्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

अतः आपका एकरारनामा जिला स्वा0 समिति, पटना के पत्रांक 1621 दिनांक 30.01.2019 के आलोक में रद्द किया जाता है।

U.K. Singh
24/10/19
जिला कार्यक्रम प्रबंधक,
जिला स्वास्थ्य समिति, पटना।

सिविल सर्जन–सह–सदस्य सचिव,
जिला स्वास्थ्य समिति, पटना।

ज्ञापांक 1020 / DHS/PAT दिनांक 25/10/2019

प्रतिलिपि:– सभी प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी, प्रा0 स्वा0 केन्द्र, पटना जिलांतर्गत को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।
प्रतिलिपि:– सिस्टम एनालिस्ट–सह–डाटा ऑफिसर, राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार को सूचनार्थ प्रेषित।
प्रतिलिपि:– जिला पदाधिकारी–सह–अध्यक्ष, जिला स्वास्थ्य समिति, पटना को सादर सूचनार्थ प्रेषित।
प्रतिलिपि:– कार्यपालक निदेशक, राज्य स्वास्थ्य समिति, बिहार, पटना को सादर सूचनार्थ प्रेषित।

U.K. Singh
24/10/19
जिला कार्यक्रम प्रबंधक,
जिला स्वास्थ्य समिति, पटना।

सिविल सर्जन–सह–सदस्य सचिव,
जिला स्वास्थ्य समिति, पटना।

कर दिया गया था तो तिकरम भीराकर नई सिरे से निविदा निकलवा लिए और उसमें उर्मिला इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड को तकनीकी रूप से योग्य घोषित करवा लिए। आज बिहार में बेल्ट्रॉन हो या राज्य स्वास्थ्य समिति या स्वास्थ्य विभाग सारे के सारे अधिकारी उर्मिला के अविनाश बाबू के दास हैं, जैसे फिल्मों में खलनायक अधिकारियों के आगे नोटों की गड्डियां थामकर अपना कुत्ता बना कर रखता है। इस तरह अविनाश बाबू बिहार के कुत्ता नामक अधिकारियों को गले में पट्टा पहन कर रखे हुए हैं।

अभी हाल के वर्षों में 102 एंबुलेंस संचालन में हुए भ्रष्टाचार का मामला काफी राजनीतिक सुर्खियां बटोरा था। राज्य स्वास्थ्य समिति के अधिकारियों में भ्रष्टाचार को नए

अविनाश पाण्डेय

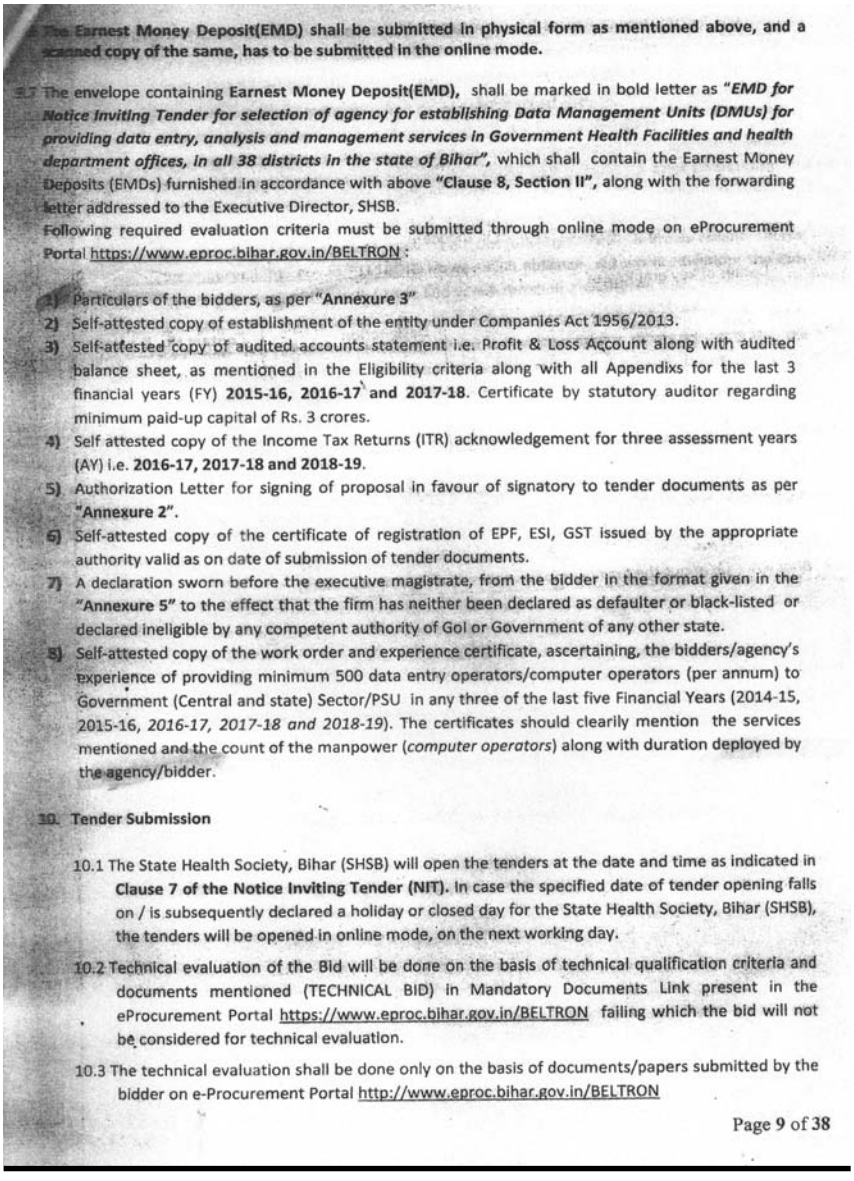

The Earnest Money Deposit(EMD) shall be submitted in physical form as mentioned above, and a scanned copy of the same, has to be submitted in the online mode.

9.7 The envelope containing **Earnest Money Deposit(EMD),** shall be marked in bold letter as ***"EMD for Notice Inviting Tender for selection of agency for establishing Data Management Units (DMUs) for providing data entry, analysis and management services in Government Health Facilities and health department offices, in all 38 districts in the state of Bihar",*** which shall contain the Earnest Money Deposits (EMDs) furnished in accordance with above **"Clause 8, Section II",** along with the forwarding letter addressed to the Executive Director, SHSB.
Following required evaluation criteria must be submitted through online mode on eProcurement Portal https://www.eproc.bihar.gov.in/BELTRON :

1) Particulars of the bidders, as per **"Annexure 3"**
2) Self-attested copy of establishment of the entity under Companies Act 1956/2013.
3) Self-atfested copy of audited accounts statement i.e. Profit & Loss Account along with audited balance sheet, as mentioned in the Eligibility criteria along with all Appendixs for the last 3 financial years (FY) **2015-16, 2016-17 and 2017-18**. Certificate by statutory auditor regarding minimum paid-up capital of Rs. 3 crores.
4) Self attested copy of the Income Tax Returns (ITR) acknowledgement for three assessment years (AY) i.e. **2016-17, 2017-18 and 2018-19.**
5) Authorization Letter for signing of proposal in favour of signatory to tender documents as per **"Annexure 2".**
6) Self-attested copy of the certificate of registration of EPF, ESI, GST issued by the appropriate authority valid as on date of submission of tender documents.
7) A declaration sworn before the executive magistrate, from the bidder in the format given in the **"Annexure 5"** to the effect that the firm has neither been declared as defaulter or black-listed or declared ineligible by any competent authority of GoI or Government of any other state.
8) Self-attested copy of the work order and experience certificate, ascertaining, the bidders/agency's experience of providing minimum 500 data entry operators/computer operators (per annum) to Government (Central and state) Sector/PSU in any three of the last five Financial Years (2014-15, 2015-16, *2016-17, 2017-18 and 2018-19*). The certificates should clearly mention the services mentioned and the count of the manpower (*computer operators*) along with duration deployed by the agency/bidder.

10. **Tender Submission**

10.1 The State Health Society, Bihar (SHSB) will open the tenders at the date and time as indicated in **Clause 7 of the Notice Inviting Tender (NIT).** In case the specified date of tender opening falls on / is subsequently declared a holiday or closed day for the State Health Society, Bihar (SHSB), the tenders will be opened in online mode, on the next working day.

10.2 Technical evaluation of the Bid will be done on the basis of technical qualification criteria and documents mentioned (TECHNICAL BID) in Mandatory Documents Link present in the eProcurement Portal https://www.eproc.bihar.gov.in/BELTRON failing which the bid will not be considered for technical evaluation.

10.3 The technical evaluation shall be done only on the basis of documents/papers submitted by the bidder on e-Procurement Portal http://www.eproc.bihar.gov.in/BELTRON

Page 9 of 38

आयाम देने की और लगी हुई है पूर्व कार्यपालक निदेशक को पीछे छोड़ते हुए वर्तमान कार्यपालक निदेशक ने उर्मिला इंटरनेशनल सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड से आगे बढ़ते हुए पशुपति नाथ डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड को फर्जी कागजात के आधार पर 102 एंबुलेंस संचालन का ठेका दे दिया, पटना उच्च न्यायालय द्वारा बार-बार प्रश्न उठाए जाने के बावजूद भी कार्यपालक निदेशक संजय सिंह ने पशुपति नाथ डिस्ट्रीब्यूशन प्राइवेट लिमिटेड के साथ इकरारनामा कर लिया, विदित हो कि कई राजनीतिक और मीडिया घराने जहानाबाद के जदयू सांसद चंदेश्वर चंद्रवंशी के पुत्र की कंपनी पशुपति नाथ डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड को कार्यपालक निदेशक द्वारा फर्जी कागजात के आधार पर तकनीकी रूप से योग्य घोषित कर L1 घोषित करने का आरोप लगाया था।

पटना उच्च न्यायालय में सीडब्ल्यूजेसी संख्या-16899/2022 और सीडब्ल्यूजेसी नंबर-8553/2023 BVG इंडिया लिमिटेड वर्सेस ZIQUITZA हेल्थ केयर लिमिटेड बनाम बिहार सरकार-राज्य स्वास्थ्य समिति के आदेश में साफ तौर पर कहा गया है कि राज्य स्वास्थ्य समिति ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 का अनुपालन नहीं किया गया है जो कहता है की संपूर्ण निविदा प्रक्रिया में पारदर्शिता और निष्पक्षता होना चाहिए, उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों का कहना है कि पशुपतिनाथ डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड को तकनीकी रूप से योग्य घोषित करने के लिए गलत मापदंडों का प्रयोग किया गया है और उसे अनुचित रूप से योग्य घोषित किया गया है दूसरी तरफ BVG इंडिया लिमिटेड को गलत तरीकों से अयोग्य घोषित किया गया है। न्यायालय ने कहा कि राज्य स्वास्थ्य समिति ने पशुपति नाथ डिस्ट्रीब्यूटर प्राइवेट लिमिटेड के अकाउंट रिपोर्ट को सही तरीके से नहीं देखा है और उसे तकनीकी रूप से योग्य घोषित कर दिया गया है जिससे भ्रष्टाचार साफ तौर से देखा जा सकता है। राज्य स्वास्थ्य समिति में कार्य संस्कृति में ही भ्रष्टाचार का बोलबाला है राज्य स्वास्थ्य समिति के वर्तमान बॉस अपने आगे वरीय अधिकारियों की भी तवज्जो नहीं देते हैं उनको किसी भी कार्य करने से पहले सिर्फ पैसा दिखता है।

राज्य स्वास्थ्य समिति की स्थापना ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन कार्यक्रम के लिए हुई थी लेकिन आज गांव-गांव में डेंगू फैल गया है लोग मर रहे हैं, लेकिन उनकी सुधि लेने वाला कोई नहीं है। आज डेंगू से हजारों लोग मर चुके हैं लेकिन राज्य स्वास्थ्य समिति को तो उससे कोई फर्क पड़ता नहीं है। अकेले बेगूसराय में डेंगू से सैकड़ो लोग मर जाते हैं लेकिन वहां के जिला कार्यक्रम प्रबंधक से इस बारे में बात करने पर डेंगू की परिभाषा बताने लगते हैं, ब्लीचिंग पाउडर का छिड़काव करने का आग्रह करने पर ब्लीचिंग पाउडर की उपयोगिता बताने लगते हैं जो काम स्वास्थ्य समिति को खुद करना चाहिए उसे करने के लिए भी उनसे मिन्नते करना पड़ता है। आज राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन अपने मिशन से भटक गया है उसके अधिकारियों को सिर्फ और सिर्फ पैसा दिखता है आज राज्य स्वास्थ्य समिति में लूट का माहौल बना हुआ है। प्रखंड स्तर से लेकर राज्य स्तर तक लूट की छूट है। कनीय अधिकारी से लेकर वरीय अधिकारी तक सिर्फ और सिर्फ पैसा बनाने में लगे हुए हैं।

राज्य के स्वास्थ्य मंत्री बड़े राजनेता हैं उन्हें अपने विभाग के अलावा अपनी राजनीतिक अस्तित्व की की भी लड़ाई लड़नी है राज्य के स्वास्थ्य मंत्री को स्वास्थ्य विभाग के अलावा और कई मंत्रालयों का प्रभार है, साथ ही अपनी पार्टी को भी देखना है। इसलिए उनके पास समय कम बचता है जिसका फायदा स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी उठा रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री कभी भी अपने कक्ष में नहीं बैठते हैं वह अपने कार्यालय आवास पर ही मीटिंग लेते हैं और सिर्फ अधिकारियों से घिरे रहते हैं, शुरू शुरू में उन्होंने कई अस्पतालों का दौरा किया जिसका फायदा राज्य की जनता को मिला भी है लेकिन राजनीतिक के व्यस्ताओं के कारण हुआ विभाग में समय नहीं दे पा रहे हैं जिससे पूरे स्वास्थ्य विभाग में लूट का माहौल बना हुआ है।●

रौशनी की चकाचौंध में भ्रष्टाचार का अंधेरा

● **शशि रंजन सिंह/राजीव शुक्ला**

बिजली व्यवस्था की पटरी को लाईन पर लाने को लेकर बिजली विभाग अपने नये अंदाज में उपभोक्ता के सामने हर बार पेश होती रही है, सुविधा और सेवा से लोकप्रिय मंत्रालय/विभाग आम लोगों तक अपनी रौशनी की पहुँच से अँधेरे को खत्म करने की आंतरिक छटपटाहट और तत्परता हमेशा दिखाई देती है, जिसे बड़े स्तर के अधिकारी और मंत्री, पब्लिक डोमेन में सलीके अपनी बातों को परोसते हैं। यह सही है कि शासन और सरकार की चिंता अमूमन अपने नागरिकों को बेहतर सेवा और सुविधा कैसे प्रदान की जाये, इसकी फिक्र करना ही उनकी जिम्मेदारी है किन्तु बिजली विभाग के अंदर कुछ ऐसे लापरवाह, भ्रष्ट और नालायक अधिकारी /अभियंता की वजह से बिजली विभाग हमेशा घाटे में रहती है जबकि इसे आसान और कम से कम फायदे में नहीं भी हो तो नुकसान में तो बिल्कुल ही होना चाहिए।

☞ **बिजली व्यवस्था के कार्यों में लापरवाही :-** बेहतर बिजली व्यवस्था के कार्यो में लापरवाही व बिहार के माननीय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, सरकार के जीरो टॉलरेंस के नीति के विपरीत भ्रष्टाचार करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का फरमान समय -समय पर जारी किया जाता रहा है। समय-समय पर आमलोगों को जागरूक करने के उद्देश्य लिए सूचना एवं जन संपर्क विभाग की ओर से प्रचार प्रसार के उचित माध्यम से जागरूकता चलाया जाता है। लुभाने और बढ़िया श्लोगनों के जरिये आमलोंगो तक पहुंच के लिए निरंतर कोशिश किया जाता है। इसके मकसद अधिकारियो और कर्मचारियों के यहाँ भी मिटर लगाने और व्यवस्था अनुसार बिजली का सदुपयोग करने का आंतरिक समझ के अनुरूप निर्देश दिये जाते हैं, जिसे कतई भूलना नहीं चाहिए। बिजली की समस्याओं के समाधान और और व्यवस्था की बेहतरी के लिए अधिक से अधिक तकनीक का प्रयोग किया जाये जिससे लोगों का इससे शीघ्र फायदा मिल सके, जिसकी चिंता सरकार को सताती है। इस दिशा में विभागीय अधिकारी ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्योंपालन कैसे करे, जिससे की ऊर्जा विभाग को सक्षम बनाया जा सके, जिसकी भी चिंता बनी रहती है। खासकर जब कोई प्रधान सचिव स्तर अधिकारी का पदस्थापन हेतु आगमन हो तब इस भाषा का व्यवहार अधिक से अधिक किया जाता है।

विजेन्द्र यादव

☞ **फीडर और ट्रांसफार्मर स्तर तक मोनेटरिंग :-** हर बार

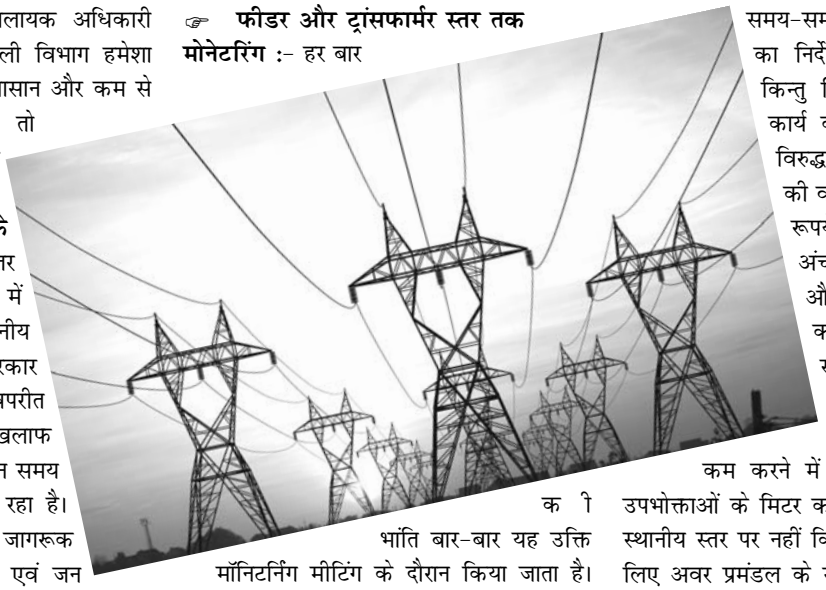

की भांति बार-बार यह उक्ति मॉनिटरिंग मीटिंग के दौरान किया जाता है। प्रत्येक फीडर और ट्रांसफॉर्मर स्तर तक मॉनिटरिंग करने व प्रिवेटिंग मेंटेनेंस समय पर करने के निर्देश देने के साथ बेहतर व्यवस्था के लिए सर्विसलान्स सिस्टम को मजबूत करने के साथ समय-समय पर पेट्रोलिंग भी करने का निर्देश दिया जाता रहा है, किन्तु विभाग में माफिया जैसे कार्य कर रहे अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कदम नही उठाने की वजह से विभाग को करोड़ों रूपये की क्षति हर सिर्फ एक अंचल से कर दिया जाता है और राजस्व प्राप्ति से विभाग का कायाकल्प किया जा सकता है, जो न सिर्फ विभाग बल्कि आम लोगों के बिजली की दर को कम करने में सहायक हो सकते है। उपभोक्ताओं के मिटर की रैंडम/क्रॉस चेकिंग भी स्थानीय स्तर पर नहीं किया जाता, जबकि इसके लिए अवर प्रमंडल के सहायक विधुत अभियंता की महत्ती जिम्मेदारी बनती है, जो अंचल स्तर पर इसे व्यापक रूप देते हुये टास्क फोर्स का गठन भी किया गया है।

☞ **भ्रष्टाचार पर पर्दा डालने में पीछे नहीं**

सेवा में

प्रतिवेदन

श्री मोहन कुमार श्रीवास्तव, लोक सूचना पदाधिकारी, सा0बि0पा0डि0कं0लि0, पटना के पत्रांक 1026 दिनांक 10.05.2022 के द्वारा आवेदक श्री त्रिभूवण प्रसाद यादव के आवेदन आई0डी0 सं0 86 दिनांक 06.05.2022 के द्वारा मॉगी गई सूचना के संबंध में सूचित करना है कि संबंधित मामले पर विद्युत अधीक्षण अभियंता, एस0टी0एफ0 अंचल, आरा द्वारा उनके पत्रांक 08 दिनांक 02.05.2022 के माध्यम से समर्पित निरीक्षण प्रतिवेदन का एस0टी0एफ0 कार्यालय के समीक्षोपरान्त एस0टी0एफ0 कार्यालय के पत्रांक 182 दिनांक 09.05.2022 के द्वारा महाप्रबंधक (राजस्व), सा0बि0पा0डि0कं0लि0, पटना को संबंधित पदाधिकारियों के विरूद्ध यथोचित कार्रवाई करने हेतु समर्पित की जा चुकि है जिसकी छायाप्रति सभी अनुलग्नक सहित श्री मोहन कुमार श्रीवास्तव, लोक सूचना पदाधिकारी, सा0बि0पा0डि0कं0लि0, पटना को अग्रतर कार्रवाई हेतु संलग्न की जा सकती है।

AEE/STF ESE/STF

समीक्षा प्रतिवेदन

भोजपुर जिला, प्रखण्ड– बरहारा अन्तर्गत ग्रा0 पंचायत– पूर्वी बबुरा के वार्ड न0– 10 निवासी, मिल मालिक रंजीत कुमार साह पिता– स्व0 डिग्री साह द्वारा 15 वर्षो से संचालित मिल में चोरी से बिजली कनेक्शन का उपयोग किये जाने से अबतक विभाग को लगभग 36 लाख रूपये का राजस्व नुकसान में संलिप्त अभियंता/कर्मचारी की मिलीभगत से संबंधित प्राप्त शिकायत की निदेशानुसार जॉच कर जॉच प्रतिवेदन समर्पित करने हेतु विद्युत अधीक्षण अभियंता, एस0टी0एफ0 अंचल, आरा से आग्रह किया गया था। पुनः संबंधित मामले में प्रबंध निदेशक, सा0बि0पा0डि0कं0लि0, पटना के डायरी सं0 2534 दिनांक 18.04.2022 एवं डायरी सं0 2594 दिनांक 20.04.2022 से प्राप्त शिकायत के आलोक में इस कार्यालय के पत्रांक 167 एवं पत्रांक 168 दिनांक 28.04.2022 के द्वारा विद्युत अधीक्षण अभियंता, एस0टी0एफ0 अंचल, आरा को स्मारित करते हुए वॉछित प्रतिवेदन अपने मंतव्य के साथ उपलब्ध कराने हेतु अनुरोध किया गया था (छायाप्रति सभी अनुलग्नक सहित संलग्न)। विद्युत अधीक्षण अभियंता, एस0टी0एफ0 अंचल, आरा के द्वारा अपने कर्यालय पत्रांक 8 दिनांक 02.05.2022 के द्वारा निरीक्षण प्रतिवेदन समर्पित किया गया है (छायाप्रति सभी अनुलग्नक सहित संलग्न)।

उक्त समर्पित विस्तृत निरीक्षण प्रतिवेदन में तथ्यों/वास्तुस्थिति का वर्णन करते हुए अन्त में विद्युत अधीक्षण अभिंयता, एस0टी0एफ0 अंचल, आरा के द्वारा यह स्पष्ट मंतव्य दिया गया है कि सहायक विद्युत अभियंता, कोइलवर के द्वारा दिनांक 22.02.2022 को मीटर Installation date एवं दिनांक 13.04.2022 को जॉच से संबंधित दिया गया प्रतिवेदन संदेह उत्पन करता है उपभोक्ता के मीटर का allotment दिनांक 14.12.2021 को होने के बावजूद देरी से मीटर लगाने एवं उपभोक्ता के परिसर में DSI-ID में बकाया रहने के बावजूद Dues Verification को Approve करने की कार्रवाई से शिकायत पत्र में वर्णित बिन्दुओं की संभावना की प्रबल संपुष्टि होती है जो सहायक विद्युत अभियंता, विद्युत आपूर्ति अवर प्रमंडल, कोइलवर के द्वारा कार्य में लापरवाही एवं गैरजिम्मेदाराना रवैये एवं विद्युत चोरी के मामले को रफा–दफा करने को दर्शाता है साथ ही साथ विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत आपूर्ति प्रमंडल, आरा के स्तर से समय–समय पर Monitoring नही करने को दर्शाता है एवं उपर्युक्त कृत के लिए सहायक विद्युत अभियंता, विद्युत अपूर्ति अवर प्रमंडल, कोइलवर एवं मीटर अधिष्ठापित करने वाली कंपनी EDF के विरूद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्रवाई के साथ विद्युत कार्यपालक अभियंता, विद्युत आपूर्ति प्रमंडल, आरा के विरूद्ध भी यथोचित कर्रवाई किया जाना उचित होगा।

अतः प्राप्त शिकायत एवं विद्युत अधीक्षण अभियंता, एस0टी0एफ0 अंचल, आरा द्वारा समर्पित निरीक्षण प्रतिवेदन में दिये गये स्पष्ट मंतव्य के आलोक में निरीक्षण प्रतिवेदन की प्रति सभी अनुलग्नक सहित महाप्रबंधक (राजस्व), सा0बि0पा0डि0कं0लि0, पटना को संबंधित पदाधिकारियों के विरूद्ध यथोचित कारवाई करने हेतु अवगत कराया जा सकता है।

अनुः– तथैव।

AEE/STF ESE/STF

है विभाग :– सरकारी बोल–चाल की भाषा हिंदी में ऊर्जा और अंग्रेजी में एनर्जी/पावर से विख्यात यह विभाग आंतरिक रूप से आज बहुत कमजोर है जो सरकार के द्वारा प्रदत सब्सिडी पर चलने वाला विभाग है, जबकि पावर होते हुये पावर लेस है। इसके पीछे का कारण विभाग में माफिया के रूप में कार्यरत अधिकारी अभियंता है, जो अपने तकनीकी नजीर से झोला भरते हैं, जिससे करोड़ों रूपये का राजस्व क्षति करके विभाग को दीमक की तरह चाटकर कमजोर करते हैं। आबादी के अनुसार भोजपुर जिले के अंचल अंतर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में विधुत कनेक्शन लेने वालो की संख्या मात्र 40 प्रतिशत है, जबकि बिजली के उपयोग करने वालों की संख्या शत–प्रतिशत है, जो 40 प्रतिशत उपभोक्ता की विधुत कनेक्शन की खपत करने वालों में से बीस प्रतिशत घरों में बिजली की हेवी ड्यूटी ली जाती है किन्तु इसके खपत के अनुसार मीटर रीडिंग दस प्रतिशत है। खेत –खलिहान में मोटर पम्प का कोई

साउथ बिहार पावर डिस्ट्रीब्यूशन कम्पनी लिमिटेड
(निबंधित कार्यालय : विद्युत भवन, बेली रोड, पटना)
(स्पेशल टास्क फोर्स)
CIN No. U40109BR2012SGC018890

पत्रांक 182 / पटना, दिनांक 09-05-2022 /

प्रेषक,
म0 साजिद अली,
मुख्य अभियंता, एस0टी0एफ0

सेवा में,
महाप्रबंधक (राजस्व),
सा0बि0पा0डि0कं0लि0, पटना।

विषयः– भोजपुर जिला, प्रखण्ड– बरहारा अन्तर्गत ग्रा0 पंचायत– पूर्वी बबुरा के वार्ड न0– 10 निवासी, मिल मालिक रंजीत कुमार साह पिता– स्व0 डिग्री साह द्वारा 15 वर्षो से संचालित मिल में चोरी से बिजली कनेक्शन का उपयोग किये जाने से अबतक विभाग को लगभग 36 लाख रूपये का राजस्व नुकसान में संलिप्त अभियंता/कर्मचारी की मिलीभगत से संबंधित प्राप्त शिकायत के संबंध में।

महाशय,

उपरोक्त विषयान्तर्गत मामले में विद्युत अधीक्षण अभियंता, एस0टी0एफ0, अंचल आरा द्वारा उनके पत्रांक 08 दिनांक 02.05.2022 के माध्यम से उपलब्ध कराये गये जॉच प्रतिवेदन के अधार पर मुख्यालय एस0टी0एफ0 द्वारा समर्पित समीक्षा प्रतिवेदन की प्रति सभी अनुलग्नक सहित आपके सूचनार्थ एवं समीक्षा प्रतिवेदन के आलोक में संबंधित पदाधिकारियों के विरूद्ध यथोचित कार्रवाई हेतु संलग्न की जा रही है।

अनुः– तथैव।

विश्वासभाजन,
ह0/–
(म0 साजिद अली)
मुख्य अभियंता, एस0टी0एफ0

ज्ञापांक 182 / पटना, दिनांक 09-05-2022
प्रतिलिपिः– अनुलग्नक सहित प्रबंध निदेशक के विशेष कार्य पदाधिकारी, सा0बि0पा0डि0कं0लि0 पटना को डायरी सं0 2534 दिनांक 18.04.2022 एवं डायरी सं0 2594 दिनांक 20.04.2022 के आलोक में सादर सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्रवाई हेतु प्रेषित।
अनुः– तथैव।

(म0 साजिद अली)
मुख्य अभियंता, एस0टी0एफ0

सही डाटा क्षेत्रीय कार्यलय में मौजूद नही हैं जो कनेक्शन के नाम पर गांव में कुछ मोटर ही है। इसका अर्थ यह नहीं की मोटर नही लगा है या खेतों में पटवन करने के लिए मोटर का उपयोग नही किया जाता। दरअसल इसके राजस्व वसूली भी होती है लेकिन इसके फायदे साहब के नजराने में चला जाता है, जिसकी वसूली के लिए मानव बल/लाईन मैन कार्य करते हैं।

☞ **घरेलू विधुत संबंध के नाम पर कॉमर्शियल उपभोक्ता काटते हैं चांदी :**– आरटीआई के तहत भोजपुर जिले के प्रखंड पूर्वी बबुरा ग्राम पंचायत को एक बेस मॉडल के तौरपर चयनित कर इसकी पड़ताल विद्युत संबंध स्थापित करने वाले तथा विभाग के तरफ से फिल्ड में कार्य कर रहे अभियंता की कार्यशैली को लेकर भौतिक निरीक्षण कर एक अभियान के तहत जानकारी इकट्ठा किया गया, जिसमें कनीय अभियंता, प्रशाखा बरहरा से ऑफिसियल जानकारी दी गई, जिसमें बताया गया की

पूर्वी बबुरा ग्राम पंचायत में कुल घरेलू विद्युत संबंध रखने वालो की संख्या-931 है तथा कॉमर्शियल विधुत संबंध रखने वाले उपभोक्ताओं की कुल संख्या-115 है, जबकि यह सच्चाई कही से मेल नही खाता। उदाहरण के तौर पर इसे समझा जा सकता है। एक हाट-बाजार पर मेन रोड पर पंचायत के अधीनस्थ मार्केट कम से कम बीस है, जहाँ एक पेट्रोल पम्प, ढाबा, मॉल जैसे प्रतिष्ठान हैं। जिसमे छोटे-बड़े दुकान /प्रतिष्ठान के अलावे दवा दुकान, क्लिनिक, हार्डवेयर, होटल आदि हैं। छोटे दुकानदारों की कुल संख्या लगभग 500 के पास है। किसानों के खेत में लगे मोटर पम्प की संख्या सिर्फ एक पंचायत में 100 से अधिक है जो किराये पर दूसरे किसानों को विधुत कनेक्शन से पानी की आपूर्ति करते हैं। पंचायत में 14 से 16 वार्ड हैं, जो नल-जल के कनेक्शन के हिसाब से लिए डाटा के अनुसार एक वार्ड में कम से कम डेढ़ सौ घर हैं, जिसकी संख्या-2400 है। जिसमे भी विधुत संबंध रखने वाले लोगों से जो राजस्व वसूली की जाती है, वह सिर्फ खानापूर्ति मात्र है। यानी अंदर की सच्चाई कुछ और है। ऐसा नहीं है की उपभोक्ता कुछ देने से वंचित है? फिल्ड में मानव बल/लाईन मैंन के साथ कनीय अभियंता की गिद्धदृष्टि लगी रहती है, जो हर महीने, प्रति दिन अपने टारगेट के अनुरूप वसूली करते हैं, जिसका शेयर ऊपर तक जाता है।

त्रिभवन प्रसाद यादव

☞ **बीस वर्षो से चोरी से मिल/प्रतिष्ठान चला रहे मानव बल ने विभाग को अब तक लगाया 72 लाख रूपये का चुना :-** पूर्वी बबुरा के कोल्हरामपुर गांव में विद्युत प्रशाखा बरहरा के अंतर्गत मानव बल के रूप में कार्य कर रहे लाईन मैन रंजीत कुमार साह के द्वारा दो-दो आटा चक्की, दाल मिल, तेल का मशीन रखकर कर लगभग बीस वर्षो से मिल का संचालन किया जा रहा है, जो अपने प्रतिष्ठान में बिना मीटर कनेक्शन लिए सरकार एवं विभाग को लगभग 34 लाख रूपये की अनुमानित राजस्व क्षति की जा चूका है। वही इसके चचेरे भाई के द्वारा भी तब से मिल का संचालन किया जा रहा है, जिसके द्वारा भी इतने ही राशि की क्षति की गई, यानी एक परिवार से 72 लाख रूपये के राजस्व नुकसान किया गया।

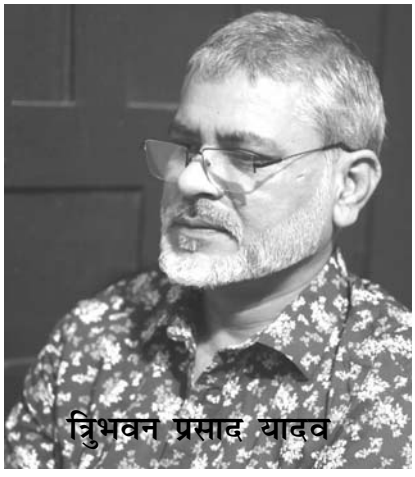

☞ **कम्पलेन करने के पश्चात् चोरी विधुत मिटर लगा कर आरोपित को बचा लिया गया :-** उक्त मामले में अप्रैल 2022 को स्थानीय नागरिकों के द्वारा कार्यालय एवं विभाग से चोरी के संबंध की जानकारी दी गई, किन्तु सहायक अभियंता, विधुत अवर प्रमंडल, कोइलवर की भूमिका से विभाग को 72 लाख रूपये की अनुमानित क्षति करने वाले रंजीत साह को इसलिए बचाने के पीछे कई कारण है। मानव बल के रूप में कार्यरत लाईन मैन रंजीत साह स्वयं इस क्षेत्र में कार्य को देखता है, जिन पर कम्पलेन किया गया था। उसे अधिकारी अभियंता द्वारा एक दिन रात में मिटर भेजकर रेड करने से पहले प्रतिष्ठान में लगा दिया गया। जिस बात की पुष्टि स्थानीय लोगों के अलावे मिटर लगाने वाले लाईन मैन ने खुद स्वीकार किया है, जिसमे कनीय अभियंता के देखरेख में ऐसा किया गया। बावजूद खानापूर्ति करने आये सहायक अभियंता, विधुत अवर प्रमंडल कोइलवर के साथ बनाई गई जाँच टीम ने पूरी कहानी बनाकर आरोपित को बचा लिया, जिसके विरुद्ध विभाग को कार्रवाई के लिए लिखा गया है किन्तु आजतक सरकारी फाइल बंद है।

☞ **लगाए गए आरोप की जाँच में एसटीएफ अंचल आरा ने मुहर लगा दी :-** मामले की गड़बड़ी और लापरवाही को देखते हुये विभागीय स्तर से अंचल कार्यालय विधुत एसटीएएफ से जाँच करवाई गई, जिसमें आरोप सत्य पाया गया। फिर भी आजतक उन सभी आरोपित अभियंता के विरुद्ध किसी भी प्रकार की कार्रवाई नही की गई सिर्फ आईवास के लिए सहायक अभियंता कुंदन कुमार का वेतनमान रोक दिया गया है जबकि इस कार्य में मॉनेटरिंग के कार्य में लापरवाही करने वाले कार्यपालक अभियंता पर किसी भी प्रकार की कार्रवाई नही की गई है, कनीय अभियंता को दूसरे जगह पदस्थापित कर छोड़ दिया गया। वही आरोपित मानव बल को फिर से कार्य पर रख लिया गया है।

☞ **अब माननीय न्यायालय से अधियाचना को पास लेकर जाने की कि जा रही है तैयारी :-**आरटीआई एक्टिविस्ट त्रिभुवन प्रसाद यादव ने कहा की यह हाल बिजली विभाग में कार्य कर रहे विधुत अभियंता/अधिकारी के हैं, जिसका असर राजस्व वसूली पर पड़ता है, जिससे बेहतर सुविधा और सेवा देने में विधुत विभाग असहज है। सब्सिडी के आश्रय पर आखिर दूसरे के पैर से कब तक चलना पड़ेगा। जिस विभाग में माफिया की भूमिका में खुद ही अभियंता संलिप्त है।●

-: कार्यालय :-

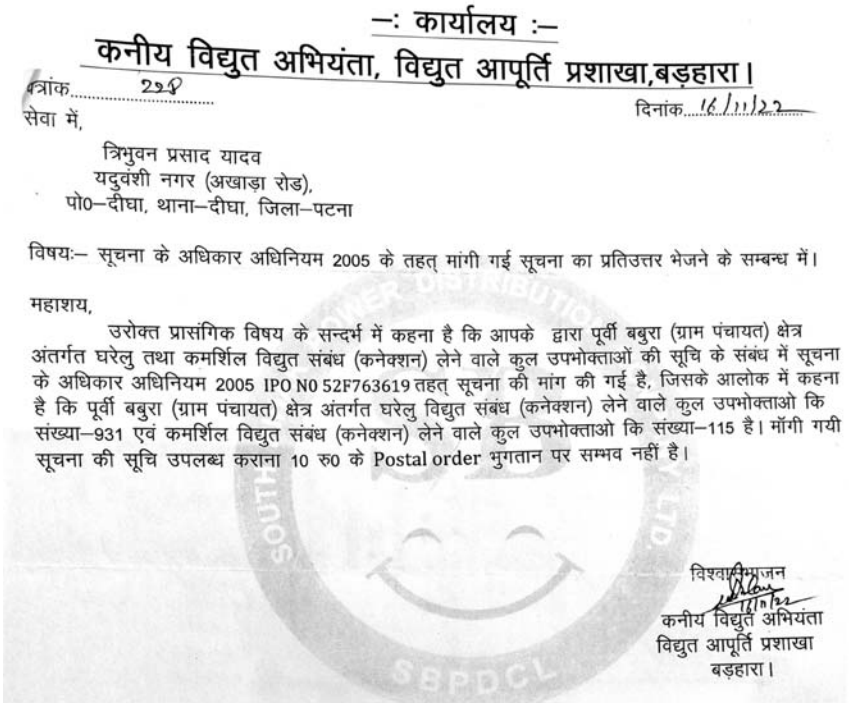

कनीय विद्युत अभियंता, विद्युत आपूर्ति प्रशाखा,बड़हारा।

पत्रांक 228

दिनांक 16/11/22

सेवा में,

त्रिभुवन प्रसाद यादव
यदुवंशी नगर (अखाड़ा रोड),
पो0-दीघा, थाना-दीघा, जिला-पटना

विषयः- सूचना के अधिकार अधिनियम 2005 के तहत् मांगी गई सूचना का प्रतिउत्तर भेजने के सम्बन्ध में।

महाशय,

उरोक्त प्रासंगिक विषय के सन्दर्भ में कहना है कि आपके द्वारा पूर्वी बबुरा (ग्राम पंचायत) क्षेत्र अंतर्गत घरेलु तथा कमर्शिल विद्युत संबंध (कनेक्शन) लेने वाले कुल उपभोक्ताओं की सूचि के संबंध में सूचना के अधिकार अधिनियम 2005 IPO N0 52F763619 तहत् सूचना की मांग की गई है, जिसके आलोक में कहना है कि पूर्वी बबुरा (ग्राम पंचायत) क्षेत्र अंतर्गत घरेलु विद्युत संबंध (कनेक्शन) लेने वाले कुल उपभोक्ताओ कि संख्या-931 एवं कमर्शिल विद्युत संबंध (कनेक्शन) लेने वाले कुल उपभोक्ताओ कि संख्या-115 है। मॉगी गयी सूचना की सूचि उपलब्ध कराना 10 रु0 के Postal order भुगतान पर सम्भव नहीं है।

विश्वासभाजन
कनीय विद्युत अभियंता
विद्युत आपूर्ति प्रशाखा
बड़हारा।

विशेष कार्य पदाधिकारी रेणु के कारण
रामेश्वरी आयुर्वेद कॉलेज दरभंगा का भविष्य गर्त में

● शशि रंजन सिंह/राजीव शुक्ला

दरभंगा महाराज ने कई एकड़ जमीन दरभंगा में आयुर्वेद चिकित्सा के स्थापना के लिए दिया था। राजकीय महारानी रामेश्वरी भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान मोहनपुर दरभंगा का शुरुआती काल स्वर्णिम रहा, लेकिन जमीन माफिया और सरकार की उदासीनता के कारण यह संस्थान बंद हो गया। बिहार सरकार ने पहल कर इस चिकित्सा संस्थान को जिंदा करने की कोशिश की। इसके भवन आदि की निविदा जारी की गई। निविदा आद्या कंस्ट्रक्शन को दिया गया, लेकिन राशि की अनुपलब्धता और डिजाइन फाइनल नहीं होने के कारण इसे अभी तक कार्य शुरू नहीं किया जा सका है। राजकीय महारानी रामेश्वरी भारतीय चिकित्सा विज्ञान संस्थान मोहनपुर दरभंगा के पूर्व प्राचार्य दिनेश्वर प्रसाद ने इसे पुनर्जीवित करने का भरपूर प्रयास किया, लेकिन स्वास्थ्य विभाग के विशेष कार्य पदाधिकारी रेणु देवी ने उलटे प्राचार्य पर स्पष्टीकरण कर मामले को ठंडे बस्ते में डलवा दिया और समय पर शिक्षकों की नियुक्ति नहीं होने के कारण भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग का निरीक्षण नहीं हो पाया, जिसके कारण अभी तक कॉलेज चालू नहीं हो पाया है। रेणु देवी ने दरभंगा आयुर्वेद कॉलेज का भविष्य गर्त में डालने के साजिश के तहत शरीर क्रिया विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉक्टर शंभू शरण जिनकी सेवा सम्पुष्टि भी नहीं हुई है, उन्हें जबरन प्रभारी प्राचार्य बना दिया। बाद में अधिसूचना संख्या-277 दिनांक-10/03/2023 से डॉक्टर शंभू शरण का प्रतिनियुक्ति प्रभारी प्राचार्य के रूप में कर दिया गया है। पुनः रेणु देवी ने अधिसूचना संख्या-611, दिनांक-27/06/23 से शंभू शरण का पदस्थापन आयुर्वेद कॉलेज दरभंगा में कर दिया। यहां गौर करने वाली बात है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग के नियमों के अनुसार सहायक प्राध्यापक आयुर्वेद कॉलेज का प्राचार्य नहीं हो सकता है। दूसरा कि अवर सचिव से कमत्तर अधिकारी अधिसूचना जारी नहीं कर सकता है। रेणु देवी ने जान बूझकर सहायक प्राध्यापक को प्रभारी प्राचार्य नियुक्त किया, जिससे दरभंगा आयुर्वेद कॉलेज को कभी भी सम्बधता नहीं मिल पाये। रेणु देवी ने जब अपना प्यादा प्रभारी प्राचार्य नियुक्त ही कर दिया तो प्राचार्य को लूट की छूट मिल गई और स्वास्थ्य विभाग के आदेश के विपरीत 2 से 4 लाख रुपया लेकर आउटसोर्सिंग पर स्टाफ नर्स परिचारक और कई प्रकार के कर्मचारियों की नियुक्ति प्रभारी प्राचार्य के द्वारा शुरू कर दी गयी और उसके कमाई का हिस्सा रेणु देवी को बड़े ईमानदारी के साथ पहुंचाये जाने लगा। अब दरभंगा में आयुर्वेद कॉलेज बने या ना बने, उससे रेणु देवी को क्या जाता है! रेणु देवी को तो अपने जेब भरने से मतलब है और सरकार और स्वास्थ्य विभाग जब चिर निद्रा से जागेगी, तब उसे सच्चाई का पता चलेगा। बताते चले कि राजकीय आयुर्वैदिक कॉलेज अस्पताल में उपाधीक्षक की नियुक्ति विगत 6 माह से हो चुकी है फिर भी अस्पताल से संबंधित कार्यो की संचिकाएं उनके द्वारा संज्ञान में नहीं लाया दिया जा रहा है एवं अस्पताल से संबंधित कार्यो का निष्पादन स्वयं प्रभारी प्राचार्य अपने स्तर से निष्पादन कर रहे हैं। अभी स्वास्थ्य मंत्री राजनीतिक गतिविधियों में व्यस्त हैं।●

● विकास कुमार/संतोष कुमार मिश्रा

लोकसभा 2024 का चुनावों की घोषणा होने ही वाला है। राजनीति पाटियां तथा नेता चुनावी मैसम में प्रवेश कर गये है। इसलिए क्षेत्रीय पाटियां के साथ-साथ राष्ट्रीय पाटियां भी अपने-अपने तरकश सजाने लगी है। महापर्व की धमक आप महसुस कर रहे है। चुनावी समर में कौन होंगें उम्मीदवार यह लोंगों में चाय की दुकानों और सार्वजनिक स्थलों पर चर्चा का विषय हो गया है। इस बार जहानाबाद से किसकी भाग्य जगती है यह तो आने वाला कुछ महिने में साफ हो जायेगा। एनडीए की तरह इंडिया गठबंधन में भी सीटों का बंटवारा बहुत मुश्किल है। एनडीए गठबंधन और इंडिया गठबंधन तो आमने-सामने होंगे ही इस महासागर में। लेकिन इन सब के बीच अब बहस का विषय यह भी बन गया है कि जहानाबाद के वर्तमान सांसद चंदेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी है। जो जदयू से वर्तमान सांसद है। लेकिन इस बार इन्हें जहानाबाद से टिकट मिलना संभव नही लग रहा है। क्योकि जदयू तथा आरजेडी में जहानाबद सीट को लकर पेच फस सकता है। तथा सांसद चंदेश्वर प्रसाद चंद्रवंशी जहानाबाद में ऐसा कोई काम नही किये है, जिसे वे चुनावी मैदान में लेकर जा सकते है। क्योकि जहानाबाद क्षेत्र की जनता में इनके प्रति रोष ज्यादा देखा जा रहा है। सांसद महोदय के कार्य से जनता में अविश्वास हो गया है। क्योकि जहानाबाद लोकसभा क्षेत्र में विकास कोसो दूर है। किसी भी क्षेत्र में सांसद महोदय जनता का दिल जीत नही पाये। सांसद महोदय कही भी दावा से नही कहने की स्थिति में है कि मेरे कारण इस क्षेत्र में कार्य हुआ। लेकिन जब जनता हिसाब पूछ रही है तब एमपी साहब कुछ कहने की स्थिति में दिखाई नही दे रहे है। जनता का कहना है कि ऐसे तो जहानाबाद संसदीय क्षेत्र में मुलभुत बहुत सारी समस्या है जिस पे अब बात करने से भी कोई फायदा नही होने बाला है। जदयू का भले ही सिटींग सीट होने की बात कही जा रही है। जिसके कारण जदयू से कई नाम सामने आया है। घोसी के पूर्व विधायक राहुल शर्मा तथा अरिस्टो फार्मास्यूटिकल प्राइवेट लिमिटेड के डायरेक्टर उमेश शर्मा उर्फ भोला बाबू का भी नाम चर्चा में है। जहानाबाद में मुख्य मुकाबला दो जातियो के बीच होता रहा है, भूमिहार और यादव। जहानाबाद भूमिहार बहुल सीट माना जाता है। जिसका असर पूरे जहानाबाद लोकसभा पर पड़ता है और राजनीतिक दल भी यहॉ से भूमिहार उम्मीदवार को ही प्रमुखता दे रहे है। क्षेत्र में इन दिनों चर्चा बहुत जोर शोर से है कि जहानाबाद सीट इंडिया गठबंधन से राजद के खाते में चला गया और यहॉ से पूर्व सांसद तथा वर्तामान मंत्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव का नाम सामने आ रहा है।

राहुल शर्मा

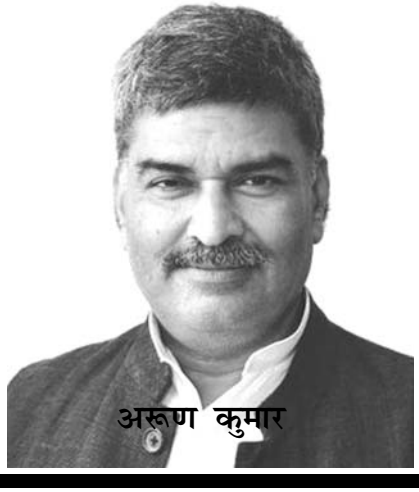
अरूण कुमार

चितरंजन कुमार

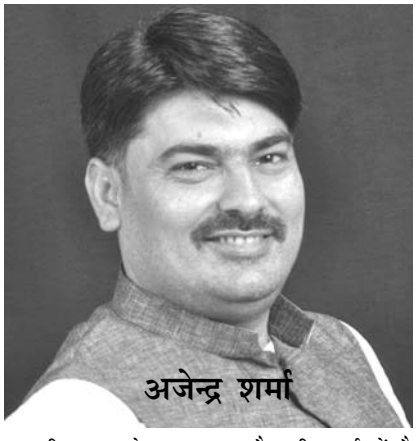
अजेन्द्र शर्मा

इन्दु कश्यप

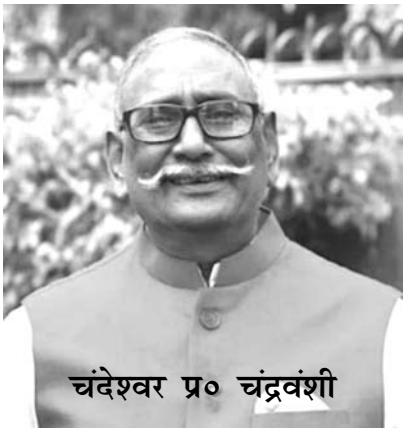
चंदेश्वर प्र० चंद्रवंशी

जबकी राजद से एक नाम और भी चर्चा में है आईपीएस अधिकारी करूणा सागर का, जनता का मानना है कि राजद में एक भूमिहार उम्मीदवार के रूप में यह सीट इन्हें मिल सकता है। वही कुछ लोगों का मानना है कि अगर जहानाबाद से राजद को मिलता है तो राजद से पूर्व सांसद तथा वर्तामान मंत्री सुरेन्द्र प्रसाद यादव का नाम लगभग तय है। जबकी भाकपा, माले भी जहानाबाद से चुनाव लड़ना चाहती है। भाकपा माले के नेता जहानाबाद सीट के लिए दावा कर रहे है। इंडिया गठबंधन के अंदर एक खींचतान हो सकती है।

राज्य में 'इंडिया' की तरह ही 'एनडीए' के सामने छोटे दलों की महत्वकांक्षा पूरी करने की चुनौती होगी। 'एनडीए में सीटों का बंटवारा बहुत मुश्किल हो सकता है। बीजेपी के लिए यह एक बड़ी उलझन हो जाएगी कि वो अपने ही सहयोगियों के बीच तालमेल कैसे बैठाए। एनडीए गठबंधन से भी जहानाबाद लोकसभा सीट के लिए कई उम्मीदबार हैं। एनडीए में भाजपा कोटे से अरवल के पूर्व विधायक चितरंजन कुमार जहानाबाद लोकसभा सीट से लड़ना चाहते हैं। पूर्व विधायक चितरंजन कुमार अरवल विधानसभा क्षेत्र का भ्रमण करते रहते है तथा जनता के सुख-दु:ख में शामिल होते है। वे नि:स्वार्थ भाव से जनता की सेवा करते आये है। चितरंजन कुमार अरवल में कर्मशील एवं ऊर्जावान नेता के रूप में जाने जाते है। उनकी युवा वर्ग ही नही, हर जाति हर वर्ग में उनकी एक अच्छी पकड़ हैं। अपने क्षेत्र में ईमानदारी से काम करने तथा सुख-दु:ख में हमेंशा साथ खड़ा रहने की वजह से ही चितरंजन कुमार सभी का हमदर्द बने हुए है। ये भी जहानाबाद से लोकसभा की तैयारी जोड़ शोर से कर रहे है। तो वही बीजेपी नेता अजेन्द्र शर्मा भी जहानाबाद लोकसभा सीट से चुनाव लड़ना चाहते है। अजेन्द्र शर्मा जहानाबाद में युवा नेता के रूप में जाने जाते है। ये जहानाबाद में युवा वर्ग को जगाने तथा उस क्षेत्र के विकास के लिए लगातार कार्य कर रहे है। शांत स्वभाव, मृदुभाषी एवं अपने क्षेत्र के विकास के लिए तत्पर रहने के कारण अजेन्द्र शर्मा बहुत कम दिनों में जनता के बीच अमिट छाप छोड़ी है। ये सबों के सुख-दु:ख में हमेशा खड़े रहते है, तथा जनता के उत्थान एवं कल्याण हेतु कार्य करते है। इन्हें सजग, सबल एवं सक्रिय नेता के रूप में जाने जाते हैं। बीजेपी नेता अजेन्द्र शर्मा का कहना है कि देखिए जहॉ तक बात जहानाबाद की है तो यहॉ से हर हाल में बीजेपी को अपना उम्मिदवार उतारना चाहीए। जहानाबाद की जनता और पार्टी के कार्यकर्ता चाहते है कि यहॉ से बीजेपी अपना उम्मीदवार खड़ा करे। अगर बीजेपी अपना उम्मीदावार खड़ा करती है तो हर हाल में वह उम्मीदवार जीतेगा। साथ ही साथ जहानाबाद के कार्यकर्ता का मनोबल भी बढ़ेगा। इसलिए जहानाबाद लोकसभा सिट बीजेपी के खाते में होना चाहीए। यहॉ से बीजेपी के उम्मीदवार ही अपना किस्मत आजमाये।

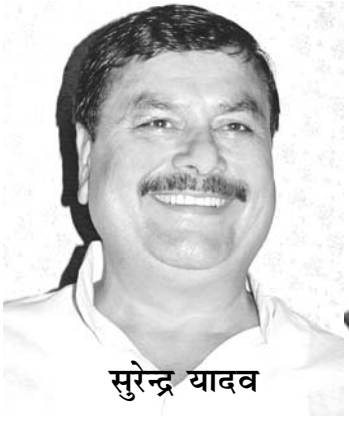
सुरेन्द्र यादव

करूणा सागर

वही लोजपा पार्टी (रामविलास) के कोटे से जहानाबाद के पूर्व सांसद डॉ. अरूण कुमार चुनावी तैयारी में जुटे हुए है। अरूण कुमार चिराग पासवान के लिए अभी चाणक्य की भूमिका में है और माना जा रहा है कि लोकसभा चुनाव में चिराग पासवान एनडीए गठबंधन का हिस्सा होंगे। डॉ. अरूण कुमार के सारे कार्यकर्ता समर्थक जहानाबाद में महौल बनाने लगे है। अरूण कुमार का सारा तैयारीयॉ जोड़-शोर से चल रहा है। हर क्षेत्र का भ्रमण शुरू कर दिये है। डॉ. अरूण कुमार अपने कार्यकर्ता तथा समर्थको के साथ जहानाबाद के हर गती विध ी पर नजर रख रहे है। और उनके समर्थक है वे अपनी दावेदारी बता रहे है। हालांकि चिराग पासवान के करीबी महिला नेत्री सह जहानाबाद विधानसभा के पूर्व उम्मीदवार डॉ. इंदु कश्यप भी लोकसभा की तैयारी में जुटी हुई है। विधानसभा चुनाव के बाद से ही वे अपने क्षेत्र के समस्या को सुलझाने की कोशिश करती रही है। और जनता के बीच उनका आना जाना लगा रहा है तथा जनता के सुख-दु:ख में हमेशा साथ रही है। परिवार से जुड़े लोगो के लगातार संपर्क में रहे है। इलाके में परिवार हो, जनता हो या फिर नव युवक हो सभी से उनका संवाद का अलग अंदाज रहता है। जहानाबाद की बुजुर्ग हों, या आम ग्रामीण, सभी में वे सर्वमान नेत्री के रूप में स्थापित रही है। डॉ. इंदु कश्यप को उनके छवि को देखते हुऐ टिकट मिलने की संभावना दिख रही है। हाल ही में लोकसभा और राज्यसभा दोनों ने महिला आरक्षण विधेयक 2023 अथवा नारी शक्ति वंदन अधिनियम पारित कर दिया। जिसका लाभ डॉ इंदु कश्यप को मिल सकता है।

जहानाबाद लोकसभा चुनाव हर बार की तरह इस बार भी दिलचस्प दिख रहा है। आने वाले छह-सात महीने कुछ ज्यादा महत्वपूर्ण है। इस पूरे समय में हमें सचेत और तैयार रहना होगा। कुछ जन-प्रतिनिधियों के विरूद्ध समाज में बड़ी नाराजगी है। अगर कोई नेता अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता है, तो चुनाव में हराकर दंडित करने का रास्ता लोकतंत्र में उपलब्ध है, उसे जनता को आजमाना चाहिए।●

नैतिकता का पतन शैक्षिक, सामाजिक और राजनीतिक विघटन का मूल कारण

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

फतुहा चौराहा अवस्थित वाणी पुस्तकालय में नैतिकता का लोप और सामाजिक परिवेश में अपराधी करण की राजनीति के संदर्भ में विशेष परीचर्चा का आयोजन किया गया। जिसका अध्यक्षता होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल एवं संचालन पत्रकार अमरेश कुमार सिंह ने किया। परिचर्चा में पधारे विशिष्ट अतिथि वाणी पुस्तकालय के अध्यक्ष सह पत्रकार अरुण कुमार पांडेय, कोषाध्यक्ष सह राजद नगर अध्यक्ष दयानंद प्रसाद सिंह, पुस्तकाध्यक्ष मोती सिंह ने कहा कि वर्तमान परिपेक्ष में हमारे जीवन और समाज से नैतिकता का बहुत बड़ा हरास हुआ है। जिसके कारण शैक्षिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत गिरावट देखा जा रहा है। आज से तीन,चार दशक पहले संयुक्त परिवार में लोग निवास करते थे। जो वर्तमान समय में एकल परिवार में सिमट कर रह गया है। इसमें भी निज स्वार्थ, लोभ, इर्षा, विद्वेष, षड्यंत्र का समावेश है। जिसके कारण वर्तमान समय में लोगों के जीवन में कई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो रही है। इस संदर्भ में पत्रकार अरुण कुमार पांडे ने समाज और देश के वर्तमान परिस्थितियों में नैतिकता का लोप होने से चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इसका मानवता पर बहुत दूरगामी परिणाम देखा जा सकता है। राजनीति में अपराधीकरण का प्रवेश होना नैतिकता के पतन को दर्शाता है। जिसका मुख्य कारण हमारे शैक्षिक वातावरण को दूषित होना है। पश्चिम की सभ्यता से प्रभावित अपने आचरण में मां, पिता के स्थान पर डैडी,, गुड मॉर्निंग जैसे शब्दों का उपयोग ने हमारे देश के सनातन परंपरा को, जिसमें मानवीय मूल्यों का अहमियत और जुड़ाव था। उससे लोगों को दूर किया जा रहा है। डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि वर्तमान समय में लोग कम से कम समय में समाज सेवी और नेता बनना चाहते हैं। शिक्षक बनना चाहते हैं, जो हमारे समाज और देश के हित में नहीं है। बिना ट्रेनिंग के शिक्षक बहाल करना यहीं से नैतिकता का पतन का शुरुआत हुआ है। आज लोगों को सामाजिकता से दूर होना, नैतिक मूल्यों के पतन का पहचान है। दयानंद प्रसाद सिंह ने कहा कि हम लोगों से अच्छे की अपेक्षा करते हैं, पर जब तक अपने जीवन में खुद अच्छा नहीं बनते, लोगों के लिए अच्छा नहीं करते, तब तक अच्छाई कहां से मिलेगा। नैतिकता के पतन सिर्फ समाज सेवी, राजनेताओं में ही नहीं, बल्कि हम नीचे स्तर के लोगों में भी हुआ है। जो छोटे-छोटे लालच में फंसकर सामाजिक और आपराधिक लोगों को अपना कीमती वोट से मालामाल कर देते हैं। मंच संचालन करते हुए पत्रकार अमरेश कुमार सिंह ने कहा कि जिस तरह से नमक का महत्व हमारे व्यंजन में होता है , वह व्यंजन को स्वादिष्ट बना देता है। इसी प्रकार नैतिक चरित्र हमारे जीवन और सामाजिक वातावरण को स्वच्छ और सामान्ययवादी बना देता है। नैतिकता के अभाव में ज्ञान का कोई महत्व नहीं रह जाता है। आगे कहा कि जिस तरह से अपने समाज के अंदर नैतिक और चारित्रिक गुणों का ह्लास हुआ है। उसका कहीं न कहीं संबंध, हमारे रहन-सहन, खान-पान और शैक्षिक तौर तरीके से जुड़ा हुआ है। हमारे देश की दार्शनिक और संत महात्माओं का ज्ञान श्रेष्ठ है। जिसमें मानवतावादी नैतिक और चारित्रिक मूल्यों का समावेश भरा पड़ा है। इसके अवलोकन मात्र से वर्तमान समस्याओं से निजात पाया जा सकता है। विदित हो कि इस दौरान उपस्थित छात्रा प्रियंका कुमारी सहीत कई अन्य लोगो ने भी अपने विचारों से लोगों को प्रेरित किया।●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

साहित्य के अध्ययन की परंपरा कभी खत्म नहीं होगी : डॉक्टर साहिल

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

फतुहा की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्था जन साहित्य परिषद के तत्वाधान में फतुहा के मकसूदपुर स्थित संस्कार शिक्षा निकेतन के प्रांगण में लुधियाना (पंजाब)से पधारे हिंदी एवं पंजाबी के सुप्रसिद्ध कवि, कथाकार एवं सृज्यमान के संपादक डॉक्टर (प्रो 0)राजेंद्र सिंह साहिल के सम्मान में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन साहित्य प्रेमी डीएसपी सियाराम ने दीप प्रज्वलित कर किया। समारोह के वर्तमान समय में साहित्य की दशा और दिशा विषय पर चर्चा हुई। चर्चा में भाग लेते हुए ख्याति लब्ध कथाकार एवं रंगकर्मी डॉक्टर किशोर सिन्हा ने कहा कि साहित्य आज अनेक माध्यमों से आम जन तक पहुंच रही है। प्रत्येक स्थिति में साहित्य के साथ हमारा संबंध बना रहेगा। 'बिहार की गौरव गाथा' के लेखक डॉ शशि भूषण सिंह ने तकनीक को मुद्रित साहित्य का सहयोगी बताया तथा उन्होंने कहा कि मुद्रित साहित्य की उपादेयता कभी खत्म नहीं होगी। प्रसिद्ध कथा शिल्पी अशोक प्रजापति ने ऑनलाइन अध्ययन अध्यापन को नुकसान दे बताते हुए कहा कि इससे बच्चों का भविष्य खराब हो रहा है। यही कारण है कि कई देशों में ऑनलाइन अध्ययन को प्रतिबंधित कर दिया गया है। डॉ राजेंद्र साहिल ने विस्तार से इस बात की चर्चा करते हुए कहा कि साहित्य की परंपरा कभी खत्म नहीं होगी क्योंकि यह मनुष्य की प्रवृत्ति से जुड़ा है। इतना जरूर है कि इन दोनों पढ़ने की अपेक्षा देखने और सुनने का काम ज्यादा हो रहा है। सिद्धेश्वर ने सोशल मीडिया के माध्यम से साहित्य के प्रसार को महत्वपूर्ण बताया। इस अवसर पर डीएसपी सियाराम यादव ने डॉक्टर राजेंद्र साहिल को जन साहित्य परिषद की ओर से स्मृति चिन्ह अंग वस्त्र एवं सम्मान पत्र प्रदान किया। तत्पश्चात सियाराम यादव डीएसपी अशोक प्रजापति आदि ने डॉक्टर किशोर सिंह लिखित उपन्यास 'ताली' एवं उनके संपादन में प्रकाशित साक्षात्कार संकलन 'उनकी बातें' का लोकार्पण किया। समारोह के अंतिम सत्र में आचार्य विजय गुंजन, शशि भूषण सिंह, राम रक्षा मिश्र, कुमए कांत आदि गीतकारों ने काव्य पाठ किया। मंच संचालन जाने- माने लघु कथाकार लेखक रामजतन यादव ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन अनिता कुमारी ने।●

नीतीश का प्रधानमंत्री बनने का सपना
दूसरे राज्यों को नौकरी बांटने से होंगे पूरे

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

नीतीश कुमार के प्रधानमंत्री बनने का सपना का राज धीरे-धीरे खुल रहा है। दूसरे राज्यों को नौकरी करने के पीछे छिपा हुआ राज था कि दूसरे राज्यों के युवक-युवतीं को नौकरी बांटकर राष्ट्रीय पार्टी बन जाएंगे तथा उन राज्यों में भी वोट मिलेगा? बिहार के बेरोजगार दूसरे राज्यों में बोझा ढोएगा या ठेला चलाएगा और दूसरे राज्यों के युवा, युवतियां बिहार में आकर पढ़ाएंगे? बताया जाता है कि केरल, कर्नाटक, गुजरात, महाराष्ट्र, आसाम, पंजाब, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, झारखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिम, बंगाल के लोगों को परीक्षा में सफलता मिली है। बताया जाता है ओमन और कतर से भी लोग इस परीक्षा में शामिल हुए हैं। यही नहीं सी और सैनिक बल रेलवे बैंक और बड़ी-बड़ी कंपनियों में थी नौकरी छोड़कर भी लोग शिक्षक बने है।

यह जानकर आश्चर्य होगी कि वेतन का 50% भारत सरकार देती है। यदि 1 लाख 20 हजार शिक्षकों की बहाली हुई है तो ऐसी स्थिति में लगभग 60 हजार शिक्षकों का वेतन के लिए बिहार सरकार भारत सरकार से माग करेगी। नीतीश कुमार कभी चर्चा तक नहीं करते की शिक्षकों की बहाली का श्रेय भारत सरकार का भी है। भारत सरकार को आधा वेतन के लिए पैसा देना बाध्यता नहीं है। यदि भारत सरकार पैसा देना बंद कर देगी तो नीतीश कुमार पैसा कहां से लाएंगे। नीतीश कुमार नई-नई योजनाएं की कतार सजा रहे हैं। पैसा कहां से लाएंगे।

बिहार सरकार की मांने तो कर्ज लेकर घी पीने वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। बताया जाता है कि हर साल बिहार पर कर्ज का बोझ बढ़ते जा रहा है। वहीं इसका असर प्रति व्यक्ति कर्ज पर दिखाई दे रहा है। वर्ष 2019-20 में बिहार पर कर्ज का था एक लाख 93 हजार 382 करोड़ रुपए,जो 2020-21 में बढ़कर 2 लाख 27 हजार 196 करोड़ रुपए, वर्ष 2020-21 -22 में बढ़कर 27 हजार 510 करोड़ रुपए, वर्ष 2022- 23 में बढ़कर 2 लाख 83 हजार 596 करोड़ रुपए, 2023- 24 में बढ़कर 3 लाख 24 हजार 762 करोड़ होने की संभावना है। आज प्रति व्यक्ति 16 हजार रुपए कर्ज है। जन्म लेते ही कर्जदार रहता है। यह कर्ज सरकार लेकर अपना वेतन बढ़कर मौज मस्ती करती है तथा सरकारी कर्मचारी के वेतन-भत्ता बढ़ाती रहती है। कर्ज कैसे घटेगा इस पर चर्चा के कौन कहे कर्ज पर कर्ज बढ़ते जा रहा है।●

एक्सीडेंट में भारत नंबर वन : डॉ. लक्ष्मीनारायण सिंह

● त्रिलोकी नाथ प्रसाद

एक्सीडेंट में भारत वन है। यह मैं नहीं बल्कि भारत के ट्रांसपोर्ट मंत्री नितिन गडकरी ने कहा है। उन्होंने कहा कि एक्सीडेंट में हम नंबर वन हैं। उन्होंने कहा कि दुनिया में ऐसे भी देश हैं जहां जीरो एक्सीडेंट होता है। जब मैं विदेश कॉन्फ्रेंस में जाता हूं मुझे बड़ा दुख होता है। मैं उसे देश से आया हूं जहां सबसे ज्यादा एक्सीडेंट होता है, जहां का मैं ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर हूं यह बहुत ही गंभीर समस्या है। सड़क हादसों में कमी आने में बड़ों से उम्मीद कम ही रही है, लेकिन बच्चों से यह उम्मीद जरूर की जा सकती है। अब जागरूक होंगे। मेरा शिक्षकों से आवाहन है कि वे बच्चों को सड़क सुरक्षा के प्रशिक्षित करने में सहयोग करें। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने एक स्कूल के कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम में उन्होंने अपने मन की बात रखी की रोड सेफ्टी बड़ी समस्या है। प्रतिवर्ष 5 लाख एक्सीडेंट होते हैं डेढ़ लाख लोगों की मौत हो जाती है। डेढ़ लाख लोगों के हाथ -पैर टूट जाते हैं। इससे जीडीपी का 3% का नुकसान होता हैः इनमें मरने वाले युवकों की 18

से 34 वर्ष के बीच होती है। कोई इंजीनियर होता है ,तो कोई डॉक्टर होता है इतने लोग किसी लड़ाई में भी नहीं मरते? उन्होंने कहा कि इन एक्सीडेंट को कम करने के लिए हमने रोड इंजीनियरिंग और ऑटोमोबाइल में काफी बदलाव किया, हमने इनफॉरमेशन में भी बदलाव की है और जुर्माना भी बढ़ाया लेकिन महत्वपूर्ण है मानव स्वभाव जब तक मन सेट नहीं बदल सकते तब तक एक्सीडेंट रुक नहीं सकता। माइंड सेट में यह लाना होगा की रेट लाइट पर पार नहीं करूंगा वाहन चलाते समय मोबाइल पर बात नहीं करूंगा ,टु व्हीलर पर हेलमेट जरूरी लगाऊंगा। बड़ी गाड़ी है तो लेने ड्राइविंग का पालन करूंगा। डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि अपने प्राण रक्षा के लिए हेलमेट अति आवश्यक है लोग लगाना नहीं चाहते। यदि सरकार घोषणा कर दे कि हेलमेट स्वेच्छा से लगाए, कानूनी प्रतिबंध नहीं हो। तो वैसे स्थिति में 90/95 प्रतिशत लोग हेलमेट का उपयोग नहीं करेंगे। हेलमेट कानून के भय से लगाते हैं। यहां तो पुलिस भी बगैर हेलमेट के मिल जाएंगे, उन्हें कौन रोकेगा। सड़क पर वाहन चलाने वालों में 90% से ज्यादा वगैर ट्रेनिंग के होते हैं।●

विरोधियों का विरोध करें

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

चुनाव का चार-पांच महीना बच गया है। 9 साल दो कामों में ही गंवा दिया गया? विरोधियों का विरोध करना तथा कार्यकर्ताओं से नारा, माला और कार्यकर्ताओं संग फोटो खिंचवाना। अब समय बहुत कम रह गया है। अब जाएं जहां विरोध खूब करें परंतु अपनी उपलब्धियां को भी बताएं। मोदी जी द्वारा लगभग 300 योजनाएं तथा फिलहाल विश्वकर्मा योजनाएं सभी वर्गों के लिए दी जा रही है। योजनाओं की सूची सभी लोगों तक पहुंचाएं साथ ही बताएं कि हमने धारा 370 हटाए,मुस्लिम महिलाओं के हित के लिए तीन तलाक समाप्त किया। कश्मीर में अलग झंडा, अलग कानून, 6 साल पर चुनाव होता था। अब संपूर्ण भारत के लिए एक झंडा ,एक कानून बन गया है। कार्यकर्ताओं को मोदी जी द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दें तथा योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने में सहयोग करें। बताया जाता है कि पटना साहिब लोकसभा में पूर्व मंत्री एवं वर्तमान में सांसद रविशंकर प्रसाद और राष्ट्रीय मंत्री ऋतुराज जी संसद में जाने की तैयारी कर रहे हैं। इन दोनों का मोदी जी द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे कोई चर्चा तक नहीं कि जाती है। भाजपा मीडिया प्रभारी डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि मोदी की नैया पर सवार होकर कब तक चुनावी सागर पार करते रहेंगे। उदाहरण स्वरूप कुछ योजनाओं का

आंकड़ा शामिल कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जन धन योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना ,प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना ,प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना ,प्रधानमंत्री जन औषधि योजना, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षित सड़क योजना प्रधानमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा अभियान, प्रधानमंत्री ग्रामीण परिवहन योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य सुरक्षा अभियान ,सौर सूजला योजना, प्रधानमंत्री युवा योजना, प्रधानमंत्री रोजगार योजना, प्रधानमंत्री ग्रामीण डिजिटल, साक्षरता अभियान, मेक इन इंडिया स्वच्छ भारत अभियान, किसान विकास पत्र ,डिजिटल इंडिया, स्किल इंडिया, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना, पंडित दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना आदि अनेकों योजना चलाई जा रही है अधिकांश योजनाएं लूट मची हुई है। समय बहुत कम है सभी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाने के लिए अभियान चलाएं, तथा जब भी क्षेत्र में जाएं तो एक नए मित्र बनाए तथा अपने क्षेत्र में में समस्या से अवगत होकर समाधान कराएं?●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

जिले का चहुंमुखी विकास मेरी पहली प्राथमिकता : जिलाधिकारी

जमुई बिहार का 38 वां जिला है । यह 21 फरबरी 1991 में जिला का रूप लिया। यह जंगलों, झाड़ियों, पहाड़ों, पहाड़ियों से भरपूर बिल्कुल प्रकृति के गोद में बसा हुआ जिला है। झाझा प्रखंड अंतर्गत सिमुलतल्ला पहाड़ों पर बसा नगरनुमा एक गांव है, यहां स्वामी विवेकान्द द्वारा प्रायोजित आनंदपुर राम कृष्ण मठ है, लट्टूनुमा एक पहाड़ है, जो लट्टू पहाड़ के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ लालडिगा राजबाड़ी है, जिसमें भारत का पहला बोलता हुआ फिल्म का शूटिंग आर एन मुखर्जी ने किया था। राष्ट्रीय कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं इलाहाबाद उच्च न्यायलय के न्यायाधीश सह पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल श्यामल कुमार सेन के कोठी भी हैं। इसलिए इसे बिहार का शिमला कहा जाता है। अगर ईमानदारी से इसे और विकसित किया जाए, तो यह एक खूबसूरत पर्यटक केन्द्र बन सकता है और बिहार सरकार का आय का अच्छा स्रोत बन सकती है और बिहार के विकास में सहायक बन सकता है। वर्तमान में ऐसे ऐतिहसिक जिला के जिलाधिकारी श्री राकेश कुमार हैं। राकेश नाम में तीन अक्षर और दो मात्रा है। प्रत्येक अक्षर और मात्रा अपने आप में विशिष्ट गुणों से परिपूर्ण है। र+आ+क+ए+श=राकेश।र से राष्ट्रवादी आ से आदर्शवादी क से कर्मनिष्ठ ए से एकरूपता और श से शांतिप्रिय। अर्थात् जिन व्यक्ति में राष्ट्रवादी, आदर्शवादी, कर्मनिष्ठ, एकरूपता और शांतिप्रिय जैसे गुण समाहित हो उसे ही कहा जाता है राकेश। ऐसे विशिष्ट गुण वाले जिलाधिकारी **राकेश कुमार** के साथ केवल सच पत्रिका के विशेष प्रतिनिधि **प्रो० रामजीवन साहु** का साक्षात्कार :-

★ श्रीमान् जी! आपकी उच्चतम शिक्षा कहां तक हुई है?

मैंने स्नातक तक की पढ़ाई की है।

★ आपने आईएएस की प्रतियोगिता में कब उतीर्ण हुऐ हैं?

मैंने 2010 में आईएएस की प्रतियोगिता उतीर्ण किया हूं। मैं बिहार कैडर हूँ।

★ जमुई में अपनी उपलब्धि के बारे में क्या करेंगे?

जमुई जिला में अपना योगदान 30 सितम्बर 2023 को किया हुं ।अभी मात्र 36 दिन हुए हैं योगदान किये हुए। इतने कम समय में क्या उपलब्धि हो सकती है, वह आप खुद भी समझ सकते हैं। वैसे मैं क्या करने जा रहा हूँ, उसे आपको बताता हूँ। योगदान करने के तीसरे दिन यानी तीन अक्टूबर 2023 को ही मैंने संवाद कक्ष में एक समीक्षात्मक बैठक बुलाई। इस बैठक में जिले के सभी अधिकारी उपस्थित हुए। इस बैठक में मेंने अधिकारियों से कहा कि सरकार द्वारा कल्याणकारी योजनाओं, आधारभूत संरचना निर्माण से सम्बन्धित योजनाओं के निर्माण के विभागवार विस्तृत रूप से समीक्षा की गई। साथ ही शख्त निर्देश भी दिया। इतना ही नहीं इसे समय सीमा के अन्दर धरातल पर उतारना भी है।

जिलाधिकारी जमुई राकेश कुमार को पत्रिका भेंट करते प्रो० रामजीवन साहु

अधिकारियों को यह भी कहा गया कि सरकार के जन कल्याणकारी योजनाओं को गुणवत्ता के साथ पूर्ण करें। कार्य में कोताही कभी बरदास्त नहीं किया जायगा। प्रखंडों के बीडीओ, सीओ एवं अन्य अधिकारियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शख्त निर्देश दिए गए।

मेरी पहली प्राथमिकता है जमुई जिला का चहुंमुखी विकास हो। इसलिए मैं जन समस्याओं के समाधान के लिए प्रतिदिन अपराह्न एक बजे से दो बजे तक जनता दरबार लगता हूँ। जमीन सम्बन्धी विवादों को सुलझाने में मैं लगातार प्रयासरत हूँ।

प्रतिभा खोज परीक्षा में सम्मलित हुए हजारों छात्र-छात्राएं

● मिथिलेश कुमार

नवादा जिला कुशवाहा सेवा समिति द्वारा आयोजित प्रतिभा खोज परीक्षा में जिले के विभिन्न प्रखंडो से एक हजार से अधिक परीक्षार्थी सम्मिलित हुए। प्रतिभा खोज परीक्षा के नियंत्रक सेवा निवृत्त प्रधानाध्यापक यमुना प्रसाद ने बताया कि समिति के तत्वाधान में विगत चार बर्षो से प्रत्येक बर्ष प्रतिभाखोज परीक्षा का आयोजन आईआईटी,नीट,यूपीएससी/ बीपीएससी एवं सामान्य प्रतियोगी परीक्षा के तर्ज पर किया जाता है। परीक्षा में सफल प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले परीक्षार्थियों को प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी के लिए स्कॉलरशिप दिया जाता है। विगत चार बर्षो में समिति के द्वारा करीब दो दर्जन से अधिक छात्र छात्राओं को देश के नामचीन कोचिंग संस्थानों में नामांकन कराया गया है। उन्होंने बताया कि नगर परिषद क्षेत्र के पांच परीक्षा केंद्र जिसमें दिल्ली सेंट्रल पब्लिक स्कूल कोनिया पर, सुपर फास्ट कम्पीटिशन कोचिंग सेंटर, एम्बिशन कोचिंग सेंटर वीआईपी कॉलोनी, गुरुदेव पब्लिक स्कूल तीन नम्बर बस स्टैंड एवं मिर्जापुर स्थित मोडर्न रेसिडेंशियल पब्लिक स्कूल में कुल 1301 परीक्षार्थियों ने विभिन्न सम्बर्ग की परीक्षा में शामिल हुए। उन्होंने बताया कि कुल 15 सौ से अधिक विद्यार्थियों ने फॉर्म परीक्षा में शामिल होने के लिए फॉर्म भरा था परन्तु मात्र तेरह सौ परीक्षार्थी ही शामिल हुए। परीक्षा में सफल छात्रों को रिच माइंड डिजिटल कम्पनी बड़ौदा के आर्थिक सहयोग से सभी छात्रों को इजाफा दिया जाता है। उन्होंने कहा की परीक्षा का आयोजन को सफल बनाने में परीक्षा केंद्रों के सभी शिक्षकों एवं कुशवाहा सेवा समिति से जुड़े जिले के विभिन्न प्रखंडो से सदस्यों एवं शिक्षको की सहभागिता रही। प्रतिभा खोज परीक्षा में सफल छात्रों को समारोह पूर्वक सम्मानित किया जाएगा। परीक्षा नियंत्रक ने बताया कि परीक्षा कदाचार मुक्त एवं प्रतियोगी परीक्षा के तर्ज पर सम्पन्न हुई है। परीक्षा का मुख्य उद्देश्य प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र छात्राओं को परीक्षा के पूर्व की तैयारी करने के लिए सहयोग एवं दिशा निर्देश भी शामिल है। परीक्षा को प्रारम्भ करने के पूर्व सभी छात्रों को समिति के विभिन्न पदों पर कार्यरत अधिकारियों के द्वारा मोटिवेशन क्लास भी लिया गया। परीक्षा को सफल बनाने में समिति के अध्यक्ष महेश्वर प्रसाद, सचिव विजय कुमार, कोषाध्यक्ष संजय कुमार, दीपक कुमार, रामचन्द्र कुमार सोनी, इंद्रपाल जॉनसन, धनवंती कुमारी, डॉ० विनीता प्रिया, ललिता कुमारी, संरक्षक अर्जुन प्रसाद कुशवाहा, डॉ० भोला प्रसाद कुशवाहा सहित सभी सदस्यों के सहयोग से सफल आयोजन किया जा सका।●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

सत्य की जीत हुई

निर्दोष साबित हुए पूर्व कारा अधीक्षक अभिषेक पांडे

सच ही कहा गया है सत्यमेव जयते, एक दिन सत्य की विजय होती है, अंधकार कितना भी स्याह गहरा क्यों नहीं हो, सूरज के प्रकाश आते ही अंधकार दूर हो जाता है, ठीक उसी प्रकार भ्रष्ट तत्व, और भ्रष्ट नौकरशाह हाथ भले ही कितनी मजबूत क्यों नहीं हो, लेकिन एक दिन उसकी काले कारनामे की कलई खुलती है, क्योंकि सत्य के आगे झूठ कभी टिक नहीं सकता है, किस तरह एक सच्चा और कर्तव्य निष्ठ पदाधिकारी, स्वच्छ, ईमानदार जांबाज, कानून के रखवाले को भ्रष्ट पदाधिकारी, और भ्रष्ट सफेदपोशों ने, भ्रष्ट ठेकेदारों ने नवादा के तत्कालीन जेल अधीक्षक अभिषेक पांडे को फसाया, कितनी भयानक साजिश बड़े-बड़े पदाधिकारीयो ने किया, यह बड़े ही शर्म की बात है, उनका दोष क्या था सिर्फ इतना ही की अपनी योग्यता कर्मठता ,दक्षता, अपनी ईमानदारी और मेहनत के बदौलत नवादा मंडल कारा को दिशा और दशा बदल दिया, उनके कार्यकाल में तंबाकू मुक्त जेल, आदर्श जेल, सभी कैदियों के साथ सम भाव की भावना, कैदियों को भोजन में कोई कटौती नहीं, स्वच्छता का इतना ख्याल उनके कार्यकाल में रहा की एक पत्ता भी इधर-उधर नहीं नजर आता था, उससे भी बड़ी बात उनके कठिन परिश्रम से नवादा जेल बिहार राज्य का पहला ईट राइस कैंपस जेल बना, और एक बार नहीं दर्जनों दफा न्यायिक पदाधिकारी हो या वरिष्ठ पदाधिकारी, उनके अच्छे कार्यों के लिए बहुत तारीफ की, प्रतियोगिता परीक्षा के किताबों में भी यह प्रश्न पूछा गया कि बिहार का कौन सा जेल है, जो ईट राइस कैंपस से जाना जाता है, उस स्वच्छ, ईमानदार पदाधिकारी अभिषेक पांडे ने नवादा जेल को सुधार गृह बना दिया, और मॉडल कारा में उनके प्रयास से तरह-तरह के पुष्प पुष्पित और पल्लवित हुए, उस कर्मठ पदाधिकारी ने दिखा दिया कि सिर्फ हथियारों का डर , प्रताड़ना और कठोर अनुशासन, और झूठे रौब से कैदियों को दशा, और दिशा में बदलाव नहीं किया जा सकता है, बल्की गांधीवादी विचारधारा और सम्राट अशोक की उदारता की भावना से ही हिंसक से हिंसक व्यक्तियों को समाज के मुख्य धारा से जोड़कर सफल इंसान बनाया जा सकता है, और ऐसे उत्कृष्ट ईमानदारी से कार्य करने वाले पदाधिकारी के कार्यों से भ्रष्ट पदाधिकारी, भ्रष्ट ठेकेदार, और भ्रष्ट राजनेताओं को उनके अच्छे कार्य पसंद नहीं आए, क्योंकि कुख्यात अपराधियों, राजनेताओं के सर्गिदों को जेल में वह सुविधा नहीं मिली, और बड़े-बड़े कुख्यात अपराधियों को रातों-रात दूसरे जिला के जिलों में डाल दिया गया, जिसके वजह से पंचायत चुनाव भी शांतिपूर्ण रहा,क्योंकि जेल से किसी को मोबाइल के द्वारा संवाद करने की भी सुविधा नहीं थी, फिर वैसे लोग इंतजार में थे की कब ऐसा मौका मिले, ताकि हमारी साजिश सफल हो, और फिर अभिषेक पांडे को फंसा दिया जाए, और ग्रहण तो चांद और सूर्य को भी लगता है,और वही ग्रहण अभिषेक पांडे जी को भी कैदी गुड्डू कुमार की मौत पर हुआ, लेकिन लंबे अंतराल के संघर्ष के बाद और ईमानदार पदाधिकारी के जाचोप्रांत उन्हें क्लीन चिट दिया गया है, उनके क्लीनचिट मिलने के बाद साजिश करने वाले पदाधिकारी के भी होश उड़ गए हैं, क्योंकि सच्चाई की जीत हुई। प्रस्तुत है **अरविंद मिश्रा** की रिपोर्ट :-

किसी कवि ने ठीक ही कहा है, 'पथ क्या, पथिक कुशलता क्या, जिन राहों में बिखरे शूल न हो, नाविक का धैर्य परीक्षा क्या, जब धारा ही विपरीत ना हो।'

यह स्लोगन नवादा के तत्कालीन जेल अधीक्षक अभिषेक पांडे के लिए है, जहां भी रहे जिस विभाग में रहे अपने ईमानदार छवि की चर्चा और कर्मठता के लिए जाने गए, चुनाव के वक्त झारखंड में उन्होंने रघुवर दास मुख्यमंत्री जी का हेलीकॉप्टर को भी उन्होंने जांच कर दिए, उस हेलीकॉप्टर में एक दो केंद्रीय मंत्री भी थे, 2019 में हजारीबाग में जब अभिषेक पांडे राज्य कर पदाधिकारी के रूप में थे तब उनके द्वारा रामनवमी त्योहार शांतिपूर्ण एवं सद्भावना पूर्ण कराए जाने पर तत्कालीन उपायुक्त रवि शंकर शुक्ला हजारीबाग द्वारा उन्हें प्रशस्ति पत्र भी दिया गया था, इतना ही नहीं झारखंड में गणतंत्र दिवस 2014 के शुभ अवसर पर डॉ0 जयप्रकाश सिंह निदेशक खान एवं भूतत्व विभाग द्वारा अपर आयुक्त का विशेष सचिव गृह विभाग झारखंड को अपने पत्रांक 5462,दिनाक 3,10,2013 को अभिषेक पांडे जी को पद्म पुरस्कार के लिए अनुशंसा किए थे, विभाग में एक नहीं अनेकों उनके कार्य की चर्चा सदैव रहा है, बाद में 2021 में जेल अधीक्षक के पदस्थापन के बाद, नवादा जेल में काफी दशा और दिशा बदला,जो जेल

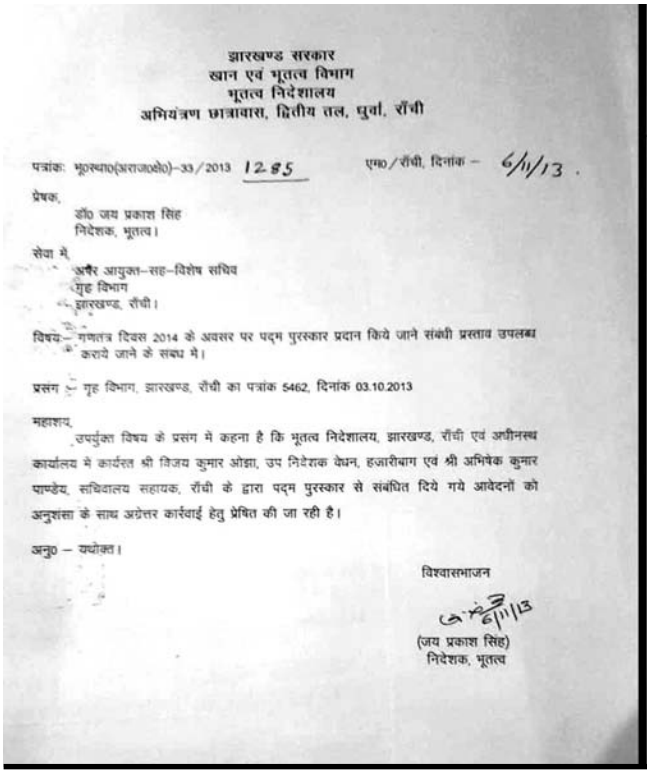

झारखण्ड सरकार
खान एवं भूतत्व विभाग
भूतत्व निदेशालय
अभियंत्रण छात्रावास, द्वितीय तल, धुर्वा, राँची

पत्रांकः भू०स्था०(अराज०क्षे०)–33/2013 1285 एम०/राँची, दिनांक – 6/11/13.

प्रेषक,
डॉ० जय प्रकाश सिंह
निदेशक, भूतत्व।

सेवा में,
अपर आयुक्त–सह–विशेष सचिव
गृह विभाग
झारखण्ड, राँची।

विषय– गणतंत्र दिवस 2014 के अवसर पर पद्म पुरस्कार प्रदान किये जाने संबंधी प्रस्ताव उपलब्ध कराये जाने के संबंध में।

प्रसंग – गृह विभाग, झारखण्ड, राँची का पत्रांक 5462, दिनांक 03.10.2013

महाशय,
उपर्युक्त विषय के प्रसंग में कहना है कि भूतत्व निदेशालय, झारखण्ड, राँची एवं अधीनस्थ कार्यालय में कार्यरत श्री विजय कुमार ओझा, उप निदेशक वेधन, हजारीबाग एवं श्री अभिषेक कुमार पाण्डेय, सचिवालय सहायक, राँची के द्वारा पद्म पुरस्कार से संबंधित दिये गये आवेदनों को अनुशंसा के साथ अग्रेत्तर कार्रवाई हेतु प्रेषित की जा रही है।

अनु० – यथोक्त।

विश्वासभाजन
6/11/13
(जय प्रकाश सिंह)
निदेशक, भूतत्व

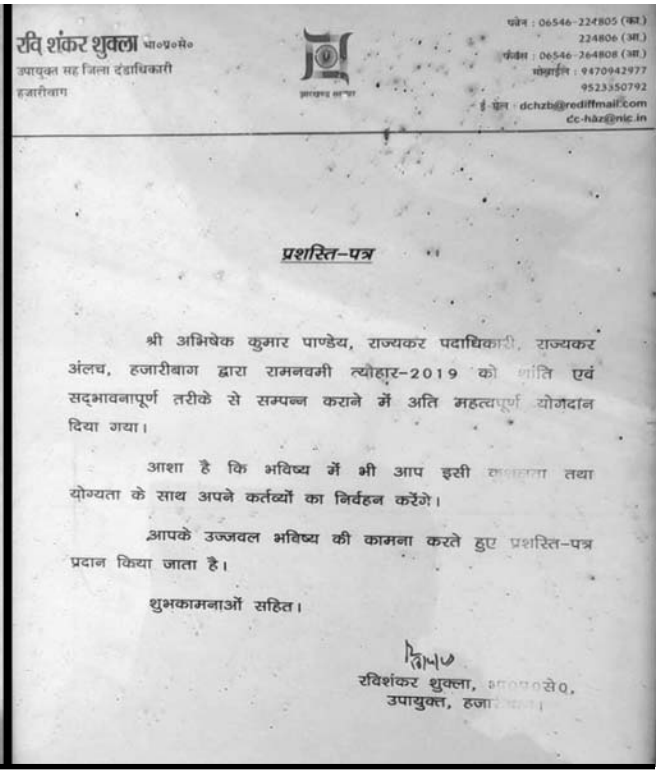

रवि शंकर शुक्ला भा०प्र०से०
उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी
हजारीबाग

फोन : 06546-224805 (का.)
224806 (आ.)
फैक्स : 06546-264808 (आ.)
मोबाईल : 9470942977
9523350792
ई-मेल : dchzb@rediffmail.com
dc-haz@nic.in

प्रशस्ति–पत्र

श्री अभिषेक कुमार पाण्डेय, राज्यकर पदाधिकारी, राज्यकर अंचल, हजारीबाग द्वारा रामनवमी त्योहार–2019 को शांति एवं सद्भावनापूर्ण तरीके से सम्पन्न कराने में अति महत्वपूर्ण योगदान दिया गया।

आशा है कि भविष्य में भी आप इसी [illegible] तथा योग्यता के साथ अपने कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे।

आपके उज्जवल भविष्य की कामना करते हुए प्रशस्ति–पत्र प्रदान किया जाता है।

शुभकामनाओं सहित।

रविशंकर शुक्ला, [illegible]से०,
उपायुक्त, हजा[illegible]।

विगत कई दशकों से बिहार के दर्जनों जिलों की तरह बदनाम जिलों में ख्याति प्राप्त था नवादा मंडल कारा भी था, क्योंकि 23 दिसंबर 2001 को नवादा जेल पर दो दर्जन हथियार बंद बदमाश अशोक महतो और अक्षत सिंह को फूल मिठाई देने के बहाने जेल पर चढ़ाई कर दिया, और जेल में बंद अशोक महतो व अक्षत सिंह, कक्षपाल शशि शर्मा का राइफल छीनकर हत्या कर दिया, और दूसरा कक्षपाल ललन प्रसाद इन बदमाशों के गोली से घायल हो गया था, इस दौरान जेल में बंद अशोक महतो, अक्षत सिंह, रूपेश सिंह पिंटू महतो, बृजेश सिंह, डबलू शर्मा, रंजीत ठाकुर, माओवादी दिलीप राम जेल से फरार हो गए थे, जेल से फरार अपराधियों में बृजेश सिंह रूपेश सिंह को पुलिस ने मार गिराया, और 2003 में कुख्यात माओवादी दिलीप राम भी रजौली थाना में गिरफ्तार हुआ, और अशोक महतो भी 2007 में पाकुड़ जिला के अमरावती में गिरफ्तार हुआ, अशोक महतो जदयू के पूर्व विधायक प्रदीप महतो के चाचा थे, अपने चाचा के फरार होने के आरोप में प्रदीप महतो भी जेल जा चुके हैं इस बड़ी जेल ब्रेक की घटना से नवादा जेल की बदनामी सुर्खियों में रहा, उस जेल ब्रेक कांड की घटना के बाद जेल में दादागिरी कुख्यात अपराधियों का जेल में वर्चस्व ,और कई दबंग अपराधियों द्वारा जेल से ही अपना साम्राज्य चलाते थे, पिछले कई वर्षों के दरमियान जेल में छापामारी में एक को छोड़कर हर वार्ड में मोबाइल बरामद गांजा खैनी, गुटखा तो आम बात थी, कमजोर कैदियों को कैदियों द्वारा प्रताड़ित करना, पैसा वसूलना हर दिन चर्चा बना हुआ था, हर जाति का अपना चूल्हा, चौका होता था, जाति के नाम पर वार्ड होता था जेल के भीतर चांद मियां द्वारा फोन पर एक करोड़ की रंगदारी मांगना, जेल की कुव्यवस्था को उजागर कर दिया था, 28 मई 2019 को जेल के भीतर से सोशल साइट पर एक कैदी द्वारा पोस्ट की गई तस्वीर में मंडल कारा के भीतर चल रहे भ्रष्टाचार को पोल खोल कर रख दिया था, क्योंकि तस्वीर में वह जेल के

अभिषेक पांडे

अंदर शराब पी रहा था, मंडल कारा में घटिया भोजन की शिकायत आम बात थी, 2018 में 3 माह में दो बार मुल्कातियो से रुपया वसूलते वायरल हुए वीडियो ने मंडल कारा में भ्रष्टाचार को पोल खोल दिया, जेल में कई बंद कैदियों के आत्महत्या से नवादा जेल प्रशासन को काफी बदनामी हुई, और कई पदाधिकारी भी सस्पेंड होते रहे, विश्व सूत्रों से जानकारी मिली है कि जो दबंग और अपराधी किस्म के कैदी थे, उनके द्वारा भी यह कृत किया जाता था ताकि जेल प्रशासन सदैव उसकी बात को माने, जेल सुधार के लिए कई दफा प्रयास हुए लेकिन ठोस योजनाएं नहीं बन पाने के कारण मामला ढाक के तीन पात होकर रह गए, कैदियों में और जेल प्रशासन में काफी और असमानता, अविश्वास का भावना सदैव बना रहा, लेकिन अभिषेक पांडे ने प्रशासनिक दक्षता, और अपने उत्तम व्यवहार, जेल में लगातार औचक निरीक्षण से, जेल के अंदर खामियों को उन्होंने गंभीरता से लिया, उनके आने के बाद दबंग कैदियों का चूल्हा चौका बंद हो गया, सभी कैदियों को एक जैसा खाना, वार्ड सभी के लिए एक जैसा, खाना में जो जेल का मैनुअल था उस अनुसार व्यवस्था की गई, जिससे कैदी सब काफी प्रसन्न रहते थे, और ठेकेदारों की नाराजगी रहती थी, स्वच्छता का इतना ख्याल जेल में रखा गया, कहीं एक पत्ता भी नहीं नजर आता था, जूते चप्पल इस तरह

से रखे जाते थे, जैसे लगता था कि जेल नहीं पूजा गृह है, महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई तरह की ट्रेनिंग की व्यवस्था की गई, योग के भी कार्यक्रम कैदियों के लिए किया गया, कमजोर कैदियों को दबंग कैदियों के द्वारा कोई प्रताड़ना नहीं हो इस बात को ख्याल रखा गया, जेल का कोई सिपाही या कोई पदाधिकारी या कैदी को भी खैनी खाने पर पूर्ण पाबंदी थी, खैनी खाते पकड़े जाने पर सिपाहियों का एक दिन का वेतन भी कट जाता था, तंबाकू मुक्त नवादा जेल हो चुका था, सभी कैदियों को अनुशासन का पाठ इस तरह से पढ़ाया गया, जिससे जेल में व्यापक सुधार हुआ, मोबाइल से जेल से बात नहीं हो इसके लिए बराबर छापामारी और औचक निरीक्षण होता रहा, कोई भी राजनीतिक दखल का अभिषेक पांडे ने स्वीकार नहीं किया, इसके वजह से पंचायत चुनाव शांतिपूर्ण रहा, लेकिन जैसे मक्खी देखता है घाव, वैसे ही दुश्मन देखता है दाव, नवादा में उस समय कई पदाधिकारी जो संकीर्ण मानसिकता से घिरे थे, उनको अभिषेक पांडे के कार्य सदैव विचलित करता रहा, उनके अच्छे कार्यों से चिढ़ थी, एक जाति विशेष के पदाधिकारी का साम्राज्य चल रहा था, और फिर एक जाति विशेष पदाधिकारी को किस तरह से फसाया जाए इसके लिए लगातार साजिश रची जा रही थी, कई बार उन सारे पदाधिकारी द्वारा औचक निरीक्षण भी किया जाता था ताकि अभिषेक पांडे कहीं ना कहीं फस सके, लेकिन अभिषेक पांडे जी का कार्य जेल में इस तरह से रहा की उन पदाधिकारी का संयंत्र कभी काम नहीं आया, और छापेमारी के बाद उन सब पदाधिकारी को बराबर निराशा ही हाथ लगी, फिर वह घड़ी आ गई, जब नवादा मंडल कारा में शराब माफिया गुड्डू सिंह 3 सितंबर 2021 को शराब के मामले में गिरफ्तार कर शाम 7:30 बजे मंडल कारा लाया गया था, और 5 सितंबर 2021 को कैदी गुड्डू की मौत मंडल कारा नवादा में हो जाता है, शराब माफिया गुड्डू कुमार 5 सितंबर 2021 की मौत होने के बाद पूरा ठीकरा अभिषेक पांडे के ही शर पर ही थोप दिया जाता है, क्योंकि उन्हें फसाने के लिए बहुत पहले ही प्लान बनते रहता था, और जब यह घटना घटी तब सभी पदाधिकारी जो इनके षड्यंत्र के पीछे थे वह बल्ले बल्ले हो गए, तत्कालीन जिलाधिकारी यशपाल मीणा द्वारा गठित टीम में एसडीओ उमेश भारती, तत्कालीन एसडीपीओ आदि के द्वारा एक मन ग्रंथ और झूठे रिपोर्ट इस तरह से तैयार की गई जिससे अभिषेक पांडे को तत्काल निलंबित कर दिया गया, कई तरह के गंभीर आरोप इन पर लगाया गया, अंगरक्षक को भी लपेट दिया गया, लेकिन मगध कमिश्नर द्वारा रिपोर्ट ने अभिषेक पांडे को हत्या के मामले में निर्दोष करार देते हुए लापरवाही के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार बताया है, प्रमंडलीय आयुक्त की जांच रिपोर्ट में नवादा के एसडीओ रहे उमेश भारती, तथा नवादा डीएसपी की जांच रिपोर्ट को फर्जी तथा मंगरंथ बताया, आयुक्त की रिपोर्ट में तो न्यायिक जांच पदाधिकारी की रिपोर्ट को भी सीमा से बढ़कर झूठी रिपोर्ट पेश करने की बात कही, कारा महानिरीक्षक तथा स्वास्थ्य विभाग के उपनिदेशक ने भी जांच में कारा अधीक्षक को निर्दोष बताया था, जेल में मौत के बाद जिला एवं सत्र न्यायाधीश तथा मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी ने भी आवश्यक निरीक्षण पर कैदियों के बयान लिया था, उस बयान के बाद जांचों प्रांत कारा अधीक्षक को निर्दोष बताया था, और सबसे बड़ी बात 25 माह के बाद फॉरेंसिक के जांच के बाद खुलासा हुआ है की जेल में विचाराधीन कैदी की मौत पुलिस पिटाई से नहीं हुई थी, पोस्टमार्टम रिपोर्ट में यह भी उल्लेखित है कि चोट लगने के समय मृत्यु के तीन से पांच दिन पहले का होता है, पोस्टमार्टम के रिपोर्ट में चोटों की जटिलताओं के रूप में सदमे और

कैदियों के भोजन, रहन-सहन का लिया जायजा

बिहार मानवाधिकार आयोग ने मंडलकारा नवादा में की जांच

प्रतिनिधि, नवादा नगर

मंडल कारा नवादा में मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम के तहत दायर परिवाद की स्थिति एवं कारा के अंदर बंदियों के भोजन, रहन-सहन, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता संबंधी अनेक पहलुओं की जांच मानवाधिकार के शीर्ष अधिकारियों ने की. मंगलवार को मंडल कारा में बिहार मानवाधिकार आयोग के टीम में शामिल रजिस्ट्रार शैलेंद्र कुमार सिंह एवं सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस सो वकील अहमद द्वारा कारा की संपूर्ण व्यवस्था का जायजा लिया गया. मानवाधिकार के शीर्ष अधिकारियों ने बंदियों से मिलकर सभी पहलुओं पर बारीकी से बात की. महिला बंदियों द्वारा बनायी गयीं राखियों और टोकरी उपहार स्वरूप अतिथियों को भेंट किया गया. उन्होंने हस्तकला से निर्मित वस्तुओं की सराहना करते हुए कहा कि जहां एक ओर इससे सृजनात्मकता के साथ बौद्धिक क्षमता का विकास होता है, वहीं दूसरी ओर इस तरह के कार्य को सीख कर कुटीर उद्योग के माध्यम से आर्थिक संपन्नता प्राप्त की जा सकती है. इस अवसर पर सभी महिला बंदियों ने रजिस्ट्रार शैलेंद्र कुमार सिंह और सुपरिंटेंडेंट ऑफ पुलिस वकील अहमद, जेल अधीक्षक अभिषेक कुमार पांडे, संगीत शिक्षक विजय शंकर पाठक के साथ-साथ अनेक लोगों को तिलक लगा कर, आरती कर राखी बांधी एवं मिठाई खिलायी. सभी महिला बंदियों को इस अवसर उपहार स्वरूप साड़ी प्रदान की गयी. कारा के अंदर मौजूद बच्चों को चॉकलेट भेंट की गयी. जेल अधीक्षक अभिषेक कुमार पांडे ने बताया कि सभी बंदियों ने मुलाकाती के लिए शीर्ष अधिकारियों से आग्रह किया और कारा के अंदर हर पहलू की जांच की. रजिस्ट्रार ने अनेक बंदियों से पूछताछ कर कारा के अंदर की हर व्यवस्था का जायजा लिया.

जांच के लिए पहुचे मानवाधिकार आयोग के अधिकारी.

कार्य विधि से दिखे संतुष्ट

महिला बंदियों के रोजगार सृजन तथा उनके कल्यात्मक विकास के लिए जेल परिसर में किये गये कार्यक्रमों की सराहना की गयी. बिहार मानवाधिकार आयोग के शैलेंद्र कुमार सिंह और पुलिस अधिकारी वकील अहमद जेल के अंदर की व्यवस्था से संतुष्ट दिखे. बंदियों में भी शीर्ष पदाधिकारियों से मिल कर उत्साह दिखा. अनेक बंदियों ने अपनी शिकायत और बातें मानवाधिकार आयोग के अधिकारियों के समक्ष रखीं.

महात्मा गांधी और भगत सिंह से लेकर माउंटेन मैन के नाम हुआ है नामाकरण, एसबीआई के सौजन्य से मंडल कारा के सभी 22 वार्डों के दिये गये हैं बोर्ड

जेल वार्डों के आगे लगा महापुरूषों के नाम का बोर्ड, देशप्रेम का जागेगा जज्बा

अच्छी पहल

नवादा | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

नवादा मंडल कारा के सभी 22 वार्डों के आगे महापुरूषों के नाम के बोर्ड लगा दिये गये। भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) द्वारा हाल ही में कारा प्रशासन को महापुरूषों के नाम और फोटो लगे बोर्ड उपलब्ध कराए गए थे। दो गुणा डेढ़ फुट साइज के इस फ्लेक्स बोर्ड को लैमिनेट किया गया है, ताकि यह जल्द खराब न हो सके। इसमें एसबीआई के रिजनल मैनेजर व नवादा मुख्य शाखा के मैनेजर की महती भूमिका रही है। वार्डों के आगे महापुरूषों के नाम व फोटो लगे फ्लेक्स बोर्ड लगने से बंदियों में खुशी का माहौल देखा जा रहा है। बता दें कि दो माह पूर्व जेल के सभी 22 वार्डों का नामाकरण महापुरूषों के नाम पर कर दिया गया था। कभी यादव व भूमिहार वार्ड समेत अन्य जातिगत आधारित नाम से पुकारा जाने वाला वार्ड तब से महात्मा गांधी, भगत सिंह और माउंटेन मैन दशरथ मांझी के नाम से पहचाना जाना जाने लगा। वार्ड के आगे नाम लिख दिया गया था, परंतु बोर्ड नहीं लगाया जा सका था। पौधरोपण कार्यक्रम के दौरान कारा प्रशासन की पहल पर एसबी आई ने बोर्ड लगाये जाने का जिम्मा उठाया था। अब इन वार्डों का स्थाई नामाकरण बंदियों को आसानी से दिख सकेगा। इसका श्रेय नवादा मंडल कारा के कारापधीक्षक अभिषेक कुमार पांडेय को जाता है। जेल में सुधार कार्यक्रमों के लिए जाने वाले अभिषेक ने ज्वाइन करने के तीन महीने में ही जेल की तस्वीर बदल दी है। म

एसबीआई द्वारा कारा प्रशासन को उपलब्ध कराये गये फ्लेक्स बोर्ड। • हिन्दुस्तान

इन महापुरूषों के नाम हुआ नामाकरण

वार्ड नंबर 01 का नामाकरण महात्मा गांधी वार्ड, 02 का सुभाषचंद बोस वार्ड, 03 का शहीद भगत सिंह वार्ड, 04 का जवाहर लाल नेहरू वार्ड, 05 का लालबहादुर शास्त्री वार्ड, 06 का शहीद खुदीराम बोस वार्ड, 07 का डॉ. बीआर अम्बेडकर वार्ड, 08 का डॉ. राजेन्द्र प्रसाद वार्ड, 09 का सरदार वल्लभ भाई पटेल वार्ड, 10 का डॉ एपीजे अब्दुल कलाम वार्ड, 11 का डॉ. अनुग्रह नारायण वार्ड, 12 का कर्पूरी ठाकुर वार्ड, 13 का राजा राममोहन राय वार्ड, 14 का चंद्रशेखर आजाद वार्ड, 15 का मदन मोहन मालवीय वार्ड, 16 का डॉ रविन्द्र नाथ टैगोर वार्ड, 17 का जयप्रकाश नारायण वार्ड, 18 का बाल गंगाधर तिलक वार्ड, 19 का सी राजगोपालाचारी वार्ड और वार्ड नंबर 20 का दादा भाई नैरोजी वार्ड के नाम पर किया गया है। जबकि महिला वार्ड का सरोजनी नायडू वार्ड और अस्पताल वार्ड का नामाकरण मदर टेरेसा वार्ड के नाम पर किया गया है।

सिक्यूरिटी सेल को भी मिला है नया नाम : हाई सिक्यूरिटी सेल यानि उच्च सुरक्षा कक्ष को भी नया नाम मिला है। इस कक्ष में जहां खूंखार एवं खतरनाक कैदियों को रखा जाता है, उनका नाम भी महापुरूषों के नाम पर कर दिया गया है।

नवादा जेल से साक्षर बन बाहर निकलेंगे अंगूठा छाप बंदी

नवादा | हिन्दुस्तान प्रतिनिधि

नवादा मंडल कारा में आने वाले बंदी अब साक्षर बनकर ही जेल से बाहर निकलेंगे। इसके लिए मंडल कारा में मिशन जीरो अंगूठा छाप की शुरूआत की गयी है। साक्षरता अभियान के तहत काराधीक्षक अभिषेक कुमार पांडेय द्वारा कार्यक्रम का विधिवत शुक्रवार को उद्घाटन किया गया। इस अभियान के तहत जेल में आने वाले अंगूठा छाप बंदी चाहे वे एक ही दिन के लिए जेल के भीतर क्यों नहीं आएं, कम से कम अपना नाम लिखना सीखकर ही बाहर जाएंगे।

इस कार्यक्रम में भी पूर्व के अन्य कार्यक्रमों की तरह ही बंदियों की विशेष भूमिका होगी। हर वार्ड के शिक्षित बंदियों को अंगूठा छाप से साक्षर बनाने की जिम्मेवारी सौंपी गयी है। अभियान के तहत जेल के सभी अंगूठा छाप बंदी एक हफ्ते के भीतर कम से कम अपना नाम लिखना जरूर सीख जाएंगे। मंडल कारा में संगीत शिक्षक के रूप में प्रतिनियुक्त विजय शंकर पाठक को कार्यक्रम का नोडल पदाधिकारी बनाया गया है। सहायक जेल अधीक्षक उमाशंकर शर्मा प्रशासनिक सहायक बनाए गये हैं। बता दें कि काराधीक्षक अभिषेक कुमार पांडेय अपने नये प्रयोगों के लिए शुरू से चर्चा में रहे हैं। तीन माह के छोटे से कार्यकाल में जेल परिसर को नो टोबैको जोन बना दिया गया। बंदियों के वार्ड के नाम पूर्व में जाति से जाने जाते थे, परंतु एक माह पूर्व इन वार्डों का नया नामाकरण देश के विभूतियों के नाम पर कर दिया गया। खानपान से लेकर रसोई व साफ-सफाई की व्यवस्था में व्यापक सुधार किया गया।

बंदियों को मिलेगा प्रशस्ति पत्र: हर माह मिशन जीरो अंगूठा छाप की समीक्षा की जाएगी। अपने वार्ड में इस अभियान के बेहतर संचालन के लिए शिक्षित बंदियों को हर माह प्रशस्ति पत्र दिया जाएगा।

काराधीक्षक बंदियों के परफारमेंस के आधार पर उन्हें प्रशस्ति पत्र देंगे। इससे इस अभियान की सफलता को बल मिलेगा व शिक्षित बंदी अन्य बंदियों को तेजी से साक्षर बनाने की मुहीम में सकारात्मक भूमिका निभा सकेंगे।

बता दें कि इससे पूर्व मंडल काराधीक्षक द्वारा इस प्रयोग को बेनीपट्टी उपकारा में लागू किया गया था, जिसकी काफी सराहना हुई थी।

95 फीसदी पॉजिटिव फीडबैक: मंडल कारा प्रशासन को नये प्रयोग के लिए बंदियों का अभूतपूर्व सहयोग मिल रहा है।

मंडल कारा से बाहर निकलने वाले 95 फीसदी बंदियों ने नये प्रयोगों की प्रशंसा की है। फीडबैक रजिस्टर में बंदियों ने कारा प्रशासन द्वारा चलाये गये कार्यक्रमों को बंदियों के भविष्य के लिए उठाया गया एक बेहतर कदम बताया है। बंदियों को पुस्तकालय में उपलब्ध कराये गये महापुरूषों की जीवनी से संबंधित पुस्तकों को लेकर भी बंदी काफी उत्साहित हैं। अभी तक 201 पुस्तकें उपलब्ध करायी गयी है। कुछ अन्य पुस्तकें पर्सनली भी उपलब्ध करायी जा रही है।

नई पहल

- नवादा मंडल कारा मे शुरू हुआ मिशन जीरो अंगूठा छाप
- साक्षरता अभियान के तहत कारा प्रशासन ने किया शुरू

नवादा मंडल कारा। (फाइल फोटो)

साक्षरता मुहिम के तहत मिशन जीरो अंगूठा छाप की नवादा जेल मे शुरुआत की गयी है। सभी बंदियों को साक्षर व कम से कम नाम लिखने के लायक बनाने का हमारा प्रयास है। लोगों के मन मे जेल के प्रति जो गलत अवधारणा बनी है, उसे दूर करने की दिशा मे काम किया जा रहा है। बंदियों का इसमें काफी सहयोग मिल रहा है। जेल से बाहर निकलने वाले बंदी भी इसे सराह रहे हैं।

-अभिषेक कुमार पांडेय, काराधीक्षक नवादा मंडल कारा

बंदियों की स्मृति में लगाये जा रहे हैं पौधे

नवादा। मंडल कारा के बंदियों की मौत के बाद उनकी याद में जेल परिसर में पौधे लगाये जा रहे हैं। पकरीबरावां के ढोला के कैदी महेश सिंह उर्फ बेनु की स्मृति में जेल परिसर में चंदन का पौधा लगाया गया। कैंडल लाइट जलाकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गयी। मृतक महेश जेल में काफी लोकप्रिय थे व मुख्य रसोईया थे। इससे पूर्व बंदी रामकिशुन चौहान की मौत के बाद उसकी स्मृति में जेल परिसर में समी का पौधा लगाया गया। हिप्र

अत्यधिक रक्त स्राव के मृत्यु का उल्लेख किया गया है, जांच में यह बात भी सामने आई है कि गिरफ्तार किए जाने के बाद गुड्डू कुमार की मौत मोब लीचिंग के पिटाई से हुई थी, रजौली के तत्कालीन थाना अध्यक्ष दरबारी चौधरी तथा दरोगा निरंजन सिंह, द्वारा जमकर गुड्डू कुमार पिटाई की थी, जिससे गुड्डू सिंह को काफी गंभीर चोट आई थी, इसका खुलासा जेल में बंद कैदी ने अपने वार्ड में अपने साथियों से भी किया था, वही जेलर उमाशंकर सिंह ने न्यायिक जांच पदाधिकारी पर एक कैदी विशेष को सुविधा देने की सिफारिश नहीं मानने पर न्यायिक जांच पदाधिकारी द्वारा झूठी रिपोर्ट पेश करने की बात भी कही गई थी , वही तत्कालीन कारा अधीक्षक के अंगरक्षक को जेल में घुसकर पिटाई की बात कही गई थी, लेकिन अंगरक्षक भी उस दिन छुट्टी पर था, इस प्रकार फॉरेंसिक जांच रिपोर्ट और प्रमंडलीय आयुक्त के जांच रिपोर्ट, और जिला एवं सत्र न्यायाधीश के जांच रिपोर्ट देखने के बाद स्पष्ट था कि नवादा के एसडीओ उमेश भारती, एसडीपीओ ने अपने पद और पैरवी का गलत दुरुपयोग करते हुए संकीर्ण भावनाओं से जात विशेष को देखते हुए अभिषेक कुमार पांडे को हत्या के मामले में फंसने की गहरी साजिश की, वैसे प्रमंडलीय आयुक्त ने अपनी जांच में यह भी माना है कि संस्थान के मुखिया होने के कारण इलाज में लापरवाही के लिए, अभिषेक पांडे को आंशिक रूप से दोषी माना जा सकता है, उन्होंने कारा अध्यक्ष की जांच सीबीआई, सीआईडी से करने के लिए भी सरकार को अनुशंसित करते हुए उचित निर्णय की बात कही है,आरोपी तत्कालीन कारा अधीक्षक अभिषेक पांडे पटना उच्च न्यायालय में भी न्याय के लिए केस दायर किए हुए हैं, जब से फोरेंसिक जांच रिपोर्ट और प्रमंडलीय आयुक्त महोदय के जांच रिपोर्ट आने के बाद निर्दोष करार होने पर, बिहार कारा संघ ने तत्कालीन जेल अधीक्षक का निलंबन मुक्त करते हुए, उन्हें कहीं पदस्थापित करने के भी बात कही है, जेल अधीक्षक अभिषेक पांडे के झूठे मुकदमे में फसाने वाले पदाधिकारी पर सरकार को गंभीरता से पहल कर दंडित करनी चाहिए, ताकि भविष्य में कोई भी ईमानदार पदाधिकारी को छवि धूमिल करने की कोशिश नहीं हो, न्याय पर विश्वास रखने आम जनता और समाजसेवियों की नजर है सुशासन की सरकार पर जो निर्दोष और ईमानदार पदाधिकारी को फसाने वाले पदाधिकारी पर कार्रवाई करती है या नहीं, चाहे जो हो अभिषेक पांडे के अच्छे कार्य के लिए इतना बड़ा दंड, और मानसिक प्रताड़ना का जिम्मेदार कौन है, आखिर कैसे एक ईमानदार पदाधिकारी सरकार के लिए समाज के लिए काम कर सकते हैं यह बहुत ही ज्वलंत प्रश्न है, अभिषेक पांडे को निर्दोष साबित होने पर न्याय पर विश्वास करने वाले को भरोसा हुआ है, सब यह भी कहते हैं सत्यमेव जयते, सत्यमेव जयते।●

महिला बंदियों को आत्मनिर्भर बनाने में सहायक बनेगी ट्रेनिंग

- बहुउद्देशीय लक्ष्य को लेकर महिला बंदियो को दिलाया गया हुनर का प्रशिक्षण

- तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का हुआ समापन
- जेल परिसर में महिला कैदियों ने मेहंदी लगाना, राखी बनाना रंगोली, लिफाफा, ठोंगा बनाने का लिया प्रशिक्षण

प्रतिनिधि, नवादा नगर

बहुउद्देशीय लक्ष्य को लेकर महिला कैदियों को विभिन्न प्रकार के हुनर की ट्रेनिंग दिलायी गयी है. प्रशिक्षण पाने के बाद महिला बंदी यहां से निकलने के बाद आत्मनिर्भर बन कर स्वरोजगार शुरू कर सकते हैं. यह बातें जेल अधीक्षक अभिषेक कुमार पांडेय ने तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन पर कहीं. नवादा मंडल कारा में महिला कैदियों के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन जेल अधीक्षक के नेतृत्व में कराया गया. 26 से अधिक महिला कैदियों ने मेहंदी लगाना, राखी बनाना, लिफाफा, ठोंगा निर्माण, रंगोली बनाने आदि का प्रशिक्षण प्राप्त किया है. जेल अधीक्षक अभिषेक कुमार पांडेय ने बताया कि इस प्रकार के कार्यक्रमों का कोई एक उद्देश्य नहीं होता है. जेल में बंद महिला कैदी आत्मनिर्भर बन सके इसके लिए उन्हें व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित किया जाना जरूरी है.

रंगोली और लिफाफा निर्माण का प्रशिक्षण : नवादा जेल में आयोजित तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतिम दिन सभी महिला बंदियों को ठोंगा, रंगोली व लिफाफा बनाने का प्रशिक्षण दिया गया. इसके पहले मेहंदी लगाने और राखी बनाने का प्रशिक्षण भी दिया गया है. व्यावसायिक रूप से किसी क्षेत्र विशेष में प्रशिक्षण हासिल करने की व्यवस्था भी कराने की बात जेल अधीक्षक द्वारा कही गयी. प्रशिक्षण में महिला कैदियों ने 250 ठोंगा व 200 लिफाफा का निर्माण किया है.

लिफाफा बनाना सीखती महिला बंदी .

कार्यक्रम की महत्ता पर दी जानकारी

कार्यक्रम समापन पर कार्यक्रम के नोडल पदाधिकारी और संगीत शिक्षक विजय शंकर पाठक ने महिला बंदियो को रंगोली की महत्ता और शुद्धता के बारे मे बताया . उन्होंने कहा कि अक्सर किसी शुभ कार्य मे अपने घरो मे रंगोली बना कर घरो को सजाते है . ऐसी मान्यताएं है कि इससे सुख–समृद्धि और शांति का आगमन होता है . प्रशिक्षण कार्यक्रम कला एवं सांस्कृतिक संस्था सृजन आर्ट्स सह शकुंतला मेमोरियल म्यूजिक कॉलेज के ट्रेनर आंचल कुमारी व जेसिका राज ने कराया है . इन दोनो ट्रेनर ने बहुत ही लगन के साथ महिला बंदियो को हस्तकला के अनेक गुर सिखाये है .

मानसिक तनाव से भी दिलाती है मुक्ति : जेल अधीक्षक अभिषेक कुमार पांडेय ने बताया कि इस तरह के कार्यक्रम का कोई एक उद्देश्य नहीं है, बल्कि यह कार्यक्रम बहुउद्देशीय है. इस तरह के कार्यक्रम से अनेक रोजगार के अवसर प्राप्त हो सकेंगे और कारा परिसर के अंदर इस तरह के सृजनात्मक कार्यो से बंदियों को मानसिक तनाव से मुक्ति मिलेगी. उन्होंने बताया कि इस तरह के हस्तकला सीख कर महिला कैदी खुद बाहर निकलने पर परिवार का भरण-पोषण कर सकती है. उन्होंने बताया कि कार्यक्रम को कराने में सचिव प्रवीण कुमार, जेल सचिव जितेंद्र कुमार, जेल आइजी मिथिलेश, जिला जज पांडेय और डीएम यशपाल मीणा का मार्गदर्शन और सहयोग मिलता रहा.